श्रीमान् सेठ बगराजजी के पौत्र श्री० सेठ हरिद्वारीमलजी के पुत्र

श्रीमान् सेठ श्रीराम जी अग्रवाल [बगड़िया]



आपके स्वर्गीय सेठ श्रीमान् विश्वेश्वरदासजी ताऊ हैं
श्रीमान् सेठ जमनादासजी श्रीमान् सेठ जयनारायणजी चाचा।
श्री सेठ जमनादासजी के चिरञ्जीव सेठ बजरंगलालजी
सेठ जयनारायणजी के चिरञ्जीव सेठ बबूलाल जी पुत्र हैं
आपकी 10000 पुस्तकों में पूर्ण सहायता है।

नामावली अनमोल है । यथार्थलेखनपत्रम् ।

इस पुस्तक में प्र० से प्रश्न समझ लेना । प्र० शब्द के आगे का लेख विधवा विवाह समर्थकों की तरफ से है, उ० से उत्तर, उ० शब्द के साथ जितना जहां तक लेख है वह प्रश्न का उत्तर विधवा विवाह निषेध में है । अशुद्धि शुद्ध लेख में १/२ लैन के ऊपर वाला अंक पृष्ठ का है और नीचे वाला अंक लैन का है, इससे पाठकगण उसी पृष्ठ व लैन में लिखे हुए अशुद्ध शब्द का शुद्ध शब्द यथास्थान देखलें । भाषाके अक्षर व मात्रायें सँभाल कर पढ़ लें । द्विजाति पुनरुद्वाह से द्विजाति विधवा विवाह समझ लेने । नामावली शुद्धि निर्देश—५/१२ दामोदर, २८/१८ ऽस्माभिः शब्द नहीं चाहिये, १०/१८ मातृदत्त, ३१/८ साहित्याचार्य्यस्य, ४३/१६ अर्हताचापि ।

अथ प्रमाणावली यथार्थलेखनपत्रम् ।

६/४ अधर्माधर्मिणाश्चैव नाशकम्, १७/२१ सर्व, १८/१६ विदोजनाः, १९/१ प्रसूतस्य, १९/१० ऽभवत्, २५/८ तेजोऽऽप्यायनम्, २३/१३ चेति-बहुवस्तु, २४/१६ २१/१५ मध्यस्थ, ३०/६ विप्रतिषिद्धता, ३०/१३ नैतद्विप्रति-षिद्धम्, चापत्यं, ३३/१२ इत्यध्याहार्यम्, ३८/१७ शुल्काम्, ३६/५ त्रिःकार्य, १६ निश्चितस्त्वं, ३८/१७ निश्चितस्त्वं, ३७/१८ भ्रातृपत्न भगिनी इत्यादि ऊहः कार्यः, ३८/१९ भर्त्रादयस्त्रय, ३९/७ रेव च, ४१/८ क्लीबे च, ४८/८ क्लीबे च, ४५/७ क्लीबे च, ४५/४ टिप्पणी इति-नोचितं, किमनेन, ४६/१४ अत्र टिप्पणीतिपदं ज्ञेयम्, ५१/७ स्या-त्मजः, ५४/१६ पट्, ५५/९ ग्रासाच्छादन, ५७/६ मन्वर्थ विपरीतात्तु

या स्मृतिः सा न शस्यते, ५९/५ अर्जुनस्यसुतः श्रीमान्निरावा-
न्नाम, ६६/१ दिव्या, ६९/५ पिता, ६६/६ मूढ़ास्ते, ७१/१२ त्वं, ७३/५ परं,
७३/१२ एहि, ७५/३ सधस्थ आ, सायण, ७७/१२ नारी, ७८/१२ ददद्ग्नये,
८०/६ पतिकुले, ८३/१३ सायणभाष्यं, ८८/१० तस्यै ८८/११ उपसर्गो।, ८३/१
सायण, ८४/२ तवदं पत्युर्जनित्व, ८४/७ जीवन्तं. ८४/६ पुनः विवाहे-
च्छोः, ८७/७ 'एवं पतिव्रता, ८९/१० इत्यनयाद्रू, ८९/१४ सायण, ९०/१८
उत्तिष्ठ, ९०/१९ अदिप्रभृतिभ्यः, ९०/२१ शीङ, ९०/३ नास्तीति, ९०/८
कर्पाणयण्, ९३/१७ सायण, ९६/१६ पूर्व, ९८/१ नैकस्या, ९८/११ तव, १००/५ या
मोक्तापाण्डुपुत्राणामेक, १०८/४ लोभा, ११२/८ तत्र चता, ११३/१
भाक्, ११५/४ योनिर्या, ११६ दत्तायां, ११६/१८ अस्पृष्टलिङ्ग, ११८/२०
बालमूढ़ा, ११७/६ ये परनाश्चान्यत्राऽपि, १२५/१२ न प्रजां न धर्म,
१२६/१७ ग्रहस्थः सदृशी, १२६/२० पुत्र संबंधः, १२५/२३ १२५/२४ पुरुषांतरापरि।

विधवा विवाह के विरोध में बहुत से पत्र पीछे से आये हैं उनमें से कुछ नाम पिछले क्रम से दिये जाते हैं। निषिद्धोयम् विधवा विवाहः—श्री बदरीनारायण रावलाभिधः, श्री पं० वासुदेव नम्बूतिरि शर्मा, श्री पं० विद्याधर शा० डिमरी वेदपाठी, श्री पं० पुरुषोत्तम शास्त्री, धर्माधिकारी बदरीनारायण, श्री म० हरीप्रपन्न, श्री पं० रघुनाथ शा०, श्री पं० नरहरि शा०, श्री पं० व्रजमोहन शा०, बदरीनाथ। राज्य सेहड़ा नरेश जिला पटना—सर्वथा निन्द्योऽयम् द्वि० वि० वि०—श्री म० रामनन्दनप्रसाद नारायणसिंह सेहड़ा नरेश, तत्पण्डितानां श्री पं० अखिलानन्द शर्मा कविरत्नम्, श्री पं० गङ्गाविष्णु मिश्रः काव्यतीर्थः, श्री पं० अयोध्याप्रसाद वाज. क.र.

• श्रीहरिर्जयति •

हेरम्बं श्रीगुरुं विष्णुं शंकरं शारदां शिवाम् ।
नत्वा नामावलीं कुर्व्वे विदुषां सन्महात्मनाम् ॥

दो०—गणपति श्रीगुरु विष्णु शिव, शारद गौरि मनाय ।
विद्वज्जन आचार्य गुरु, नामावलि कहि गाय ॥
बिधवा ब्याह समर्थको, है इतसों चेलेंज ।
धर्मशास्त्र निर्णय धरौ, सुन कर करौ न रंज ॥
नरतन लहि हठ छोड़िकै, करौ धर्म का न्याय ।
यह मन में राखौ नहीं, बात न हमरी जाय ॥
बातरहैं हित ठानि हठ, जो न मानिहौ यार ।
अयश दुःख दुर्गति लहौ, धक्का मालिक द्वार ॥

भूमिका ।

इधर कुछ दिनों से द्विजाति स्त्रियों के पुनरुद्वाह का चारों तरफ जिकर फैल रहा है । जिससे सीधे सादे सज्जनों के हृदय में संदेह हो रहा है कि एक तरफ नये प्रचारक वेद शास्त्र की दुहाई दे कह रहे हैं कि विधवा विवाह होना चाहिये और दूसरी तरफ प्राचीन विद्वान वेद शास्त्र से बतला रहे है कि विधवा विवाह न होना चाहिये । किसकी सत्य मानी जाय । इस पर नवीन पक्ष से पुस्तकें समाचार-पत्र लेकचरों द्वारा मारामार पुकार हो रही है । प्राचीन वेद शास्त्रों में निषेध होते हुए भी संस्कृत भाषा के होने से समस्त जनता तथा साधारण पंडित भी नहीं समझ सकते

हैं। विद्वानों को विशेष धनाभाव से और कुछ आलस्य या बिना पूँछे क्यों कहैं और किससे कहै इस कारण प्राचीन पक्ष कुछ उदासीन सा मालूम होता है। इस प्रकार धर्म का ह्रास होता देख ईश्वर की कृपा तथा महात्मा विद्वानों की प्रेरणा से यह छोटी सी पुस्तक वेद शास्त्र इतिहास पुराणों के संस्कृत में प्रमाण भाषार्थ सहित लिख कर 'प्रमाणावली' वा 'पुनरुद्वाह शास्त्रार्थ निर्णय सिद्धांत' के नाम से प्रकाशित की जाती है। यह प्राचीन काल से पुष्ट है कि वेद शास्त्र में पुनरुद्वाह अधार्मिक कहा गया है। एतदर्थ इसके प्रमाण में भारतीय तथा काशिस्थ व कानपुरस्थ असंख्य जगद्गुरु आचार्य महात्मा विद्वानों महराजा महारानियों की संमतियां मँगाई गई हैं। अभी तक कितने ही विद्वान् आचार्य राजाओं तक हमारे प्रार्थनापत्र नहीं पहुंच सके हैं परंतु हमें विश्वास है कि वे सब प्राचीन सिद्धांत को मान कर विधवा विवाह के विरोध में है। ब्राह्मण क्षत्री वैश्य कानपुरीय तथा भारतीय असंख्य जनता विरोध में हस्ताक्षर दे चुकी है जिसके पूर्ण रूपसे प्रकाशित करने में हम असमर्थ है प्रार्थना है कि सब विद्वान् महात्मा आचार्य राजा-रानी क्षमा प्रदान करें, और समस्त जनता भी क्षमा करै। कुछ थोड़े से नाम इस लिये प्रकाशित किये देते है जिससे यह न हो कि झूठ ही लिख मारा है। जिनको सम्पूर्ण हस्ताक्षर देखना हो वे हमारे यहां आकर देख सकते है।

अन्त में पाठकों से प्रार्थना है कि पद्यरूप में तो हमारी लिखी हुई श्रीमद्भागवत आदि अनेक पुस्तकें निकल चुकी हैं किन्तु वर्तमान समय में अधर्म चर्चा फैली देख धर्म की प्रेरणा से इस पुस्तक के गद्य रूप में लिखने का प्रथम ही अवसर है। इसी कारण इसकी भाषा भी टूटी फूटी निराली ही है। अतः भाषा की ओर ध्यान न दे प्रमाणों पर विचार करके देखें कि समर्थक कैसी धूर्तता से काम ले रहे हैं।

आवश्यक सूचना।

इस पुस्तक में नामावली अनमोल है, उसका मूल्य कुछ नहीं होगा, जिसमें यह न कहने को हो कि सब के नाम मंगा कर बेंच कर फायदा उठाते हैं केवल प्रमाणावली में कुछ मूल्य रहेगा जिसमें यह मालूम हो जाय कि इतना व्यय हुआ और दुबारा फिर प्रकाशित हो सके। इस पुस्तक में श्रीमान् सेठ बद्रीदासजी बगड़िया की दश हजार संख्या में सहायता है। इससे कानपुर तथा कलकत्ता बम्बई आदि शहरों में बिना मूल्य वितरण की जायगी। जो सज्जन इस पुस्तक को छपा कर बांटना चाहें वे पत्रद्वारा सम्मति लेकर प्रतिअक्षर जैसी की तैसी छपा कर बांट सकेंगे। अगर कोई बढ़ाना चाहें तो वह विधवा विवाह के विरुद्ध हो इस पुस्तक के लेख से विरोध में न हो तो बढ़ा सकेंगे। अवश्य ही छपा कर बांटना और प्रचार करना चाहिये। भारत को विलायत बना कर उन्नति कदापि न होगी।

चेलेंज ! डबल चेलेंज !! ट्रिपिल चेलेंज !!!

प्रतिज्ञा ! महाप्रतिज्ञा !! महामहतीप्रतिज्ञा !!!

समस्त बिधवा विवाह के समर्थक सज्जनों से, चाहे वे शास्त्री पूज्य प्रोफेसर आदि कोई भी हों और कहीं के हों निवेदन तथा जोरदार घोषणा है कि जो महाशय वेद शास्त्र में विचार यानी शास्त्रार्थ करना चाहते हों वे संवत् १९८५ श्रावण कृष्ण से लगा कर सं० १९८६ आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी १ वर्ष तक शास्त्रार्थ कर सकते है। शास्त्रार्थ के तीन विभाग होंगे। प्रथम, द्वितीय, तृतीय। हर शास्त्रार्थ में नियम, सभापति तथा मध्यस्थ दोतरफा निश्चित हो कर तब शास्त्रार्थ होगा। इसकी बातचीत तीन मास पहले से तै होने पर शास्त्रार्थ होगा। तीनों शास्त्रार्थों में भारतीय काशिस्थ व कानपुरीय श्रीजगद्गुरु आचार्य शास्त्री विद्वान् महात्मा प्रमुख होंगे। प्रथम शास्त्रार्थ में ५०००) पांच हज़ार, द्वितीय में पचीस हज़ार और तृतीय में १ लक्ष मुद्रा की इधर से मज़बूती कर दी जायगी। अर्थात् प्रथम पं० माधवराम अवस्थी व्यास की ओर से, द्वितीय कानपुरीय विद्वन्मंडल की ओर से और तृतीय श्रीआनन्देश्वर सनातनधर्म सभा की ओरसे होगी। साथही यह पक्की शर्त रहेगी कि प्रथम शास्त्रार्थ ५ हज़ारवाला पूरा हो जाने पर दूसरा, फिर तीसरा प्रारंभ होगा। इतनी ही द्रव्य

यानी ५ हजार, २५ हजार तथा एक लक्ष की मजबूती विपक्ष को भी करनी पड़ेगी। विजयीपक्ष पराजित का रुपया पावेगा, क्योंकि सरकार भी हारे पक्ष से खर्चा दिलाती है। मित्रो, मौका बड़ा अच्छा है, सामने आइये, चूकिये नहीं, आम के आम गुठली के दाम। देर न कीजिये, तैयार हो जाइये। हम बार २ कहते हैं कि आइये, आइये, अवश्य आइये।

समाजी व प्रच्छन्न समाजियों के प्रति।

स्व० श्रीस्वामी दयानन्दजी सरस्वती सत्यार्थप्रकाश के नियोग प्रकरण में ऋग्वेद अ० १ सू० १० मं० १० अन्यमिच्छस्व सुभगे० इस मंत्र में यमी अपने भाई यम से पति होने को कहती है। यम कहता है अन्यमिच्छस्व० हे सुभगे तुम और पति की इच्छा करलो मेरी नहीं यह अंत कलियुग में होगा जिसमें बहिन भाई व्यभिचार करेंगे और वर्णसंकर सृष्टि हो जायगी। इस मंत्र का उलटा अर्थ कर इसे नियोग में घटाया है और विधवा विवाह को जोर शोर से बुरा कहके मना किया है उसमें न मालूम कितनी बुराइयां दिखलाई हैं, वह तो नियोग सिद्ध करते है, क्या पुराने होने से परदादा गुरू को भी न मानोगे, उन्हें धराऊ शब्द कहोगे। खैर आप सब नियोग को जो आपके पूज्य गुरु कह गये है बुरा बना कर यह स्वांग भरते हैं अब जनता फैसला करे। कौन की मानोगे महामान्य गुरु की या चापरचेलों की ? अगर समझदारी है तो दोनों से इस्तीफा दे अपने पुराने सनातन मार्ग पर चलो

आइये। आप हमारे देश व जाति के नाते से भाई है, हमारा किसी के कुछ बैर नहीं हैं, केवल अधर्मांश से विरोध है। अधर्म प्रचार बंद कर, सहमत हो, बाल विवाह वृद्ध विवाह रोकिये, इन विधवाओं की धर्मशिक्षा, इनकी रक्षा, इनके घरही में कराइये, जिसमें वे सब महादुःख से बच कर सदा सुख पावैं। उन्हें विष के लड्डू देकर क्यों प्राण लेते हो। सँभल जाइये, ईश्वर कहीं गया नहीं है।

समाजी गुरु स्व० पं० तुलसीरामजी।

पं० तुलसीरामजी के लेखों को पढ़िये, आपने नियोग का प्रतिपादन करके अपने गुरु स्वामीजी का ही मत पुष्ट किया है परन्तु पुनर्विवाह वाली विधवा को आपने भी पुनर्भू कहा है, बस लो होगई, लुटिया डूबी। अगर पुनर्विवाही पुनर्भू संज्ञा हुई तो उहरी धरौआ नातावाली होगई। उसका लड़का पौनर्भव हिस्सा से अलग देव पितृ कार्य से बाहर निंदित लूलू बन गया। मा बेटे गये बीते हो गये। अब क्या ऐसे ब्याह से राजी हो जो कोरी चमारों के होता है? आप भी सही, यह मान्य गुरु के बयान से डिगरी पाई— अब आगे चलिये।

विधवा विवाह और समाजी गुरु लाला हंसराजजी का भाषण।

शास्त्रों का कानून उस वक्त पूरे तौर पर चल सकता

था जब कि आर्यों के हाथ में राज्यशासन था और इस देश में आर्य जाति वास करती थी अब यदि एक विधवा अपने ब्रह्मचर्य को पूर्ण नहीं रख सकती तो उसको पतित होने से रोकने के लिये कोई कानूनी सजा नहीं है जिसका फल यह है कि वह पतित हो जाती थी। पहिले वह विवाह करने पर शूद्रों में प्रवेश कर जाती थी और शूद्रों में क्षत योनि स्त्री को पुनर्विवाह की आज्ञा है पर अब यह शूद्र जातियों में क्यों कर प्रवेश करै ईसाई मुसलमान इसको लोभ देकर पदवी देने को तैयार हैं। इसमें संदेह नहीं कि पुनर्विवाह में बहुत सी हानियां है और यह काम केवल शूद्रों का है। (आर्यदर्पण सि० स० १६०३)।

ला० मुंशीराम उर्फ म० श्रद्धानन्दजी का भाषण।

द्विजों के लिये वेद की आज्ञा केवल नियोग करने की है और यदि पाप उस कर्म का नाम है कि जो वेदों की आज्ञा के विरुद्ध हो तो शंका नही रहती कि द्विजों के लिये पुनर्विवाह का करना पाप है। हां शूद्रों की दशा में वह कर्म पाप नही रहता। हर एक पाप समान नहीं होता आर्य पुरुषों के लिये वही कर्म अनुचित है जो कि वेदों की आज्ञा से विरुद्ध है वही पाप है। पुनर्विवाह करने से द्विज अवश्यमेव पतित होकर शूद्र बन जाते हैं (आर्य दर्पण सि० स० १६०३)। मित्रो, कहो परदादा गुरु, दादा गुरु और गुरु

लोगों का तो फैसला है और आप लोगों का यह हौसला है। हमारी जनता से जोरदार अपील है कि जिन श्रद्धानन्द के नाम से पार्क यानी श्रद्धानन्द पार्क पर खड़े होकर लेक्चरबाजी होती हैं उनकी मानोगे या इन उन्नति के ठेकेदारों की ? हमें क्या, तुम जानो, सबूत सामने पेश है, फैसला जनता करले, दोहाई पंचों की। द्विज से ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य यह तीनों लेना चाहिये–द्वाभ्यां जन्मसंस्काराभ्यांजायते इति। द्विज पुनर्विवाह में कीलक होगया।

नियोग में भी आफत

नियोग और सरकारी अदालत।

सन् १८९२ ई० के पेशावर वाले मुकदमे में जो आर्यसमाजियों ने एक सनातनधर्मी के ऊपर चलाया था वह खारिज हुआ। फैसले में साहब मजिस्ट्रेट आर्यसमाज के नियोग के विषय में लिखते हैं–"इस बात से इन्कार नहीं हो सकता कि दयानन्द की खास धर्म पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश में कोकशास्त्र की तालीम दर्ज है। मुद्दई खुद इस बात को तसलीम करता है कि वह अमलों पर जिनमें एक ब्याही हुई औरत को अपने असली खाविन्द (पति) के जीते ही जी किसी दूसरे ब्याहे हुए आदमी के साथ हमबिस्तरी (मैथुन करावे) की हिदायत है, ईमान रखता है। यह रस्म बेशक व बिला शुभा ज़िनाकारी (व्यभिचार) है।

इस वास्ते यह जिक्र करते हुए कि दयानन्द के मुरीदान (शिष्यगण) उनके उसूलों पर ईमान लाये हुए रस्म ज़िनाकारी का आगाज़ मुन्दर्जावाला (ऊपर लिखे हुये) करते रहे और अगर इन उसूलों का इनको यकीन इसी तरह कामिल रहा तो यह इसी ज़िनाकारी (व्यभिचार) को ज्यादा तरक्की देंगे"। लीजिये यह अदालती फैसला भी सबूत में पेश है। जनता फैसला करले कि क्या स्वामीजी कुछ कम पढ़े थे जो पुनर्विवाह (विधवा विवाह) को बुरा, बहुत बुरा और उसमें बहुत सी बुराइयां बतला कर मना किया है फिर पं० तुलसी राम ने नियोग को पुष्ट किया और पुनर्विवाह से पुनर्भू संज्ञा की तो वह निंदित उढ़री धरौआ नातावाली हो गई। लाला हंसराजजी तथा लाला मुंशीराम उर्फ स्वामी श्रद्धानन्दजी ने तो पुनर्विवाह को डामिल कर दिया। मजिस्ट्रेट ने भी नियोग को ज़िनाकारी (छिनारा) कहा है। कहिये जब आपके शिरधरों के यह बयान है तब क्या किसी एक की भी न मानोगे ? स्वामी विवेकानन्द तथा स्वामी रामतीर्थजी ने भी लेक्चरों में कहा है कि अरे उन्नति के अधिकारियो, तुम्हारा इन विधवाओं में क्या अधिकार है जो ऐसा करते हो, इत्यादि।

शङ्कराचार्य।

सज्जनो, यह पक्की सुनी गई है कि मिस मिलर के शुद्ध

करनेवाले शङ्कराचार्य श्रीशङ्कराचार्यजी की चार गद्दियों में से किसी में नहीं हैं। यह कोई यम. ए. पास हैं। शायद किसी गद्दी के अधिकारी होने वाले थे किन्तु ऐसे अनाचार पथ पर आरूढ़ होते देखकर गद्दी से च्युत किये गये है इससे उसी नाम से अपने को प्रसिद्ध करते हुए स्वयं गद्दीच्युत हो कर वैसे ही पुरुषों का साथ अनाचारप्रथा से देते हैं।

माधवप्रकाश ब्रह्मचारी।

आप जगन्नाथ पुरी के श्रीबलदेवप्रकाश ब्रह्मचारी के शिष्य हैं। आपने उनके बाद गद्दी नही पाई। यहां ब्रह्मावर्त में ऋषिकुल खोला है। कानपुर के सराफा आदि बाज़ारों के सज्जन तथा अन्य विदेशी सज्जन भी धन से सहायता करते हैं। यही उक्त ब्रह्मचारी जो उन्नाव कान्यकुब्ज सभा में विधवा विवाह समर्थकों में अग्रसर भये थे और रोकने पर भी हाथ उठाया था, पूछने पर भी कहा कि हमतो समर्थक हैं। सज्जनो, विचारिये कि जिस ब्रह्मचर्य आश्रम के संचालक ही ब्रह्मचर्य का नाश करने वाले हों उसकी सहायता करना कितना महापाप है, कहां विधवा विवाह और कहां ब्रह्मचर्य आश्रम, ध्यान दीजिये।

शास्त्रार्थ विजय।

श्री गौरीशंङ्करजी भार्गव मंत्री ब्रह्मावर्त सनातन धर्म महामंडल के सूचनापत्र में पं० भूदेव विद्यालंकार, राम

बिहारीलाल वेदतीर्थ, भूदेव शास्त्री, कृष्णकुमार एम. ए. इत्यादि प्रमुख व्यक्तियों के पराजित होने की गर्म खबर निकलने के पीछे पं० रामसेवक शास्त्रीजी ने शास्त्रार्थ सूचना नामक नोटिस निकाला। उसमें यह लिखा कि उस समय मैं नहीं था अब जिसको शास्त्रार्थ करना हो करले। इस पत्र के उत्तर में शास्त्रार्थ घोषणा नामक पत्र कानपुरीय विद्वन्मण्डल की ओर से निकला जिसमें दो शर्तें शास्त्रार्थ की थीं—एक विद्वन्मण्डल के विद्वानों के साथ नियम, सभापति आदि तै करके बिना द्रव्य शर्त के शास्त्रार्थ कीजिये। दूसरी शर्त ५०००) रुपये की विद्वन्मण्डल के स० पण्डित माधवराम अवस्थी 'व्यास' के साथ वेद धर्म शास्त्र इतिहास पुराणों में शास्त्रार्थ कीजिये। दो रजिस्ट्री पं० रामसेवकजी के पास भेजी गई दोनों लौटाल दीं, दो हाथ के पत्र दिये गये उनको शास्त्रीजी ने ले तो लिया किन्तु उत्तर कुछ भी नहीं दिया, मौन हो गये। इसी से जनता फैसला कर ले।

उक्त शास्त्रीजी का घोर पराजय।

उन्नाव शहर जो कानपूर के समीप है वहां अखिल भारतीय कान्यकुब्ज सभा के नाम से सभा थी जिसमें सब विलायत पार्टी वाले प्रधान थे। यहां तक कि एक नोटिस में यह भी लिखा देखा गया कि यह विलायत पार्टी वालों की सभा है, अस्तु इस सभा में विधवा विवाह का भी प्रस्ताव

रक्खा गया था । सभा में विधवा विवाह समर्थक पं० रामसेवक शास्त्री व्याकरणाचार्य, पं० भूदेव शास्त्री विद्यालंकार, पं० लक्ष्मीनारायण शास्त्री लखनऊ तथा उरई के एक पंडित विद्यमान् थे । दूसरे दिन ४।८।२८ को कई प्रस्तावों के पहिले ही यह विचार कर कि जिसमें दो बजे वाली गाड़ी से कानपुर की जनता तथा पण्डित मण्डली न आ पावै और विधवा विवाह प्रस्ताव पास हो जाय पेश कर दिया। भूदेव विद्यालंकारादि तीन समर्थकों ने उसका खूब समर्थन किया इनके उपरान्त जिस समय पं० दुर्गाचरण शास्त्री ज्योतिषाचार्य विद्यारत्नजी ने सभा में खड़े होकर अपने वेद शास्त्र के प्रखर प्रमाणों से गंभीर नाद करते हुए वक्तृता दी है सब जनता मुग्ध हो गई, समर्थकों के होश हवाश बिगड़ गये। सब को निश्चय हो गया कि विधवा विवाह शास्त्र विरुद्ध है और इस सभा के सभासद् विद्वान् महापाप और घोर अन्याय करते है। पं० रामसेवकजी शास्त्री दो बजे की गाड़ी से उतर सभा में गये साथ ही श्रीमान् पं० शंकरदयालुजी शास्त्री व श्रीमान पं० बद्रीनारायणजी शास्त्री तर्कवागीश व श्रीमान् पण्डित चंद्रशेखरजी शास्त्री अग्निहोत्री व श्रीमान् पं० केशवदत्तजी शास्त्री कविरत्न इत्यादि इत्यादि महानुभावों को देखतेही उक्त शास्त्रीजी का हृदय कंपित हो गया। सभा में बोलने को खड़े तो हुए पर उस सभा वालों से ही पूछ लीजिये, कंठावरोध

हो गया। किसी सज्जन ने कहा कि जल पी लीजिये। अन्त में कुछ कहकर बैठगये। इनके पश्चात् विरोधपक्ष से पं० माधवराम अवस्थी ने ५०००) रुपये की शर्त लगा कर गर्जना से कहा कि जो बिधवा विवाह को वेदशास्त्र से सिद्ध करै उक्त रुपये की शर्त रही, जीत हार में लेना देना। केवल १० मिनट का समय होने के कारण थोड़े से प्रमाण कह सके। पश्चात् श्रीमान् पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्री ने सारगर्भित प्रमाणों से जनता को स्पष्ट जँचा दिया कि बिधवा विवाह शास्त्र विरुद्ध है। अंत में हाथ उठवा कर संमति ली गई। जब समर्थकों से विरोधियों का पक्ष बड़ा प्रबल पड़ा तब पक्षियों की ओर से बेंड बाजा बजाया गया, खींचा-खींची मचाई गई, रोकने से मारपीट ढेला पत्थरों तक की नौबत गुज़र गई। अंत में बिधवा विवाह का प्रस्ताव स्थगित कर दिया गया।

इस सभा के श्रीसभापतिजी।

श्रीमान् पं० शीतलाप्रसादजी जज इस कान्यकुब्ज सभा के सभापति थे। आप न्यायकारी हैं, शान्त स्वभाव तथा योग्यता से पूर्ण हैं किन्तु विदेशी पार्टी वालों के अनुचित दबाव के कारण आप उचित फैसला न दे सके।

इस सभा के प्रधान श्री मिश्रजी।

मिश्रजी विलायत पास कर अंग्रेजी विद्या में पूर्ण योग्यता

प्राप्त कर बड़े उच्चपद में हैं और बड़े मृदुभाषी है। आप से हमारा नम्र निवेदन है कि जिस तरह आप अंग्रेजी में इतना कानून पास कर फैसला करते हैं इसी तरह धर्म के फैसला देने में धर्म का कानून धर्मशास्त्र जानने में भी कुछ परिश्रम कोजिये जिससे आपको सभा में इस बात की दोहाई न देना पड़े कि संस्कृत विद्या हम नहीं जानते हैं! यहां तक कि कई बार बतलाने पर साधारण शब्द तक उच्चारण में बड़ा क्लेश उठाने पर भी शुद्ध न बोल सके तब धर्म का फैसला जैसे विधवा विवाह का ठीक निर्णय कैसे कर सकते थे। हमने सुना है कि आपकी बेटी ने पुनर्विवाह नहीं किया उसे विशेष धन्यवाद है।

इस सभा के प्रधान, रुद्र यज्ञ के यजमान श्रीवाजपेयीजी।

सुना है कि आप विलायत पास कर बहुत श्रेष्ठ पद पर है। इसके लिए धन्यवाद। इस कुल में ऐसी योग्यता प्राप्त किये आप से विशेष निवेदन है कि कुछ अपनी मातृभाषा संस्कृत में परिश्रम कीजिये अगर बोध है तो हठ न कीजिये, शास्त्र का सारांश देखिये। ऐसा पद पाकर यज्ञ में अधिष्ठाता बन विधवा विवाह के पक्ष में हाथ उठाना इस घोर पाप पर ध्यान दीजिये अगर कहीं ज्यादा पद होता तो न जाने क्या होता 'वाजपेयशतानि च'।

बिधवा विवाह समर्थक पं० श्रीरामसेवक शास्त्री।

आपको विशेष धन्यवाद। पढ़ लिख कर धर्म में धूल न डालिये, दोमुंहापन छोड़िये। इधर तो समाजी भाइयों के आपके नाम से नोटिस बांटने पर इनकारो खींची उधर शास्त्रार्थ सूचना दे घर में घुस बैठे। मजदूर भी पेट को नहीं डरते आपने पेट के पीछे अपनी बात मिट्टी में मिलादी। कोई जमानतदार खड़ा करके लड़ो, एक लाख तीस हज़ार में हाथ मारो, पर सँभल के सामने आना बड़ों २ से काम पड़ेगा।

सर रामपालसिंहजी आ. के. सी. यस. आई. ई.

आप अवध में एक रियासत के मालिक हैं, ज़रा ख्याल कीजिये, आगे क्या आपही के समान राजर्षि थे ? वाल्मीकि० देखिये, अधर्म पथ से खैर नहीं। आप मन्दिर सुधार के श्रेष्ठ मेम्बर है। बिधवा विवाह समर्थक होने से क्या सनातन-धर्मी जनता आपको श्रद्धेय दृष्टि से देखकर आपके सुधारक कार्य में सहमत होगी, कदापि नहीं।

अलंकार शास्त्री प्रोफेसर साहबो।

आप लोग संस्कृत अवश्य जानते होंगे पर ध्यान रहे कि सदाचारशून्य राक्षसेन्द्र रावण वेदज्ञाता, उद्भट विद्वान् होता हुआ भी आदरणीय नहीं हुआ, उसने अपनी बहिन शूर्पणखा का पुनर्विवाह नहीं किया, आप लोग क्या उससे भी

ज्यादा डिगरी हासिल किया चाहते हैं बस सँभल जाइये हठ छोड़ सत्यपथ का ग्रहण कीजिये।

विधवा विवाह समर्थक समाचार-पत्र।

उष्ट्राणां विवाहेतु गर्दभाः शांति पाठकाः।
परस्परं प्रसंसन्ति० इत्यादि ॥

आप सब उत्तम लेखक व प्रकाशक होते हुये अपने हृदय में सत्य को स्थान दीजिये। 'शत्रोरपि गुणा वाच्या:०। अपने दुश्मन के भी गुणों की प्रशसा और अपने मित्र के औगुण की भी निंदा करना धर्म और सत्यता से अलग नहीं है आप विधवा विवाह समर्थक पक्ष की पुस्तकों को तो आसमान में चढ़ा देते हैं किन्तु अगर कोई विरोध पक्ष में सत्य सत्य प्रमाण अर्थ युक्तियुक्त लिखे तो आप अपनी दुलत्तियों से पाताल में भी स्थिति नहीं लेने देते हो? अत: आप सब से सविनय प्रार्थना है कि कृपया अपनी अड़ंगा नीति को छोड़ सत्यधर्म तथा नीति का पालन कर पत्रों में ऐसे लेख लिखिये जिनसे भारतवर्ष का कल्याण हो और जनता रसातल को न जाय। पत्र ग्राहकों से भी हमारी प्रार्थना है कि इस पुनरुद्वाह शास्त्रार्थ नि० सिद्धान्त नामक लघु पुस्तक को आद्योपान्त पढ़ कर सच्चेपन से हृदय में हाथ धर ईश्वर को साक्षी करिये, देखिये भीतर से क्या उत्तर आता है, फिर इन पत्रों की समीक्षा पढ़िये, अगर उलटा जँचे

तो ऐसे झूठे मनरोचक पोच पत्रों में क्यों पैसा फेंकते हो। सच्चे धार्मिक हिन्दू, हिन्दीकेसरी, वर्णाश्रम, बंगवासी, ब्रा० सर्वस्व, श्रीमारवाड़ी ब्राह्मण, भारतमित्र आदि पत्र पढ़िये। विशेष कर सनातनधर्मियों से हठसे निरोध है कि आप सच्ची खबर वाले सनातनी मान्य लेख व पत्र पढ़ें, झूठी खबरों से भरे मनोरंजक पत्रों से हानि के सिवा लाभ कुछ नहीं।

इति अधर्मप्रचारक विधवाविवाहसमर्थक कांड समाप्तम्।

सैंसज़ रिपोर्ट।

सरकारी मनुष्यगणना के हिसाब से भारतवर्ष में लगभग २२ करोड़ हिन्दू तथा लगभग ७ करोड़ मुसलमान बसते हैं। इनमें हिन्दुओं में प्रति सैकड़ा १० तथा मुसलमानों में प्रति सैकड़ा ८ विधवायें हैं। दोनों जातियों में अनेक जाति भेद हैं किन्तु नीचे केवल हिन्दुओं के जाति भेद सहित कुल संख्या दिखलाई जाती है। सुधारक लोगों को विधवाओं पर बड़ा तरस आता है इसी से विधवा विवाह के प्रस्ताव सभाओं में पेश कर पास करा रहे है किन्तु कान्यकुब्ज ब्राह्मणों में जो दहेज की कुप्रथा से ६०–७० वर्ष तक की या यों कहिये कि आजन्म कारी बैठी रहती हैं इनकी तरफ कुछ ध्यान ही नहीं। यदि षटकुल षटकुल में, पंचादर पंचादर में, धाकर धाकर में ब्याह होने लग जांय,

बाल-विवाह बृद्ध-विवाह रोके जांय तो विधवाओं की संख्या अवश्य कम हो। पर होता तो यह है कि पंचादर और धाकरों की लड़की तो षटकुलों में चली जाती हैं और षटकुलों की लड़कियों के लिये लड़का मिलना मुशकिल होता है अथवा यों समझिये कि जब धाकर दश हजार देकर अपनी कन्या उच्चकुल में देता है तब गरीब उच्चकुल की एक लड़की कारी रह जाती है और छोटे कुल का एक लड़का कारा रह जाता है। दहेज तो कुछ न कुछ अवश्य रहेगा किन्तु समकुल में व्याह होने से लड़की कारी नहीं रह सकती। जो कहते हैं कि हमने दहेजप्रथा बन्द कर दी वे विलायत पास कराई के २५ हजार मांगते हैं-कहिये यह दहेज नहीं तो क्या है। इससे मित्रो, इन कारी बृद्धाओं पर दया करो क्योंकि आपकी दुलकी चालें सीखी हुई विधवाओं के आगे बेचारी बृद्धाकारी या अबोध-कारी को कौन पूछेगा।

अब विधवाओं का संख्याक्रम देखिये—

भारत में पूर्ण हिन्दू संख्या २१६२३७७६७ इनमें विधवा २०२१८७८० । कुल मुसलमान संख्या ६८६८२६६४ इनमें विधवा ४७१२६९३। यह तो हुई हिन्दू मुसलमानों की संख्या। अब जातिभेद के हिसाब से गणना देखिये--कुल ब्राह्म संख्या ६३८८ इनमें विधवाओं

की संख्या ३७९। सिक्ख ३२३७४४६ इनमें विधवा १८८५७१। जैनी ११७८५६६ इनमें विधवा १४३९९५। बौद्ध ११५७१२३५ इनमें विधवा ६७२६१३। पारसी १०१७७८ इनमें विधवा ६४९६। ईसाई ४७५३६५७ इनमें विधवा २५८५१५। जाति हो धर्म वाले ६७७३६५६ इनमें विधवा ६६००४०। बिना धर्म ३६३७२ इनमें विधवा १६७०। आर्यसमाजी ४६७५३७ इनमें विधवा ३०९१६। द्विजाति में ब्राह्मण क्षत्री वैश्य सब मिला कर ३ करोड़ से कुछ कम हैं इनमें विधवाओं की संख्या ११००३८६ है।

मित्रो, आप चिल्लाते हैं कि भारत में तीन करोड़ विधवायें है और इन्हीं का भूत आप लोगों पर सवार रहता है। अब विचारने की बात यह है कि द्विजाति—ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य जिनमें अधार्मिक होने के कारण विधवा विवाह जायज नहीं है उनमें विधवाओं की संख्या ११ लाख ३८६ है—इस संख्या को ३ करोड़ विधवाओं से अलग करने पर २ करोड़ ८८ लाख ९९ हजार ६१४ विधवायें ऐसी हैं जिनके यहां विधवा विवाह की प्रथा प्रचलित है। तब आप ११ लाख कम ३ करोड़ विधवाओं में जिनमें जायज भी है इतना सिरतोड़ परिश्रम क्यों नहीं करते जितना कि द्विजातियों में विधवाओं की न्यून संख्या होने

तथा अधार्मिक होने पर भी एड़ी चोटी का पसीना एक कर रहे हैं। इससे स्पष्ट प्रगट होता है कि आप का विधवाओं पर दया दिखलाना केवल दिखावा मात्र है, भारत ऐसे पुनीत देश की पतिव्रता स्त्रियों के दिल से पातिव्रत धर्म को नष्ट कर—उनमें विदेशी चाल ढाल फैला स्वतत्र कर बेचारी साध्वी स्त्रियों को रसातल पहुंचाना ही आप का मुख्य अभीष्ट है। इससे होश में आओ आपकी चालाकियों को जनता अच्छी प्रकार समझने लगी है।

---

* धर्मो रक्षति रक्षितः *

श्रीआनन्देश्वर सनातनधर्म सभा, श्रीविद्वन्मण्डल कानपूर।

सज्जनो, इधर उधर विशेष अधर्म प्रचार की हलचल बढ़ते देख कर केवल धर्म प्रचार तथा अधर्म निवारणार्थ इस सभा और इस मण्डल का सं० १९८४ में आविर्भाव हुआ है। अभी इसका सामान्य रूप से कार्य प्रवाह है। इसमें कोई चंदा भी नहीं, और कोष भी नहीं। सभापति मंत्री सदस्य अवश्य हैं। यदि यह ठीक योग न देवें तो समयानुकूल सदस्यों की राय से अन्यान्य स्थानापन्न भो हो सकेंगे, इसी भांति उनसे भी और संभावना हो सकती है।

श्रीविद्वन्मण्डल के सभापति श्रीमैथिलजी श्री पं० हरिनन्दनजी मिश्र ज्योतिषाचार्य हैं और श्री पं० चन्द्रशेखरजी शास्त्री व्याकरण साहित्योभयाचार्य मंत्री हैं। श्रीआनन्देश्वर सभा के सभापति श्रीमान् सेठ बद्रीदासजी बगड़िया हैं आप बड़े धार्मिक तथा धर्मके सच्चे उत्साही हैं, उपसभापति राय ब० श्रीमान् बाबू अवधबिहारीलालजी डि० कलेक्टर हैं। बिधवा विवाह की हलचल देख कर प० माधवराम अवस्थी 'व्यास' से श्री सेठजी ने पुस्तक लिखने की प्रेरणा की और कहा कि पुस्तक छोटी हो जो १०००० दश हजार संख्या में छप कर अधिकांश तो देश देशान्तर काशी कानपूर बंबई कलकत्ता उत्तर दक्षिण पूर्व पश्चिम भारतीय प्रसिद्ध स्थानों तथा हर जिले में भेजी जांय और सबको अधिकार दिया जाय सब कोई प्रकाशित करैं, छापने से प्रथम पत्र भेज कर स्वीकृति अवश्य मंगा लें। जो विद्वान् सहमत हों अपनी राय दें। और हर जगह श्री अध्यापक अपने विद्यार्थियों को भी पढ़ावैं। विद्यार्थी जो परीक्षा देंगे उनको सर्टीफिकेट मिलेगा, इसकी व्यवस्था श्रीमान् पं० कालूरामजी शास्त्री अमरौधा जिला कानपूर जो इस सभा के विशेष सहायक हैं उनसे या उक्त मंडल से पत्र व्यवहार करने से मिलेगी। प्रार्थना यह है कि इस सभा का कोषाध्यक्ष भारतीय प्रति सज्जन है, पत्रोत्तर मंगाने में कुछ व्यय कर दिया करें तभी उत्तर मिलेगा और कोई सहायता नहीं मांगते यदि सहा-

यता करना चाहें तो आप की उदारता है सभा या मण्डल की याचना नहीं है। कुछ पुस्तकें अल्प मूल्य पर बेची भी जायगी जिससे बार बार उक्त सभापति श्रीमान् सेठजी को उदार होते हुए भी संकोच न हो। इधर कई सौ रुपया विद्वान् महात्मा राजा महाराजा रानी महारानी आदि को संमतियां मंगाने में व्यय किया और बहुत सा रुपया दश हजार पुस्तक छपाने में व्यय किया है। धन्यवाद है ऐसे धर्मात्मा उत्साही उदार पुरुष को। ईश्वर से प्रार्थना है कि ऐसे ही उत्साही पुरुष धर्म की मर्यादा रखने वाले हर जगह होवें और विद्वानों को सहायता दे धर्म निर्णय कराकर धर्मका प्रचार करें जैसे श्री १०८ जगद्गुरु शङ्कराचार्यजी के सहायक सुधन्वादि राजा हुए तब धर्मरक्षा हुई नहीं तो न मालूम भारतीय किस रूप और किस दशा में पहुंच जाते। अब यह धर्म प्रचार की लीला देखिये जो उदीर्ष्व० मंत्र पढ़ कर अंत्येष्ठि क्रिया में पुनर्विवाह का अनर्थ प्रचार किया जाता है। विद्वानों से प्रार्थना है कि आप अपने अपने प्रान्त में धर्म का प्रचार कीजिये। आप स्वयं विद्वान् है किन्तु यदि किसी प्रकार की शास्त्रीय सहायता माँगेंगे तो विद्वन्मण्डल देने में सहर्ष उद्यत है। जो विद्वान् इसमें शास्त्रीय सहायता देवें वे हर प्रांत से नाम भेजें, उनकी सहायता का धन्यवाद दिया जायगा। जो विधवा विवाह समर्थक शास्त्रीय प्रश्न करेंगे उन्हें वापसी टिकट भेजने पर समयानुकूल उत्तर

दिया जायगा, परंतु श्लील या कोरी दलीलों का उत्तर न दिया जायगा, बिना टिकट मिले भी उत्तर न दिया जायगा, पत्र-प्रेषक क्षमा करें। तीनों शास्त्रार्थ के नियम तीन मास पहले तै होने पर प्रथम फिर द्वितोय फिर तृतीय शास्त्रार्थ होगा। शास्त्रार्थ द्वारा निर्णय होने से जनता का भ्रम दूर हो जायगा। पत्र-व्यवहार पं० माधवराम अवस्थी 'व्यास' चौक, कानपुर के पते से करना चाहिये।

श्री महात्मा विद्वानों की सम्मति तथा संक्षिप्त नामावली।

श्रुतय: प्रमाणं स्मृतय: प्रमाणं—श्रुति, स्मृति प्रमाण होते हैं यदि महात्मा या विद्वान् दुराचार करैं तो श्रुति स्मृति प्रमाण झूँठे नहीं हो सकते, जैसे जज्ज कलक्टर अन्याय करें तो कानून उलटा नही होगा।

सज्जनों सब के नाम तथा उनकी पूरी सम्मति प्रकाश करने में हम अशक्त है, संक्षेप से कुछ महात्मा विद्वानों राजा महाराजों रानी महारानी आदि की नामावली प्रकाशित की जाती है यदि किसी के नामोपाधि आदि लिखने में भ्रम से विपरीत हो जाय या रह जाय तो वे क्षमा प्रदान करें। सब की कृपा तथा प्रेरणा से बड़ी पुस्तक में लेख प्रमाण विस्तार सहित प्रकाशित किये जांयगे।

श्री० १००८ श्रीमज्जद्गुरु श्रीशारदापीठस्थ शङ्कराचार्याणां—यतीश्वराणां च विदुषां यन्मतं तदेव श्रेयस्कर मिति विधवाशब्दो द्योतयति ।
श्रीशारदापीठस्याचार्याः
चन्द्रशेखरस्वामिनः।

श्री० १००८ श्रीजगद्गुरु श्रीकाञ्चीपीठस्थ प्रतिवाद-भयङ्कर महोदयानां संमतयः 'मृतभर्तृकाणां स्त्रीणां पुनर्विवाहोऽनुचित' इति वयं मन्यामहे—
श्रीकाञ्ची प्रतिवादभयङ्कर-मठाधीशः—अनंताचार्यः

स्थानाभाव से केवल कुछ ही नाम प्रकाशित किये है। काशीपुरी—श्रीमत्परमहंस परिव्राजकाचार्य श्रीदण्डिस्वामि निवासाश्रम महंत मछरीमन्दिर १, श्रीदण्डिस्वामि कमलनाभाश्रम महन्त अनन्त विज्ञानमठ २, श्रीविश्वेश्वराश्रमजी महन्त ईशानेश्वर मठ ३, श्रीदण्डिस्वामि परमेश्वरानन्द सरस्वती कथरगली मठ ४, श्रीलक्ष्मणानन्दजी तीर्थ त्रिपुरभैरव ५, बालवृद्ध वि० संशोधन अवश्य हो-श्रीदण्डिस्वामि गोकर्णेश्वरानन्दजी तीर्थ महन्त श्रीदेवी शंकठामठ काशी ६, श्रीदण्डिस्वामि परमेश्वरानन्दजी ७, श्रीपरमहंस कृष्णानंद जी ८, श्रीस्वामी दयानंदजी भा० ध० म० ६, तत्संमेलि वि० श्रीविंध्येश्वरीप्रसाद १०, श्रीअवधेशप्रसाद ११, श्री राधिकाप्रसाद वे० शा० श्रीपरमानंद ब्रह्म० १२। श्रीवृन्दावनस्थ महात्मा विद्वानों की सं०—निषिद्धोऽयं वि० विवाहः—

श्रीवेदमार्ग प्रतिष्ठापकस्त्रय वेदांताचार्या श्रीरामानुज सिद्धान्त निर्धारण सार्वभौम श्रीमद्गोवर्धनपीठाधीश्वर श्रीरङ्गाचार्य स्वामिनः १, तत्सं० श्रीतर्क० वेदतीर्थ श्रीधरणीधर शा० २, श्री श्रीधराचार्य शा० वेदतीर्थ वेद शिरोमणिः वेद रत्न ३, श्री स्वा० रामप्रपन्नाचार्य शा० तर्क वा० वेद शिरोमणिः ४, श्री पं० सीताराम शा० व्या० आचा० प्रा० श्रीरङ्गलक्ष्मी वि० अ० ५, श्री पं० अमोलकराम शास्त्री तर्कतीर्थ श्रीरङ्गलक्ष्मी वि० अ० ६, श्रीस्वामी हरनारायणाचार्याः व्या० आ० नयागंज कानपुर ७। श्रीमाध्वसंप्रदायाः— श्रीमाध्वगौडेश्वर समाम्नायानुयोगकृत वृन्दावन परिजनः श्रीगोस्वामि मधुसूदनाचार्याः १, श्रीगोस्वामि वनमालीलाल जी आचार्याः शास्त्रिणः २, श्रीगोस्वामि दामोलालाचार्याः षट् शास्त्रिणः ३। श्रीनिम्बार्क सम्प्रदायाः—श्रीगोस्वामि द्वैताद्वैत संप्रदायाचार्य श्री श्रीजीमहाराज उपनाम परशुरामपुरी सलेमाबाद १, तत्सं० प० देवकीनन्दन शर्मा २, पं० रमादत्त शर्मा ३, महंत श्रीब्रजभूषणशरणजी उखड़ापीठाधिप ४, श्रीगोस्वामि गोविंदलालजी कानपुर ५, श्रीस्वामि माधवशरण देवाचार्य श्रीविहारीजी का मंदिर, कानपुर ६, श्रीस्वामि मुरलीधरजी गा० प्रयाग ७, श्रीमाधवदास ब्रह्मचारी म० नान० वहरायच ८, श्रीवृन्दावनस्थ श्रीनिकुञ्जविहारिवाटिकानिवासि हरिप्रियाशरणोपनामक पं० दुलारेप्रसाद शा० ९, श्री पं० गोवर्धनलाल भट्टानाम् १०, श्री

पं० रामप्रसाद शास्त्री ११, श्री पं० उज्ज्वलदत्त श० १२, श्री० यु० भ० भक्ति वि० मधुसूदन भट्टानाम्० १३, श्री भट्ट सोहनलाल पौ० १४, श्रीजयदेवप्रसाद श० १५। श्रीवल्लभाचार्य सम्प्रदायाचार्य श्रीगोस्वामि देवकीनन्दाचार्या अग्रिण: १, श्री राधावल्लभी गोस्वामि नाम सं० श्रीगोस्वामि मधुसूदनवल्लभाचार्याः वृन्दावन २, श्रीगोस्वामि गोपालवल्लभजो रोची रो० अह्म० ३, श्री गोस्वामि गोपालवल्लभजी ४, गोस्वामि बनवारीलालजी ५, श्रीगोस्वामि चन्द्रलालजी ६, श्रीगोस्वामि ब्रजजीवनलालजी ७। मथुरायाः नि० पुनरुद्वाहः--श्रीपं० वामनाचार्यः १, श्री० या० के० अमृतराम शा० २, श्रीविष्णुदत्त चतुर्वेदः ३, श्रीपण्डित सुंदरलाल भट्ट पौरा० ४, श्री पं० श्रीनिवास भ० चक्र० ५, श्री पं० शिवप्रकाश ज्यो० ६, श्रीरामप्रसाद रा० वै० शा० ७, श्रीजग्गीराम श० ८, श्री स्वा० लक्ष्मणाचार्यः शा० ९, श्री स्वामी गोविन्दाचार्याः १०, श्रीसोमदत्त श० पा० ११, श्रीभोलानाथ शर्मा १२, ज्योतिषी श्री महा० म० विट्ठललालजी १३, श्रीहलधर शा० १४, श्री० याज्ञिक पुरुषोत्तमः १५। नैमिषारण्यस्थानामसंमतोयम् वि० विवाहः-- श्रीमन्महाराज राजाराम ब्रह्मचा० १, श्रीराजाराम शास्त्री प्र० अध्या० वे० पा० २, श्रीपीताम्बरदत्त शास्त्री रा० वैद्य० ३, श्रीभवानीशङ्करदत्त श० ४, श्रीब्रह्मादीन स्था० प्र० व्यास गद्दी ५, श्री प० वैद्यनाथ मिश्र नैमिषारण्यम् ६।

सुधारकों की आशाओं पर वज्रपात।

श्रीकाशी विद्वन्मण्डली की महत्वपूर्ण घोषणा।

(ता० २८-१२-१९२७ के 'अग्रवाल हितैषी' में मुद्रित)

मुम्बापुरीनिवासि श्रेष्ठिवर केदारमलजी लड़िया महोदयानां भारतवर्षीय हिन्दुसभा राष्ट्रीय समादि लौकिक समाजव्यवस्थापकसमितिसन्निविष्टाः केचिदन्ये च प्रच्छन्ननास्तिका लोके च धर्मरक्षणात्परमेवात्मानं प्रख्यापयन्तः केचन सनातनवैदिकवर्णाश्रमाचार वहिर्भूतमपि राष्ट्रहितत्वेन व्यपदिशन्तो यदधुना विधवाविवाह स्पृश्यतानर्हचाण्डालादि स्पर्शनपतितपरावर्तनसमुद्रयात्राऽमक्ष्याभक्षणाऽपेयपानादिकं सर्वेषामेव भारतीयानामवश्य कर्तव्यमिति साग्रहमावेदयन्तः स्वयमप्येतादृश व्यवहाराननुतिष्ठन्तो विच्छिन्नशिष्टपरम्परापरिप्राप्तसदाचारमर्यादाभेदेनेदमाचरन्ति तदिदमाचरणं तेषां धर्मशास्त्रानुमोदितं भवितुमर्हति न वेति प्रश्ने ?–न भवत्येवेत्युत्तरं संमनुतेऽस्माभिः।

भाषा–मुम्बई निवासी श्री सेठ केदारमलजी लड़िया महाशय का एक प्रश्न है कि इस भारतवर्ष में हिन्दूसभा राष्ट्रीयसभा आदि लौकिक समाज के व्यवस्थापक समितियों में बैठनेवाले कार्यकर्ता और उनके शामिल तथा

अन्य गुप्त नास्तिक जो कि लोगों में यह दिखा रहे हैं कि हम धर्म संरक्षक हैं वे लोग तथा और भी कुछ लोग सनातन वैदिक वर्णाश्रम के आचरण से विरुद्ध होते हुए भी राष्ट्रहितकारक होने से प्रचार की आवश्यकता है ऐसे बोलते हुए विधवा व्याह (नाता) स्पर्श लायक नहीं ऐसे जो चाण्डालादि नीच जाति है उनका स्पर्श करना पतितों की शुद्धि समुद्रयात्रा अभक्ष्य भक्षण अपेयपानादि कर्म भारतवासियों को अवश्य करना चाहिये। ऐसे आग्रहसहित औरों को कहते हुए स्वयं ऐसे व्यवहारों का आचरण करते हुए अनादिकाल से शिष्ट परम्परा द्वारा चली आई जो धर्म मर्यादा उसको छेदन करते हैं। यह उनका आचरण धर्मशास्त्र के अनुसार है कि धर्मशास्त्र से विरुद्ध है?

इसके उत्तर में हम सब काशिस्थ विद्वान् लिखते हैं कि यह सर्वथा धर्मशास्त्र के विरुद्ध है ऐसी यहां के विद्वानों की सम्मति है।

हस्ताक्षर-म० म० श्री नित्यानन्दजी पर्वतीय: १, म० म० श्री पञ्चाननजी तर्करत्न २, म० म० श्री प्रमथनाथजी तर्कभूषण ३, म० म० श्री लक्ष्मण शास्त्री द्राविड़ ४, सं० श्री देवनारायण त्रिपाठिनोपि ५, श्री राजराजेश्वर शास्त्री द्राविड़ोप्यमुमेवार्थं संमन्यते ६, श्री श्रीशङ्करभट्टाचार्य ७, म० म० श्री मुरलीधर झा ८, म० म० श्री वामाचरणजी

भट्टाचार्य ९, म० म० श्री देवीप्रसाद शुक्ल कवि० १०, म० म० श्री मधुदत्त शास्त्री अग्निहोत्री ११, श्री वामाचरण तर्कतीर्थ १२, श्री गोपाल शास्त्री १३, श्री अविनाशचन्द्र भट्टाचार्य १४, श्री तारादत्तः १५, श्री पहाड़ी पं० शा० १६, श्री रामयत्न ओझा १७, श्री केदारनाथ १८, श्री अनन्त-राम शास्त्री १९, श्रीगौरीशंकर पाराशरः २०, श्रीराम-भवन उपा० २१, श्रीभगवानदत्त गौडशास्त्री २२, श्रीगण-पति मुकोटे शास्त्री २३, श्रीनाथूरामशास्त्री २४, श्री शिव-दत्त मिश्रः २५, श्रीशुकदेव वैद्य २६, श्रीशिवनारायण शा० २७, श्रीगुलाब झा २८, श्रीपुरुषोत्तम कर्मकांडी २९, श्रीताराचरण भट्टाचार्य ३०, श्रीसुनाकी कवि ३१, श्री पूर्णचन्द्राचार्य ३२, श्रीशिवबकस मिश्र ३३, श्रीहाराचन्द्र भट्टाचार्य ३४, श्रीराजाराम श० ३५, श्रीरामयश श० ३६, श्री ब्रजविहारी झा ३७, श्रीचंडीप्रसाद शुक्ल ३८, श्रीकृपा-राम शर्मा ३९, श्रीचन्द्रधर शास्त्री ४०, श्रीरामावधि शर्मा ४१, श्रीपद्मनाभ शा० ४२, श्रीगौतमजी ज्यो० ४३, श्रीछिन्न स्वामि शास्त्री ४४, श्रीविश्वेश्वर शास्त्री ४५, श्रीबालकृष्ण मिश्रः ४६, श्रीमातृप्रशास्त्रिणः ४७, श्रीविद्याधर शास्त्री ४८, श्रीरामनिहोर द्विवेदी ४९ ।

:o:

श्रीसनातनधर्म सभा प्रयागे समागतानां भारतीय सुप्रसिद्ध विद्वज्जनानां व्यवस्थेयम् ।

(माघ शुक्ल १ सं० १९८४ ता० २३-१-१९२८)

श्रुतिस्मृतिपुराणादि पर्यालोचनया विधवाविवाहस्य कथमपि धर्म्मत्वं न प्रतिपादयितुं शक्यते । सर्वथा शास्त्रविरुद्धैवेयं केषांचिदाधुनिकानां विधवोद्वाहकल्पनेति ॥ संमनुतेऽमुमर्थं जयपुर राजपण्डितो महामहोपदेशकः 'श्रीमधुसूदन शर्मा' विद्यावाचस्पतिः १, संमन्यतेऽमुमर्थं 'रामकृष्ण शास्त्री' व्याकरणवारिध विद्याभूषणम् (अहमदाबाद निवासी) २, सम० बड़ौदा राजपण्डितेन धर्माध्यक्षेण 'अमृतरामशास्त्रिणा' ज्योतिःशास्त्रमार्तण्डेत्याद्युपाधिमता ३, पं० 'पूर्णचन्द्राचार्य' व्याकरणाचार्य व्याकरण विशिष्टाद्वैतवेदान्त टीकामणिप्रधानाध्यापक संस्कृत कालेज बनारस ४, संमनुतेऽमुमर्थं पटियाला राजपण्डितो 'मुल्कराज शर्मा' तर्कवागीश वेदान्तरत्नम् ५, म० म० 'गिरिधर शर्मा' चतुर्वेदः जयपुर ६, संमनुतेऽमुमर्थं म० म० 'देवीप्रसाद शुक्ल' कविः काशी ७, 'गिरीशशुक्लस्य' न्यायाचार्य्यस्य काशी वासिनः ८, सम्मान्ययमर्थो महामहोपाध्यायपण्डित 'हाथीभाई' शर्मणा जामनगर राजपण्डितेन ९, सम्मतिरत्र 'विद्याधर शर्मणः' १०, 'राजभवनशर्मणोऽपि' ११, सम्मति-

रत्र 'रामव्यास' शास्त्रिणः १२, सम्मतोऽत्र 'राजनारायण शर्मा' वैयाकरणो वि० वि० अध्यापक काशी १३, सम्मनुतेऽमुमर्थं हृदयेन 'चिन्नस्वामि शा०' मीमांसकः मीमांसाध्यापकः काशी हिन्दू विश्वविद्यालये १४, सम्मतिरत्र पुरोहित 'कृष्णदत्त शर्मणः' कोटानगरस्थराजपण्डितस्य १५, 'अम्बिकाप्रसाद' शर्मणो व्याकरणाचार्यस्य व्याकरणशास्त्राध्यापकस्य हिन्दू विश्वविद्यालय काशी १६, 'रामशङ्कर' द्विवेदिनो व्याकरणसाहित्याचार्यकर्वीस्थ श्रीजयदेवसंस्कृतकालेजप्रधानाध्यापकस्य १७, विद्यारत्न पं० 'चन्द्रदत्त शास्त्री' राजपण्डितः अलवर स्टेट १८, महामहोपदेशक पं० 'दीनदयालु शास्त्री' व्याख्यान वाच० १९, तत्पुत्रो 'हरिहरस्वरूप शर्मा' (शास्त्री बी. ए.) व्य० हिन्दू संसार दिल्ली २०, 'विन्ध्येश्वरीप्रसाद' शास्त्री सम्पादक सूर्योदय २१, 'राधाप्रसाद' शास्त्री वि० वि० काशी २२, हृदयतः समर्थयतेऽमुमर्थं 'श्रीगोपालः' दर्शनकेशरी दर्शनाध्यापकः काशी विद्यापीठ २३, गो० 'जीवनदास शर्मा' व्याख्यानवारिधि महामहोपदेशक श्री स० ध० पंजाब प्र० नि० लाहौर २४, विधवा विवाहः सर्वथा वेदविरुद्ध इति स्वीकरोति 'अखिलानन्द शर्मा' कविरत्न अनूपनगरस्थः २५, विधवा विवाहोऽवश्यं निराकरणीयः यतोहि सर्वर्षिसंमतविरुद्धोऽय प्रचार इति समर्थयति 'व्रजबिहारी'

ओभोपाख्य: प्रधानाध्यापको लखीमपुरीय सनातनधर्म सभा संस्कृत विद्यालयस्येतिदिक् २६ ।

भारतीय विद्वज्जनानाम् निषेधत्वम् ।

श्री पं० कालूराम शा० व्या० वा० अमरौधा कान० १, श्री प० नन्दकिशोरजी 'वाणीभूषण' २, स्व० श्री पं० भीमसेनजी के चि० पुत्र पं० ब्रह्मदेव शा० इटावा (मुजफ्फरपुर कालेजाध्यापकानाम्) ३, श्री म० म० शशिनाथ झा ४, श्री देवी० झा ५, श्रीचतुरानन्द श० ६, श्रीडाटेश्वरझा ७, श्री रमाकान्त झा ८, श्री किशोरीदत्त श० ९, श्री मुकुन्द झा १०, म० म० गुरुवर्य श्री राजाराम शास्त्रिचरणैर्विधवोद्वाह शङ्कासमाधान नामक पुस्तकमुद्धृतम् ११, श्री बदरीनाथ झा १२, श्री सत्यदेव मिश्र १३, (बरेली नि० विश्वविद्यालये अ०) श्री रामलोचन शा० वैया० केसरी १४ श्री टीकाराम शा० महो० १५, श्री पुरुषोत्तमदत्त शा० १६, श्री जीवानन्द शा० कूर्मा० १७, श्री चन्द्रभूषण शा० व्या० आ० १८, श्री कान्तिचन्द्रो व्या० आ० नी० १९, श्री दीनदयालु श० सां० ती० २०, श्री सीताराम शा० २१, श्री ब्रजेन्द्रचन्द्र शा० सा० चा० न० नी० २२, श्री भीमसेन शा० २३, श्री लक्ष्मणदत्त शा० २४, श्री बांकेलाल शा० २५, श्री हरिशङ्कर झा २६, हरिद्वार ऋषिकुल वि० श्री घूटर झा शा० व्या० आ० तर्क का० ती० साहि० आ०

प्रिंसिपिल ऋषिकुल हरिद्वार २७, श्रीहरिवंशदत्त मिश्र व्या० आ० २८, श्री कृष्णलाल शर्मा मी० वा० तीर्थ २६, श्री रामानन्द शर्मा व्या० शा० वि० भा० ३०, श्री दुर्गादत्त-पन्तो वेदाचार्यः ३१, श्री कैलाशचन्द्र च० हृषीकेश ३२, कलकत्ता—श्री अनन्तकृष्ण शास्त्री ३३, श्री रमापति मिश्र प्र० वि० प्र० कार्यका० सभा ३४। मुम्बई—श्री मोतीराम शा० अ० मुम्बादेवी पाठशाला ३५, श्री नटवर शा० ३६, श्री चन्द्रशङ्कर श० ३७, श्री नानूभाई श० ३८, श्री बाल-कृष्ण श० ३६, श्री यदुराम श० ४०, श्री ललिताशङ्कर शर्मा ४१, श्री गोकुलचन्द्र शर्मा महो० भारतधर्म मंडल मेरठ ४२, श्री तुलसीराम सितौरी जि० अलीगढ़ ४३, श्री योगीदेव गौरीकुंड गढ़वाल ४४, प्र० पं० श्री बच्चूशूरजी जिला खीरी ४५, मिश्रोपनामक पंडित गदाधर श० ४६, पण्डित गयाप्रसाद मिश्र ४७, पण्डित चन्द्रशेखर शास्त्री राजवैद्य म० म० भा० ध० म० ४८, पण्डित रामचरण मिश्र ४६। कानपुर के प्रसिद्ध कान्यकुब्ज रईसों की स्वल्प संख्या—श्री शिवशङ्करलालजी वाजपेयी कैलास १, श्री दुर्गाप्रसादजो वाज० कै० २, श्री गंगाप्रसाद जी वा० कै० ३, श्री सरयूनारायणजी त्रि० बैकुंठ ४, श्री शेष-नारायणजी त्रि० बै० ५, श्री बिंदाप्रसादजी दुबे ६, श्री गंगाप्रसादजी दुबे ७, श्री रामनारायणजी दुबे ८, श्री

सोमेश्वरजी मिश्र ६, श्री वैकुंठनारायणजी दुबे १०, श्री दुर्गाशंकर श्री शिवशंकरजी दी० बदरका ११, श्री लक्ष्मी-नारायणजी मिश्र १२, श्री शिवनाथजी दीक्षित १३, श्री मन्नूलालजी त्रिवेदी १४। कानपुरीय वैद्यमंडल की स्वल्प संख्या—श्री पं० शिवाधारजी पां० वैद्यवर्य १, श्री पं० विष्णु-दत्त उपनाम लल्लूजी वैद्यरत्न २, श्री पंडित रामरत्न पा० डाक्टर ३, श्री पं० गजाननजी मि० भू० ४, तत्पुत्र मन्ना-लालजी पा० ५, श्री पं० बलदेवजी वै० रा० ६, श्रीवासुदेवजी अ० बी. यस. सी. ७, श्री पं० रामेश्वरजी मिश्र चिकित्सक चूड़ामणिः ८, श्री पं० शिवनंदन मिश्र वै० रा० ९, श्रीअयो-ध्यानाथ त्रि० व० १०, श्री पं० शुकदेवजी वै० शा० ११। कानपुरीय विद्वन्मण्डलस्य सम्मतिरियम्—यदद्यत्वे आर्याभासा विधवोद्वाहं धर्म्यमामनन्ति सर्वथा तच्छ्रुतिस्मृति पुराणादि सिद्धान्तानारूढ़मिति प्रतिजानीते—श्रीविश्वम्भर-नाथ शर्मा व्याकरणाचार्य विद्यारत्न १, म० ब्रह्मर्षिजी, श्री ॐकारनाथ यजु० २, श्रीझम्मोजी ज्यो० मि० कर्म० योग वि० वि० ३, श्रीविश्वम्भरनाथजी ज्यो० मं० शा० ४, तत्पुत्रः पं० गिरजाशङ्कर ५, तत्पुत्र श्री पं० बृजमोहनजी निर्मलः ६, श्री पं० हरिनंदनजी मिश्रः ज्यौ० आ० ७, श्री पं० दुर्गाचरण जी ज्यौ० आ० वि० र० विधवा विवाह समर्थकानां विजयी ८, श्री पं० भर्गदत्तजी ज्यौ० वि० ६, श्री पं० योगेश्वर झा वैया० १०, श्री पं० वि० सि० वैद्यनाथजी ११, श्री पं०

बदरीनारायण त्रि० तर्क वा० १२, श्री पं० शङ्करदयालुजी मिश्र० शा० १३, श्री पं० चन्द्रशेखरजी शा० अग्नि० १४, श्री पं० देवीप्रसादजी मिश्र० ज्यो० वै० व० कर्म० का० पौराणिकाचार्य०, १५, श्री पं० महानन्द सामवेदिनः १६, श्री पं० देवनारायण सा० वे० १७, श्री पं० विष्णुदत्त ऋगवे० १८, श्री पं० चन्द्रशेखर शा० व्या० सा० उभयोराचार्यः का० ती० १६, श्री पं० वैकुण्ठनाथ शा० व्या० सा० उभयोराचा० का० ती० २०, श्री पं० बालाजी ऋग्वे. हर्डीक० दा० २१, श्री पं० सोमेश्वर शा० हर्डीक० २२, श्री पं० रामरत्न ज्यो० क० २३, श्रीभाललोचन ज्यो० २४, श्री कन्हैयालाल व्या० शा० २५, श्री पण्डित मातृदत्त शा० २६, श्री पं० बदरीनाथ शा० ज्यो० २७, श्री पं० मन्नालाल ज्यो० २८, श्री पं० षडानन शर्मा ज्यो० आ० २६, श्री पं० रामकुमार वै० शा० ३०, श्री पं० केशवदत्त व्या० शा० ३१, श्री पं० केशवीदत्त वैद्य शा० ३२, श्री पं० सत्यदेव पा० वे० आ० आयुर्वेदाचार्यः ३३, श्री पं० रामचन्द्र वा० कर्म का० वि० ३४, श्री पं० रामचन्द्र अ० आयु० आ० धर्म शा० आ० ३५, श्री० पण्डित चन्द्रशेखर त्रिपाठी पौराणिक मन्दिर द्वारिकाधीश ३६, श्री पण्डित रामकुमार शा० अ० स० पा० ३७, श्री पं० विश्वनाथ त्रि० व्या० आ० ३८, श्री पं० सूर्यप्रसाद वा० यजु० ३६, श्री पं० शिवमङ्गल मिश्र पौ० ४०, श्री पं० ब्रजवासीजी ज्यो० ४१,

श्री पं० पुरुषोत्तमजी सा० ४२, श्री पं० रामदत्तजी शा० ४३, श्री प० गयाप्रसादजी शा० ४४, श्री पं० लक्ष्मीलाल जी शा० ४५, श्री पं० बलभद्रस्वामी पौरा० ४६, श्री पं० लक्ष्मीनारायण शु० आयु० आ० ४७, श्री पं० लोकेश्वर त्रि० ४८, श्री पं० अक्षयव श. ४९, श्री पं० सीताराम त्रि० वैया० ५०, श्री पं० परमकृष्ण व्या० ५१, श्री० पं० हीरालालजी शा० ५२, श्रीचन्द्रभाल शा० ५३, श्री पं० गंगाधर श० ५४, श्री पं० गौरीदत्त श० ५५, श्री पं० महादेव श० प्र० मा० पा० ५६, श्री पं० मणिलाल मिश्र कविः ५७, श्री पं० मन्नालाल रामा० ५८, श्री पं० राघवजी रामा० ५९, श्री पंडित गोपालजी कथाकरः ६०, श्री पं० विद्याभूषण शा० ६१, श्री पं० वैद्यनाथजी ६२, श्री पं० लक्ष्मीनारायणजी ६३, श्री पं० महावीरप्रसादजी ६४, श्री पं० भगवतीप्रसादजी ६५, श्री पं० रामभरोसे ६६, श्री पं० शुकदेव पा० ६७, श्री पं० नारायण प्र० अ० ६८, श्री पं० रामसहाय मिश्र ६९, श्री पं० श्याममनोहर गुजराती ७०, श्री पं० काशीदत्त वा० ७१, श्री पं० काशीनाथ श० ७२, श्री पंडित कालीचरण पा० ७३, श्री पं० राधारमण पा० ७४, श्री पं० विंध्येश्वरीप्रसाद ७५, श्री पं० मदन-गोपाल व्या० शा० ७६, सद्विप्रचरण सेवकः पं० माधवराम अ० व्यासः ७७ ।

स्व० श्री महोदय रामचरणजी शुक्ल के पुत्र चि० शिवकुमार रामकुमार प्रधान अध्यक्ष रामचरन सं० पा० आप दोनों भ्राता श्रीमान् शुक्लजी के पुत्र हैं। आप की माता श्रीमती साध्वी सती शुक्लाइनजी अपने प्राणपती की स्थापित अनवरगंज स० पाठशाला का सब प्रबन्ध यथा योग करती हैं परंतु प्रधानाध्यापक की असदाचारता से धर्म में बड़ी बाधायें आ रही है। यद्यपि श्रीमतीजी ने शास्त्रीजी को ऐसे अनाचार से रोक दिया है परंतु अभिमंत्रित सर्प की भांति जहर रूपी शिक्षा का वारण शिष्यों पर नहीं हो सकता है। उनके पढ़ाये शिष्य सदाचार मानते हुए भी अनाचार में दृढ़ हो गुरू का पक्ष लेकर राह चलते हुए से तकरार करने को तैयार रहते है। हमारा यह प्रयोजन नहीं कि इनकी जीविका छुड़ा दी जाय परंतु ऐसी अधर्म शिक्षा प्रचार से फायदा क्या ? धर्म में अधर्म यही कहलाता है। हमारी प्रार्थना है कि इनको शास्त्रार्थ करने की आज्ञा दीजिये, ऐसा होने से भारत के सुप्रसिद्ध विद्वानों के सामने आपका नाम, और इनके गुण की सफाई हो जायगी। क्या आज तक वेद नहीं थे या ये ही पंडित हैं और सब मूर्ख ही हैं, देखिये श्री पं० खगेश्वरजी शास्त्री अपने प्राचीन मार्ग में डटे है ऐसे पंडितों से उन्नति हो सकती है। हम तो चाहते हैं कि आपकी आज्ञा का पालन करें, चुपचाप बैठें, पर इन व्याकरणाचार्य की प्रेरणा से

कानपुरीय पत्र दो चार दोलत्ती झाड़ते ही रहते हैं फिर कहिये कैसे चुप बैठा जा सकता है, अन्त में विवश होकर इधर से भी उत्तर देना ही पड़ता है।

विधवोद्वाह निषेध में महाराजा महारानियों की सम्मति।

सज्जनो, हमने अनेक राजा महाराजा महारानियों के पास जवाबी रजिस्टर्ड पत्र भेजे थे और उनमें यह पूंछा था कि अपने यहां की पंडितमण्डली सहित इसमें अपनी सम्मति दीजिये। विधवोद्वाह समर्थनमें जिनका जवाब आवेगा तो हम विरोध में उनका नाम न देंगे शेष सब को अपने सहमत प्रकाशित करेंगे। उन सब में दो स्थानों से पत्र न लेकर वापस कर दिये गये है तथा एक जगह से यह लिख कर आया है कि हमारा नाम विरोध में न देना। दरभंगा आदि महाराजाओं की विरोध में सम्मतियां आ गई है सत्य २ सब स्टेटों के नाम प्रकाशित किये जाते है। बड़ौदा नरेश बाहर गये है।

महाराजा स्टेट।

शोत्रीयकुलभूषण महाराजाधिराज सर श्री ५ रामेश्वरसिंहजी बहादुर जी. सी. आई. ई. दरभंगानरेशजी तथा विद्वान्सः झापाह० श्री रविनाथ शर्मा व्या० चार्य० व्या०

मी० त० तीर्थः सांख्योपाध्यायः मी० शि० श्री ३ रमेश्वर लताविद्यालयस्य प्रधानाध्यापकः १, महाराजाधिराज श्री महाराजा श्री ५ प्रभुनारायणसिंहजी शर्मा काशी २। अब केवल स्टेट के नाम लिखेंगे दूसरी पुस्तक में विशेष होगा। पूर्वीय प्रान्त—श्री ५ कालाकांकर राज्य प्रतापगढ़ ३, श्री ५ विनेलीराज्य जि० पुरलिया ४, श्री ५ अमावां रा० जि० पटना ५, श्री ५ हथुवा रा० जि० छपरा ६, वर्द्धमान रा० बंगाल ७, तिलोई रा० राय० ८, कूच विहार रा० बं० ९, टिपरा रा० बंगाल १०, मनीपुर रा० आसाम ११, देवगढ़ रा० उड़ीसा १२, केवलझार रा० उड़ीसा १३, सेहड़ा रा० पटना १४, जगन्नाथपुरी रा० उड़ीसा १५। दक्षिणीय प्रान्त—छतरपुर रा० बुंदेलखंड १६, टीकमगढ़ रा० बुं० १७, दतिया रा० बुं० १८, खिलचीपुर रा० सेंट्रल इ० १९, राजगढ़ रा० सेंट्रल इ० २०, मैसूर रा० सौथ इंडिया २१, नयागांव रा० चित्रकूट बांदा २२, मैहर रा० बुंदे० २३, ट्रावनकोर रा० २४, समथल रा० सी० पी० २५, अजयगढ़ रा० सी० पी० २६, सारंगगढ़ सी० पी० २७, रतलाम रा० सेंट्रल इ० २८, चरखारी रा० बुंदे० २९, नरसिंहगढ़ सी० पी० ३०, जगदलपुर सी० पी० ३१, कोचीन मद्रास ३२, जावड़ा सें० इ० ३३, उरछा ३४, पन्ना बुंदे० ३५, अलीपुरा जि० हमीरपुर ३६, रीवां रा० ३७, ग्वालियर ३८, धौलपुर ३९, कांकेर रा० सी०

पी० ४०, इन्दौर रा० गद्दीस्थ ४१, चौबेपुर जि० बांदा ४२, रामेश्वर राजा० मद्रास ४३, रामराज्य मलाबार ४४। पश्चिमीय प्रांत—हिन्दूसूर्य महाराना उदयपूर ४५, जयपुर रा० ४६, जोधपुर रा० ४७, बीकानेर रा० ४८, जैसलमेर रा० ४९, अलवर रा० ५०, सोलन रा० शिमला ५१, नाहन रा० शिमला ५२, कपूरथला रा० पंजाब ५३, कोटा रा० राजपू० ५४, बूंदी रा० राजपू० ५५, भरतपुर रा० ५६, झींद रा० ५७, भावलपुर रा० पंजाब ५८, सिरोही रा० राजपू० ५९, झालरापाटन रा० ६०, देवास रा० राजपू० ६१, मोरभंज रा० गुजरात ६२, मंडी रा० शिमला ६३, कुल्लू रा० कांगड़ा ६४, लखना रा० महारानी ६५, पटियाला रा० पंजाब ६६, गायकवाड़ बड़ौदा ६७, जामनगर द्वारका ६८, सैलाना रा० ६९। उत्तरीय प्रान्त—श्रीमहाराजाधिराज चंद्रशमशेरजंग राना बहादुर हिज़ हाइनेस सरकार नैपाल ७०, टेहरी नरेश महाराजा नरेन्द्र शाह बहादुर टेहरी गढ़वाल ७१, तमकोही रा० जि० गोरखपुर ७२, डेरा रा० जि० सुलतानपुर ७३, महारानी कुड़वार जि० सु० ७४, मनकापुर रा० जि० गोंड़ा ७५, अयोध्या रा० ७६, मयागपुर रा० जि० बहरायच ७७, महारानी साहबा बलरामपूर जि० गोंडा ७८, महारानी मझौली जि० गोरखपुर ७९, आनरेरी मजिस्ट्रेट कलेकटर ठा० श्री

शंकरसिंहजी जि० हरदोई ८०, अमेठी रा० ८१, जौनपुर रा० ८२, गलगलहा रि० ८३, राजा श्री शंकरसहाय मौरावां ८४, राजा श्री शंभूदयाल मौरावां ८५, काश्मीर रा० श्री महाराजा हरीसिंह बहादुर ८६, महारानी साहबा सिसड़ी ८७। इतनी जगह पुस्तकें भी भेजी जांयगी जो कुछ महाराजाओं से फिर उत्तर मिलेगा वह बड़ी पुस्तक में प्रकाशित किया जायगा। पुस्तक तैयार होने पर साधारण मूल्य में सब को मिल सकेगी।

द्विजाति विधवोद्वाह निषेधे सम्मतियां।

द्विजाति बिधवोद्वाह शास्त्र सम्मत से न होना चाहिये—आनरेरी मजिस्ट्रेट कलेक्टर ठा० शङ्करसिंह स्थान काकूपुर डा० बेनीगंज जि० हरदोई, लालासिंह ब० खुद, बलवंतसिंह इत्यादि।

महारानी कुंडवार।

अकर्ता कथ्यते कर्ताऽरक्षिना रक्षिना बुधैः। अहर्ताऽपिहर्तायस्तस्मै शक्त्यात्मनेनमः।१। प्रणतयो विलसन्तुतरामथ श्रुतिमनुप्रभृतिस्मृतिवेदिनाम्। वदनफुल्लसरोरुहतः श्रुतं यदपिवृद्धमिहस्फुटया-महे॥ २॥ न विधवात्वकरादपरम्परं किमपि भूतलजं दुरितंमतम्। विगतभर्तृकथाऽवलयाततः

शुभनयोऽपनयोऽस्य समन्ततः ॥ ३ ॥ जगति मे पतिरेव जगत्पतिः सततमेव भवेदिति सम्मतिः। नियतलग्नमनस्कतयातया गतधवा कृतयाऽमलयाऽ मया ॥ ४ ॥ उपनिषच्छ्रवणाऽदियमादियत् परिनिषेव्यमहर्निशमेवतत् । अपरिमेय जनुर्जनताजगज्जनितदुष्कृतकच्चहुताशनम् ॥ ५ ॥ अपनयेद्व्रतिनायकपावकाऽऽज्यमतिदूरमवश्यमभर्तृका । तनुविमार्जनहास्यपराऽटन द्विरदनम्मरिमादकसेवनम् ॥ ६ ॥ सहमता विधवा करपीड़ने स्वसुजना न भवन्तु न चाऽस्म्यहम् । निजसतीत्वमवेमयथाबलं वयमियम्मम सम्मतिरत्र शम् ॥ ७ ॥ भुवनेश्वरी देवी,

श्रीरानी साहबा कुड़वार ।

श्री १०८ पूजनीय गुरु व्यास जी को प्रणाम। आपका कृपापत्र ठीक समय पर मिला था किंतु स्वास्थ्य खराब होने से उत्तर में विलम्ब हुआ, आशा करती हूं क्षमा करेंगे। विधवा विवाह के लिये जो आपने लेख भेजे थे उसके उत्तर में पं० भगवतीप्रसाद शा० से लिखा कर हस्ताक्षर किया। जो जो पुराण मैंने सुने है उनसे यही पता चलता है कि विधवा विवाह अनुचित है। सब बहिनों से यही प्रार्थना है कि विधवा विवाह का नाम न लें। अधिक प्रणाम।

पुत्री–भुवनेश्वरी।

लखना स्टेट ।

श्रीमान् व्यासजी !

मेरी सम्मति बिधवा विवाह के पक्ष में नहीं है, मेरी हृदय से भावना है कि बिधवा विवाह भारतीय महिलाओं के लिये सर्वथा अनुचित है, सतीत्व के द्वारा चरित्र की रक्षा करना ही स्त्रियों का परमधर्म है ।

श्रीरानी महालक्ष्मीबाई,
रानी साहबा स्टेट लखना, जिला इटावा ।

और भी असंख्य सती बिधवाओंके हस्ताक्षर व संमतियां आई हैं किन्तु स्थानाभाव से थोड़ी प्रकाश की गई हैं । हमारी सब बहनों से प्रार्थना है कि द्विजाति बिधवा स्वप्न में भी पुनर्विवाह का नाम न लें । इससे २१ पुस्त नर्क जाती हैं । वह भी नर्क भोग फिर फिर बिधवा होंगी, पुनर्विवाह से भी सुख न होगा । इससे एक जन्म दुख से पार कर दें, परलोक में अपने पति और २१ पुस्तोंको तार कर परमेश्वर से मिलें । हमारा नम्रनिवेदन है कि सधवा पति के ब्रह्मचर्य छोड़ने पर उसको उपकुर्वाणक ब्रह्मचर्य का अंग स्त्री रक्खें यानी जूता न पहनें, स्त्रियों को जूता वैसे भी नहीं पहनना चाहिये, जूता पहन कर मुफ्त में गोहत्या पाप क्यों लेती हो ? श्रीसीताजी १४ वर्ष तक बन में कांटे कंकड़ों में बिना जूतेही रहीं । पैर का आभूषण बिछुआ आदि पहनो । ऐसे ही गौ कम रह गई है तुम सब इस हत्या में हिस्सा मत लेओ । कन्या और बिधवा

तो नैष्ठिक ब्रह्मचारिणी हैं इनको स्वप्न में भी जूता पहनना और विषय वार्ता का जिकर तक नहीं करना चाहिये।

आपकी सत्सुखेच्छु-

सहित रामसभा सेठानी जानकी बाई।

श्रीलल्लू जगधर तवारीख।

शाह अकबर के जमाने में जङ्ग यूसुफ़ में जो कि अफ़गानिस्तान में हुई कई पलटनें खत्रियों की बमातहती राजा बीरबलसिंह बायस शिद्दत बर्फ़ काम आईं। अकबर ने बखिलाफ रस्म आर्यों के शादी बेवगान का जब्रिया हुक्म सादिर फरमाया—सब खत्री बिगड़ कर बसरआवरी लल्लू व जगधर ऐसा मुकाबला किया कि हुक्म वापिस लेना पड़ा।

बरेली खत्री कानफ्रेंस में निर्णय हुआ कि विधवा विवाह न होना चाहिये शास्त्र विरुद्ध है।

द० रामगोपाल खत्री सेठ कानपूर २८। ४ २८।

मध्य भारत के अग्रवालों की स्पष्ट घोषणा।

विधवा विवाह करने और कराने वाले जाति वहिष्कृत।

गूना सम्मेलन की नीति।

समस्त भारतीय अग्रवाल समाज की जानकारी के लिये यह प्रगट कर देना जरूरी समझते हैं कि हमारा मध्य भार-

तीय अग्रवाल समाज विधवा विवाह का घोर विरोधी है तथा हमारे समस्त मध्यभारत की यह नीति है कि विधवा विवाह करने कराने वालों से किसी प्रकार का जातीय संबंध न रक्खा जाय। हस्ताक्षर—सेठ शिवचन्द्जी बैराठी मु॰ ब्यावरा सभापति चतुर्थ मारवाड़ी सम्मेलन गूना १, सेठ छोगालालजी चौधरी सभापति स्वागतकारिणी समिति चतुर्थ अग्रवाल संमेलन गूना २, सेठ भवानीराम चंद्रभान व गेंदालाल उपसभापति स्वागतकारिणी समिति चतुर्थ अधिवेशन गूना ३, सेठ चिरंजीलालजी बराठिया मंत्री स्वागतकारिणी समिति चतुर्थ अधिवेशन गूना ४, चौधरी सुन्नालालजी सभापति अग्रवाल सभा शिवपुरी ५, चौधरी गुलाबचन्द्जी उपसभापति अग्रवाल समिति अ. सभा सिप्री ६, चौधरी सेठ कालूरामजी मंत्री अग्र. सभा सिप्री ७, लाला मनोहरीलालजी सभापति अग्रवाल सभा लश्कर ८, चौधरी सूरजमलजी ईसागढ़ (सेंट्रल इंडिया) ९, सेठ फूलचन्द्जी इंदौर—— ग़ज़ल।

अग्रवंशी अग्रकुल के हानिकारक बन गये। स्वार्थी कुछ लोग पापों के प्रचारक बन गये ॥१॥ जातिमें जिनकी न कुछ इज्जत न कुछ परतीत है। वे धरम के नाशकारक अब सुधारक बन गये ॥२॥ थे न अब तक कर सके जो जातिहित साधन कभी। आज विधवा ब्याह के चौड़े प्रचारक बन गये ॥३॥ यों तो दिखलाते हैं हिन्दू संगठनकर्ता है हम। जाति के अपने

ही वे संहारकारक बन गये ॥ ४ ॥ इनको क्या व्यभिचार फैले धर्म सत्यानाश हो । किंतु ये ले स्वार्थ का झंडा सुधारक बन गये ॥५॥ मिलगये हैं कुछ हिमायत करने वाले बिरले ही । कुलकुदारक बन गये औ दल प्रचारक बन गये ॥ ६ ॥

बिधवाओं का रोदन ।

रो रो के बिधवा ये कह रही है हमें सुधारक डुबा रहे हैं।
हमारी दृढ़ता को तोड़ कर ये नरक का मारग बता रहे हैं ॥
हज़ारों वर्षों से हम सनातन–धरम की सीमा में रह रही हैं।
ये उससे हमको गिरा के नीचे अधर्म का रस चखा रहे है ॥
जो धर्म अपना डिगा चुके है जो कर्म खोटे कमा चुके हैं।
निदान ऐसे पुरुष से फिर ये हमार नाता लगा रहे हैं ॥

मोतीलाल बजाज ।

कानपुर की द्विजाति मात्र के बिधवा विवाह विरोध में बहुत हस्ताक्षर हो चुके हैं हम सबके नाम प्रकाशित करने में असमर्थ हैं । सब से प्रथम धन्यवाद है कानपुर की मारवाड़ी जाति को, जिसने पुनर्विवाह ऐसी महा अधर्म प्रथा में भरती होने वाले को जाति बाहर कर दिया, अभी तक हैं और हमेशा ही जाति बाहर रहना पड़ेगा । 'वर्तमान' ऐसे सफेद झूंठ लेखक पत्र ने एक बार झूँठी अफवाह उड़ादी कि वह तो जाति में मिल गये । उसी समय एक मारवाड़ी युवक नामक नोटिस ने लेखक महोदय का मुखमर्दन किया,

अंत में उन्हें छापना पड़ा कि अभी जाति बाहर हैं। क्या ऐसे पत्र पर किसी की श्रद्धा रह सकती है। संस्कृतअक्षरशून्य होकर आप धर्मव्यवस्था तथा मंत्र लेखों की मीमांसा करते हैं। जनता समझ लेगी जब आप कुछ ऊटपटांग लिखेंगे।

श्रीमान् सेठ श्रीसादीरामजी फर्म गंगाप्रसाद सादीरामजी—आपने लिखाया है कि हमारी कानपुर की समस्त मारवाड़ी जाति में यदि कोई पुनर्विवाह असवर्ण विवाह तथा नीचसहभोज्यता करेगा वह जाति में संमिलित न होगा। ऐसो ही असंख्य मारवाड़ी भाइयों की संमतियां हस्ताक्षर सहित हैं।

अग्रवाल बीशा व दशा में यही शर्त है।

बाबू रामरत्न बाबू श्रीकृष्ण गुप्त आदि की भी यही संमति है।

माहेश्वरी–नागौड़ी देशी सब भाइयों की यही राय है। जाति बाहर किया भी है।

नागौड़ी ला० उदयरामजी कृष्णगोपालजी की तीनों बातों में राय है। लाला बालकृष्ण जी की भी यही सम्मति है। लाला चुन्नीलालजी तथा लाला गनेशनारायणजी आदि की भी यही राय है।

समस्त ओमर वैश्यों की यह राय है कि अगर कोई विधवा विवाह का नाम तक भी लेवे तो उसको अलग करदें।

दोसर वैश्य लाला लालचंद्र आदि की यही राय है।

रोहतगी में हाल ही में जाति सुधारक नियम बनाये गये थे, डाक्टर मुरारीलाल बिधवा विवाह सपोर्टर बिधवा विवाह प्रचारक तथा लेखक होते हुए भी जाति में मौन रहे चूं नहीं किया दूसरों ही को खंदक में डालने को तैयार हैं।

गहोई वैश्योंमें लाला रामदयालादिकी यही राय है।

कसौंदन वैश्यों में सूरजदीन आदि की बड़ी जोरदार राय है कि ऐसा करने वाला पहले जनेऊ उतार कर धर दे, अपने को वैश्य न कहे, फिर करे।

कायस्थों में भी बाबू मुन्नालालजी व बाबू ठाकुर-प्रसाद आदि वकीलों की यही राय है। साथ ही बाल-विवाह वृद्ध-विवाह भी रोकना चाहिये।

हम सब जाति भाइयों तथा सब जनता के नाम प्रका-शित नहीं कर सकते हैं २२ करोड़ हिन्दू मात्र सभी बिधवा विवाह को खराब निगाह से देखते है। परंतु शूद्रों में शास्त्र की आज्ञा है इससे करते हैं। द्विजाति ब्राह्मण क्षत्री खत्री वैश्यों में स्वप्न में भी न होना चाहिये। प्रथम जनेऊ उतार द्विजाति नाम पलट दें तब जबान से कुछ कहें इससे सब द्विजाति के सब भाइयों से जिनके यहाँ यह नीच अधर्म काम नहीं होता है किसी जाति में अगर कोई करे करावे उसको इसी तरह जाति बाहर कर देवें बार २ निवेदन है।

इति श्री नामावली समाप्ता।

ब्रह्मावर्त प्रान्तान्तर्गत साढ़ ग्राम निवासी
श्री पं० जवाहरलाल अ० के प्रपौत्र श्री पं० रामचरण अ०
के पौत्र तथा श्री पं० कामताप्रसाद जी अ० के पुत्र
ग्रन्थ रचयिता

श्री प० माधवराम अवस्थी 'व्यास'



संस्कृत श्लोक भाषा काव्य सहित वेदांत धर्म शास्त्र तथा
श्रीमद्भागवत व गीता आदि अनेक ग्रन्थ भाषा सरस
काव्य में प्रेमी सज्जनों के लिये निर्माण किये हैं ।



* श्रीहरिर्जयति *

* प्रस्ताव तथा भूमिका *

प्रिय सज्जन पाठकवृन्द तथा सती सुशीलाओं से सविनय निवेदन है कि आप इसको चित्त लगा कर पढ़ें और हृदय पर हाथ धर सच्चे बन परमात्मा से विनय करें, आपके हृदय में परमात्मा शुद्ध प्रेरणा कर उत्तर देकर आप को सतुष्ट कर देंगे। यह बात ता और ही है कि वेद शास्त्र नीति पुराण कोई कुछ कहे हम नहीं मानते हठात् ऐसा ही कहेंगे और करेंगे उन पुरुषों मे हमारा कोई कथन नहीं जो इच्छा हो कहो और करो, परन्तु ईश्वर साक्षी कर सत्य हृदय से जो कुछ जॅचता है आपकी सेवा में अर्पण करते हैं जिनके प्रतिकूल हो वह क्षमा प्रदान करें।

देखिये विधवा विवाह तो संसार में मनुष्य मात्र ही की दृष्टि से बुरा माना गया है, क्योंकि कुमारी कन्या मनुष्य मात्र की जिसका पति से ब्याह हुआ हो उसकी समता से ब्याही गई विधवा स्त्री बहुत नीची निगाह से देखी जाती है। यदि कन्या की समता में विधवा विवाह होता तो अंग्रेज मुसलमान आदि अन्य जातियों में भी मुताह आदि रीति भांति शर्त में भेद न होता। अंग्रेजों में भी हिबानामा हुए है कि हमारी मेम साहेबा जो दूसरा ब्याह करें तो हमारी रियासत न

पावें। मुसलमानों में भी कुमारी के विवाह से विधवा विवाह में बहुत अन्तर है, हां यह अवश्य है कि और जातियों में विधवावों पर दया करके उनके संसारसुख और अपनी सृष्टि बढ़ने के निमित्त विधवा विवाह धूमधाम से प्रवाह रूप में चल रहा है। अब रही हिन्दू जाति, तहां पर शूद्र और अंत्यजों के लिये पुनर्विवाह का प्रमाण शास्त्र पुराणों को पाकर मुनियों तथा राजाओं ने अपने चौथे वर्ण तथा वर्णसकरों में भी विधवा विवाह प्रचलित कर दिया था। किन्तु त्रिवर्ण में धर्मानुसार धर्मरक्षा, सच्ची उन्नति, परलोक प्राप्ति, जीवनमुक्ति, परमगति, इत्यादि अनेक कारणों से त्रिवर्ण द्विजाति (ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जाति) में विधवा विवाह की प्रथा नहीं चलाई, तहाँ भी क्षत्रियों में पालन करने वाले समझ, उनका बंश डूबने देख कर, कलियुग को छोड़ अन्य युगों में देव मुनियों ने बंश चलाने की आज्ञा दे दी है। कलियुग में योंहीं व्यभिचार जोर शोर से उमड़ रहा है यदि कहीं आज्ञा पा जांय तो फिर क्या कहना। परन्तु कुछ दिनों से कुछ पुरुषों ने विधवाओं पर दयादृष्टि कर उनकी व्यथा दूर करने को, और किसी ने हिन्दुओं की संख्या बढ़ाने को, किसी ने नेतापद की प्रतिष्ठा पाने को, किसी ने बड़े विद्वान कहाने की इच्छा इत्यादि से, समाजी भाइयों की कोई नहीं सुनता है इससे कट्टर सनातनी तथा सच्चे सनातनी के नाम से चिल्लाते हुए अखबार तथा पुस्तकों में

युक्तियुक्त चातुर्यता, विद्याकला, काट छांट दिखला रहे हैं। यहाँ तक कि विद्या में सागर होते हुए भी विधवा विवाह की ही लहरों से मित्रों के हृदय को तर करते है, सेवक बन यही सेवा करने को कमर कसे हैं और यही गीता गाते है। कोई विधवा विवाह की ही मुहूर्त निश्चय करते हैं। वाह वाह उपकारी वीरो! आपकी उदारता अपार है। हिन्दू मात्र विचार करें कि हिन्दुस्तान में २२ करोड़ हिन्दू हैं तिसमें १६ करोड़ में तो विधवा विवाह शास्त्र से प्रचलित है, रहे अंदाज से तीन करोड़ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य। जिन १९ करोड़ में विधवा विवाह प्रचलित है उनमें जांच करके देख लीजिये कि कुमारी व्याह से विधवा के व्याह को विवाह नहीं धरौआ आदि नाम से पुकारते हैं और कुमारी व्याह से उसको नीचा समझते हैं यह भले ही हो कि चलन होने से उनके व्यौहार में भेद भाव न हो परन्तु इस प्रकार के विवाह को तुच्छ दृष्टि से देखते हैं। रक्त वीर्य की यथार्थ रक्षा के हेतु, परलोक सुधार, शीघ्र मुक्ति के हेतु, और संसार भर के सब देशों से भारतवर्ष का एक अपूर्व लाजवाब दृश्य बनाने के लिये, मुनियों तथा राजाओं ने त्रिवर्ण में ईश्वर वेद भगवान् की आज्ञा पुनर्विवाह की नही पाकर शास्त्र पुराणों में भी विधवा विवाह की आज्ञा नही दी है जहां कहीं कुछ पुत्रभेदादि दिखाये है वह निंद्यरूप तथा कामुक व्यभिचार रूप में कहा

है। परन्तु आजकल कोई कोई सज्जन केवल तीन कोटि ही अपनी संख्या देख अपनी सब से ज्यादा संख्या बढ़ाने की इच्छा से और भारत को सातो विलायत से व्यभिचार में बढ़ कर होने को कर्मभूमि पर ऊपर से ढकेल और नीचे से खींचा खींच मचाय है! वेद शास्त्र पुराण वाक्यों के अर्थ का अनर्थ कर, उसही को सच्चा अर्थ कह, पुस्तक लेख प्रगट कर, सच्चे हृदयवाली त्रिवर्ण ब्राह्मण क्षत्री वैश्य स्त्री पुरुष जनता-मंडल को भ्रमित करते हैं। सब सज्जनों के सामने ऋषियों के अर्थ की काट छांट की पोल दिखला कर, ईश्वर साक्षो देकर सच्च हृदय से सत्य २ अर्थ लिख कर उपस्थित करते हैं। हमारी प्रार्थना है दोनों लेख पढ़े, दिल में हाथ धरें, देखें सत्य परमात्मा क्या कहता है। परन्तु जैसे स्वाती का जल सीप में मोती, केला में कपूर, सर्पमुख में विष बनता है ठीक इसी प्रकार ऋषिवाक्यों की भी वही दशा होवेगी। आप मानें या न मानें पर अन्तरात्मा तो मान ही जायगा।

पहले तो विधवा विवाह—वि-धवा विवाह, नहीं पति रहा जिसका अर्थात् ब्याह हो कर पति मर गया वह विधवा होती है। इधर तो विधवा, उधर विवाह, यह कैसा? जब प्रमाण से कन्यादान तथा विधवा विवाह में मंत्र कन्या विवाह सिद्ध करते है और कन्यापन भी कहते हैं तो कन्या विवाह क्यों नहीं कहते? क्या कहना विधवा भी और विवाह भी। हां

एक अर्थ की संभावना अवश्य हो सकती है—वि=विशेष, धव=पति वाली, बहुत पतिवाली या जो कुछ कह लो। आश्चर्य तो यह है कि आज विधवा के विवाह की परताल है। मसल है पूतन धोखैं होती हैं भतारन नहीं। आज भतारन धोखैं हो रहीं है। यह संग का असर है। जिन देशों में इसकी प्रथा है संग के असर से अपना रूप भूल कर उसी रूप में जीव आनन्द मानता है परंतु खद्दर और पुराने कायदों की भांति कुछ ही समय में इसे भी ठीक मानने लगेंगे।

इससे पाठकगण विद्यादि से क्या, देखिये रावण अद्वितीय विद्वान होकर त्रैलोक्य विजय करते हुए भी प्रशंसापात्र नहीं हुआ। यों तो अपने मुँह मिट्ठू सब बनते हैं। सब कुछ होते हुए भी ईश्वर ने धर्म सुधार करने पर उसको दंड ही दिया और विद्यादि होते हुए भी सदाचारहीन बेन को मुनियों ने दंड दिया, ऐसा ही होता रहा है। हां, अब समय के कारण राजा धर्म पर हाथ नहीं डालता, मनमानी कहो और करो। पुराने जन ओल्ड फूल कहे जाते हैं। राज्यविद्या पढ़ कुछ मनुष्य धर्मनेता की पदवी लेते हैं, धर्म में कानूनी अक्ल की तौल लगी है यह नहीं कि यह धर्म भी ईश्वरी कानून है, क्या इसको तोड़ कर कोई सुखी हो सकता है, कदापि नहीं।

निवेदक—

माधवराम अवस्थी 'व्यास'।

श्रीगणेशाय नमः ।

मर्यादापुरुषं रामं सीतां सद्धर्मधारिणीम् ।
भरतं लक्ष्मणं वंदे रिपुसूदनसंयुतम् ॥ १ ॥
अधर्मकर्तृंश्चाधर्मनाशनं दम्भभंजनम् ।
महावीरं हनूमंतं वंदे धर्मप्रचारकम् ॥ २ ॥

दो०—मर्यादाधर राम प्रभु, सतव्रतपालनि सीय ।
वंदौं लक्ष्मण भरतपद, अनुजसहित कमनीय ॥ १
बढ़े अधर्म अधर्मधर, नाशहु दंभ विकार ।
वंदौं हनुमत बीरबर, होय सुधर्म प्रचार ॥ २ ॥

॥ धर्मादर्थश्च कामश्च धर्मादेवगतिर्नृणाम् ॥

कवित्त—हिन्दू मात्र चेति जाव तिनमें द्विजाति सव, करिकै अधर्म सुख संपति न लावोगे । धर्म औ अधर्म भलो भाँति छान बीन करो, सत्यधर्म पालि धन संतति बढ़ावोगे ॥ धर्म नहि जानैं जो उन्नति दिवाने लोग, भोग में भुलाने धर्म डिमडिमी बजावोगे । करिकै देखाव ढोंग प्रीति के बहाने यार, भाखै सत्य सपने स्वराज्य नाहि पावोगे ॥ १ ॥

ह्वैकै ऋषिवंश रिस धारि ऋषिवंशिन पै, ऐसे कटु बैन बान धर्म पै चलावोगे । धर्म का निर्णय होय सांचा सदाचार किये, कोरी काट छांट से न पूज्यपद पावोगे ॥ काशी काशमीर देश देश माहि विद्वज्जन, परिहै जब काम

ओस कन से बिलावोगे। करिकै देखाव ढोंग प्रीति के बहाने यार, भाखैं सत्य सपने स्वराज्य नाहिं पावोगे ॥२॥

दया लै अछूतन पै प्रेम करो भीतर से, तन धन से मदद किये सौगुन सुख लावोगे। उन्नति औ प्रेम के बहाने मिलि बेटी हरि, भाई बनावत क्या रोटी छीन खावोगे॥ उनको तो आप निज रोटी बेटी दोगे नाहिं, पूज्यपद पाय घर घाट हू से जावोगे। करिकै देखाव ढोंग प्रीति के बहाने यार, भाखै सत्य सपने स्वराज्य नाहि पावोगे ॥३॥

जौन हैं अछूत सांचे अपने बाप माइन के, भाइन के प्रेमी तहां पार नही पावोगे। उपनैन परिनैन दोही संस्कार बड़े, दोनों को उड़ाय अब उन्नति कमावोगे॥ भंगिन पैन्हाय डोरा रांडन मिलाय सांड़, भांड़ बनि तारी पीटि गारिहु सुनावोगे। करिके देखाव ढोंग प्रीति के बहाने यार, भाखैं सत्य सपने स्वराज्य नाहिं पावोगे ॥४॥

कहहु शैतान सोऊ सोहत तुम्हारे मुख, ठेकेदार कहौ तो उदारता दिखावोगे। सोवै सनातनी नींद घर्राटे भरैं, जागैं तौ जगत माहिं ठौर नाहिं पावोगे॥ आलस भरे पंडित मंजूर दक्षिणा के पूर, मत्सर भरे दिलमें टूक धन दै भिड़ावोगे। करिकै देखाव ढोंग उन्नति बहाने यार, भाखैं० ॥५॥

सांची शुद्ध जी की जौन सधवा या विधवा हैं, पटकौ

स्वशीश तहां पत्तो ना हिलावोगे। भोली हैं अजान भरी मनमें विकार जौन, तिन्हैं फुसलाय भले कुलटा बनावोगे॥ छोड़ैं नाहिं सती सत धारैं व्रत हिये माहिं, पूँछो तो जाय नेक थप्पड़ मुंह खावोगे। करिकै देखाव ढोंग उन्नति बहाने यार, भाखैं सत्य सपने स्वराज्य नाहि पावोगे॥ ६॥

विप्र छत्री खत्री वैश्य जौन साँचे चित्त वाले, तिनपै चलाय जिक्र काला मुं करावोगे। आला कानून बोलि शीन क़ाफ़ मगर चूंकि, वेद शास्त्र निर्णय कोरे कोरे यों दिखावोगे॥ ताली बजवाय तहां हाथ उठवाय दोऊ, भारे के बोलाय पूज्य पास फेल लावोगे। करिकै देखाव ढोंग उन्नति बहाने यार, भाखैं सत्य सपने स्वराज्य नाहि० ॥७॥

वर्तमान माहि टका खर्चि टकटका लाय, पढ़ि २ गाली फाग मन हरषावोगे। बने हौ सनातनी न शान छुइ गई नेक, हॉय दो मुताह खूब जाफ़त उड़ावोगे॥ सिगे पै हमारे मस्त रामगुन गाय रहे, अंत में आफत पूर सबही उठावोगे। करिकै देखाव ढोंग उन्नति बहाने यार० ॥८॥

सवैया—नहि होय स्वराज्य अधर्म गहे, नहिं होयगो रांड़न सांड़ मिलाये। मिलि भंगिन खाये न होय सुराज, वृथा बकि गारिन गाल बजाये॥ बहु दुःख अपार मिलै सबको, गमखाव फलै फल धीरज लाये। जस खद्दर धारब धारि लियो, ये निखद्दर त्याग हिये नहि लाये॥

उन्नति और अवनति ।

उपायं चिंतयेत् प्राज्ञो तथापायं च चिन्तयेत् ।
पश्यतो बक मूर्खस्य नकुलेन हताः बकाः ॥

फायदा नुकसान दोनों सोचना बुद्धिमान मनुष्य का काम है केवल फायदा सोचने वाले मूर्ख बगले के समान अपना सर्वनाश करते है । बगले की कथा इस प्रकार है—एक वृक्ष पर बहुत से बगले रहते थे, दिन में सब बाहर चरने जाते, केवल एक अंधा बगला बच्चों की रक्षा करता रहता था । उस वृक्ष के नीचे एक सर्प रहता था, एक दिन बच्चों का शब्द सुन वह सर्प वृक्ष पर चढ़ एक बच्चे को पकड़ लाया । इस बात को सब बगलों ने जाँच कर सर्प के मारने के लिये न्योले का बिल ढूंढा और छोटी २ मछलियाँ ला न्योले के बिल से सर्प के बिल तक थोडी थोड़ी दूर पर डाल दीं । न्योले ने मछलियों के सहारे जा कर सर्प को मार दिया । परन्तु वह परक गया, बार बार आने लगा । अन्त में वृक्ष पर चढ़ धीरे धीरे बगलों के सब बच्चों तथा रात में बगलों को मार डाला । केवल उन्नति पर दिवाने, धर्म पर धूल डालने वालों की ठीक यही दशा होगी जो निर्बुद्धि बगलों की हुई ।

उन्नति और स्वराज्य प्राप्ति में दो कारण।

(१) मेल।

इस बात पर अच्छी प्रकार विचार कीजिये कि दिली मेल सब से बढ़ कर होता है। ऊपर से खान पान तथा व्यवहार में विरोध होने पर भी दिली मेल होने से औरों के सन्मुख ठीक सामना कर सकते है। मनुष्य की तो क्या—देखो बानर अज्ञानी होकर एक २ दानेपर लड़ते है परन्तु यदि कोई उन्हें छेड़ दे तो सब मिलकर छेड़ने वाले के चिपक जाते है, उसको जान बचाना मुशकिल हो जाता है। जिनमें खान पान एक है जैसे अंग्रेज, वहां जरमन युद्ध का प्रत्यक्ष उदाहरण देख लीजिये। मुसलमानों में शिया सुन्नी संग्राम, अछूतों में भी मारामार, आदि प्रत्यक्ष बातों के देखते हुए क्या आप भंगियों के साथ खाकर दिली मेल कर लेंगे? पहले उनके संग खाने से घर ही मे फूट फैल कर तितर बितर होते हो छब्बे के दुब्बे होजाते हो। इसमे अछूतों से सच्चा दिली प्रेम करो—उनको रोग में दवा से, भूख में अन्न से, दुःख में मदद कर अपनपौ दिखलाओ, जरूरत पड़ने पर छू कर जिस प्रकार अपने किसी २ अंग को छू कर निर्वाह करते हो ठीक वैसाही व्यवहार करो। मेल दिल का ये मिठाई से जबर और नहीं। खाके संग भंगियों के यहाँ वहाँ ठौर नहीं॥

(२) संख्या।

मृगराज सिंह अकेला बनके सब जीवों पर शासन करता है। बहुत थोड़ी संख्या में मनुष्य बहुत बड़ी संख्या के ऊपर शासन करते हैं इससे संख्या की आधिक्यता उन्नति और स्वराज्य में कारण नहीं, केवल आत्मिक बल ही मुख्य कारण है, वह आत्मिक बल इन्द्रियों की चंचलता तथा व्यभिचार से नहीं बढ़ता। गीता में लिखा है—"तस्मात्व-मिंद्रियाण्यादौ निषम्य भरतर्षभ"। श्रीकृष्णजी अर्जुन से कहते हैं कि हे अर्जुन जो लोक में जय और स्वराज्य और परलोक में स्वराज्य आत्मराज मुक्ति चाहते हो तो तुम पहले अपनी इन्द्री वश करो। ठीक है इन्द्रियों के विषय न बढ़ने से शरीर में बल बढ़ेगा। वैद्यक में लिखा है कि शरीर का जीवन वीर्य है वह अधिक विषय से क्षीण होता है, उससे कमजोरी रोग पैदा होता है वीर्य और रज कमजोर होने से पुत्र कन्या कमज़ोर और लघु शरीर वाले पैदा होते हैं। जैसे पहले अधिक विषय होने से पुरुष स्त्री का वीर्य रज जो महीनों में बन कर तैयार होता है थोड़ा होने से माता के गर्भ में बच्चे के देह की छोटी कमजोर नींव पड़ती है पीछे रोजीना स्त्री-संग से बच्चे की देह बनने में माता का रज नहीं पहुंचने पाता, विषय से बाहर निकल जाता है, इसी कारण बच्चे पिल्ले मूसे तुल्य पैदा होते हैं। ऐसी सन्तान

न बुद्धिमान हो सकती है न बलवान। इससे इन्द्रीजित होने से ही स्वराज्य उन्नति हो सक्ती है। इन्द्रीजित बिना कोई बंधन हो नहीं सकता। इसमें सब से बढ़ कर मजबूत बंधन धर्म है। देखो एक लड़की बड़ी और उसका भाई भी सयाना है विषय का भाव दोनों में आ गया है परन्तु उनमें एक बंधन है, भाई समझता है कि यह हमारी बहिन है और बहिन समझती है कि यह हमारा भाई है इसी संयम से वे दोनों एक घर में रहते है, एक संग खाते पीते सोते बैठते हुए भी विषय से बच कर आत्मिक और शारीरिक शक्ति बढ़ाते है। ठीक इसी भाँति सासु देवर जेठ आदि में भी ऐसाही धर्म बंधन दृढ़ है इससे दोनों सिद्ध होकर सुख सम्पत्ति मिलते है। वेद शास्त्र इतिहास पुराण धर्मबंधन के डोर है, तदनुसार व्यवहार होता है, यदि उनको कुतर्क रूपी कतरनी लगा कर कतर डालेंगे तो वह धर्मबधन छुट जायगा और स्त्री पुरुष दोनों मनमानी करके इस लोक में शरीर तथा सुख संतान से हीन होकर परलोक व परमात्मा के विमुख हो दुर्गति भोगेंगे।

कुतर्क की कतरनी।

वेद धर्मशास्त्र इतिहास पुराणों के मंत्र श्लोकों के अर्थ तथा भाव प्रसंग को न समझ अपनी युक्ति से काट छांट कर अथ का अनर्थ कर उसको सच्चा धर्म कहना, गाली,

वाली, शैतान, ठेकेदार इत्यादि अनेक दुर्बचन प्रहार कर अपना पक्ष पोषण करना कतरनी की एक फाल है। पुरुषों को यह कह कर भड़काना कि विषय भोगने में कोई दोष नहीं है, स्त्री पुरुष का शरीर इसी हेत बना है। स्त्रियों से कहना कि तुम बच्चे पैदा करने की मशीन (पेंच) हो कोई भी चलावे इन पोपों (पंडितों) की एक न मानो। ऐसे सैकड़ों अखबारों उपन्यासों पुस्तकों व्याख्यानों में कुशिक्षा सुना कर स्त्री पुरुषों का धर्मबंधन तोड़ उनमें विषयभोग की रुचि उत्पन्न करते है और जब वह कमजोर दिल वाले छिप २ विषय भोगने लगे, प्रगट होने पर लोकप्रथा के विरुद्ध होने से छोड़ा छोड़ी की ठहर गई तब ठेकेदारों को धमकी दिखाना कहाँ की न्यायप्रियता है ? धन्य है उद्धारक महाशयो, यदि रांड़ को सॉंड़ मिलाने के बजाय उन अखबार लेखकों से निरोध का प्रचार करते तो ऐसी दशा ही क्यों उपस्थित होती ! पुराणों में ऐसे काम करने वालों की निंदा है परन्तु इसके प्रतिकूल आप ऐसा काम करने वालों की पीठ पर हाथ फेर उन्हें साबाशी और बहादुरी देते हैं तो क्या जनता इतना भी नहीं समझती कि इस उपद्रव का मूल कारण आप ही है। अधर्म करें आप बदनाम करें दूसरों को। यह सब चालें कतरनी की दूसरी फाल है।

जब इस प्रकार की कुशिक्षाओं से धर्म का दृढ़बंधन कट गया तो फिर क्या कहना—इन्द्रियां स्वतंत्र हो गईं, मज़ा

उड़ने लगा, पति का प्रेम भाड़ में गया। धर्मशास्त्र जिन विधवों को शिक्षा देता है कि पतिवियोग में मृतपति को स्मरण कर पतिवियोगिनी विधवायें दृढ़ ब्रह्मचारिणी हो शरीर त्यागें और पति वियोग के कर्म को प्रातिव्रत से पूरा कर शरीर छोड़ पति का उद्धार करें--

श्लोक-व्यालग्राही यथा सर्पं बिलादुद्धरते बलात्।
एवं स्त्रीपतिमुद्धृत्य तेनैव सह मोदते॥

जिस तरह सर्प पकड़नेवाला मंत्रबल से सर्प को बिल से निकाल कर अपने वश में कर लेता है ऐसे ही पतिव्रता स्त्री अपने पातिव्रत धर्म दृढ़ ब्रह्मचर्य से अपने मृतक पति का उद्धार कर परलोक मे अपने पति के संग सुख भोगती है।

देखिये किसी कारण से स्त्री को पति वियोग दुःख हुआ हो और यदि सुधारकों की दयादृष्टि से वह दूसरा पति करै तो उस स्त्री के वे शत्रु हैं विधवा के पतिकुल पितुकुल मातृ-कुल दस दस दस ३० पुस्तों को और उस विधवा को जो दूसरा पति करती है नरक भेजते हैं। पितुश्च भर्तुश्च नयत्य धस्तमः।

शर्याति ने अपनी बेटी सुकन्या का विवाह वयोवृद्ध जर्जर शरीर च्यवन ऋषि के साथ संकट में पड़ कर दिया था। एक बार शर्याति अपनी कन्याको देखने के लिये च्यवन ऋषि के

आश्रम पर गये। पुत्री ने पिता को प्रणाम किया। उस समय वहां पर महा तेजस्वी युवा पुरुष को देख कर शर्याति के चित्त में सन्देह पैदा हुआ और क्रोध में आकर बोले कि पुत्री तूने बड़ा अनर्थ किया, यह दूसरा पति करके पितुकुल तथा पतिकुल दोनों को नरक भेज दिया! तब सुकन्या विनम्र भाव से प्रार्थना करके उत्तर देती है कि हे पिताजी "तवैष भृगुनन्दनः" यह देदीप्यमान शरीर वाले वही बूढ़े भृगुनन्दन च्यवन ऋषि है जिनके साथ आप ने हमारा व्याह किया था। इसमें सन्देह न कीजिये। अश्विनीकुमार जी ने मेरा पातिव्रत धर्म देख मुझ पर दया करके इन्हें जवान कर दिया है।

सुधारक विधवा विवाह के हामी इधर दृष्टिपात करें कि पातिव्रत धर्म का कितना माहात्म्य है। उन्हें स्मरण रखना चाहिये कि आत्मिक उन्नति पातिव्रत धर्म से ही हो सकती है, विधवा विवाह से नहीं। सुधारकों से प्रार्थना है कि यदि आत्मिकबल, शारीरिकबल, स्वराज्य और उन्नति चाहते हैं, यदि आप विधवाओं का कम होना और भारत की शान रख कर पतिव्रताओं की लाज बचाना चाहते हैं तो उन्हें धर्मशिक्षा दीजिये, अधार्मिक विधवा विवाह रोकिये, पुरुषों में बन्धन प्रचार कीजिये इसी से देश का कल्याण हो सकेगा वेद मंत्रों के अर्थ का अनर्थ करके भोली भाली जनता को भुलावे में न डालिये, सत्य का अवलम्ब लीजिये।

निर्णय।

सृष्टि के आरंभ से लेकर जितने ऋषि मुनि हुए हैं किसी ने भी विधवा विवाह को धर्म नहीं माना, सभी लोग इसको पाप मानते आये। भारतवर्ष मे पाश्चात्य शिक्षा के प्रभाव से विचलित होकर ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, जीवानन्द, नानकचन्द, गंगाप्रसाद उपाध्याय, बद्रीदत्त ज्योषी, डा० मुरारीलाल, पं० रामसेवक शास्त्री, प्रभृति पुरुषों ने विधवा विवाह होने का उद्योग उठाया। उपरोक्त सज्जनों में से पं० रामसेवक शास्त्री को छोड़ कर सभी पाश्चात्य विद्या के विद्वान थे, इन्होंने इस प्रकार से विधवा विवाह का मण्डन लिखा कि मानो ये विधवा विवाह के ठेकेदार ही हों। वेद और शास्त्रों के गले घोट कर बलात्कार उनसे विधवा विवाह की शाक्षी दिलाई। इन सब में पं० रामसेवक शास्त्री जी ने जान बूझ कर वेदों और शास्त्रों के अर्थ में घोर अनर्थ किया, जो मनुष्य को कभी करना नहीं चाहिये। एक ब्राह्मणकुल में उत्पन्न हुये मनुष्य के लिये यह अन्याय, लज्जाजनक तथा निन्दनीय है। यदि धर्म सच्चा है तो ऐसे अन्याय के करने से नर्क प्राप्ति के सिवाय कोई लाभ नहीं।

प्रचार।

शास्त्रज्ञान शून्य आज, चाँद, वर्तमान, तरुण, प्रभृति समाचारपत्र उपरोक्त सज्जनों के लेखों को लेकर भारत-

वर्ष में कोलाहल पर उतर पड़े। कौवा कान ले गया अथवा 'अन्धेन नीयमाना यथा अन्धा' इन न्यायों का अवलम्बन करके विधवा विवाह जैसे घोर पाप को धर्म बतला कर प्रचार करने लगे। सच पूछिये तो इनका कोई अधिकार नहीं जिससे ये धर्म विवेचन मे हस्तक्षेप करें। इस प्रकार से न्याय का गला घोट उपरोक्त समाचारपत्र विधवा विवाह पर इस भाँति टूटे जैसे कि बनारस आदि शहरों में ग्राहकों के पीछे दलाल टूट पड़ते हैं। यह इनकी अनधिकार चेष्टा है। यदि इस विषय में इन समाचारपत्रों को कोई विशेष लाभ नहीं है तो हमें विश्वास है कि हमारी इस पुस्तक को देख कर निर्णय की रक्षा के लिये यह अपनी भूल को स्वीकार कर अधार्मिक लिखे गये लेखों की पब्लिक से क्षमा मांगेंगे।

धर्म और उन्नति।

'यतोऽभ्युदयनिःश्रेयससिद्धिः सधर्मः' जहाँ उन्नति और मुक्ति दोनों हों वही धर्म है। केवल उन्नति से धर्म नहीं रह सकता है।

भारत—'धर्मस्य प्रभुरच्युतः' धर्म के मालिक ईश्वर हैं। ईश्वर की आज्ञा पालन करना धर्म है। मनुः—'श्रुति स्मृति ममैवाज्ञे'—श्रुति स्मृति मेरी आज्ञा हैं, एक का न मानने वाला काना, और दोनों न मानै तो अंधा होता है। श्रुति—'इतिहास पुराणाचभ्याम् वेदार्थमुपवृंहयेत्—पुराणं सव वक्त्रेभ्यः'

जिस तरह श्रुति स्मृति ईश्वर मुख से हैं इसी भाँति इतिहास पुराण भी भगवान के मुख से है यदि शंका हो कि व्यास कृतादि है तो कोई पुस्तक कोई लिख दे तो नाम भले उसका हो ईश्वर ने हृदय से ब्रह्मा को वेद पढ़ाया 'तेने ब्रह्महृदाय आदि कवये' परंतु कहा जाता है कि ब्रह्मा के चारो मुख से चारो वेद निकले हैं इतिहासपुराण सब मुखों से निकले मुनियों ने ईश्वर के भय तथा अधर्म से डर कर भगवत बाणी ठीक २ अपने बचनों मे कही है, आजकल की तरह स्वच्छन्दता नहीं धारण की। युग प्रमान में सामाजिक धर्म न्यूनाधिक भले ही हो परन्तु शास्त्रीय धर्म वैसे ही अटल रहेंगे। आजकल वर्तमान दशा में उन्नति के जोश में मतवाले सज्जन चंद्र की क्षीण दशा पर ध्यान नहीं देते केवल बृद्धि ही पर डटे आगे बढ़ रहे हैं परन्तु यह एक रस प्रकाश केवल सत्य के सूर्य ही में है। मनुः—'तद्वै युगसहस्रान्तं ब्राह्मं पुण्यमहर्विदुः। रात्रिं च तावतीमेव तेऽहोरात्र विदोजनाः' ॥१–७१॥ ब्रह्मा के दिन में हजार चौयुगी होती है, यह इक्यावन वर्ष के प्रथम दिन की सातवें मनु की २८ वीं चौकड़ी का कलियुग है इसी तरह अनेकों बीतेंगे काल ईश्वर सत्य है कोई कुछ कहे सत्य में आंच नहीं। करने को जो इच्छा जिसकी है करता हो है परन्तु वेद शास्त्र में दोष लगाना उचित नहीं है। अब तो 'स्वकार्यं साधयेद्धीमान्'

काले वह बुद्धिमान है। मनुः–'एतद्देशप्रसूतस्याग्रजन्मनः। स्वं स्वं चरित्रं शिक्षेरन्पृथिव्यां इस आर्यावर्त देश में जन्मे हुए पुरुषों से पृथ्वी के पुरुष सच्चरित्र की शिक्षा लेवें। कहां तो विदेशी यह यत्न करते है कि ऐसा कानून बनाया जावे कि जो स्त्री तीन वर्ष पति के संग रहे वह सारी जिंदगी उसके साथ गुज़र करे और कहां भारतवासी विद्वान बनते हुए भी कन्या का व्यभिचार सधवा का व्यभिचार विधवा को भी मनमानी करने के लेख लिखते है। अपनी २ मनमानी है। सरकार ने फौज पुलिस कानून बनाये हैं तो भी व्यभिचार डाका अनीति होती ही है, धर्मशास्त्र का यथार्थ कथन सच्चों ही के दिल में जमेगा। डाँट फटकार गाली प्रयोग से सत्य कथन झूठ न होगा। विधवा विवाह वेद शास्त्र विरुद्ध है आप अर्थ का अनर्थ भले करो। इस पर काशी तथा देश २ के विद्वानों तथा कानपुर के विद्वानों व राजा महाराजाओं की सम्मति-हस्ताक्षर जनता देख पढ़ ले, धर्म का निर्णय धर्मात्मा विद्वान नहीं करेंगे तो कौन करेगा? धर्म ही से सच्ची उन्नति होगी।

स्त्री पुरुष के समानाधिकार पर विचार।

द्विधाकृत्वाऽऽत्मनोदेहमर्द्धेनपुरुषोभवत्।
अर्द्धेन नारी तस्यांस विराजमसृजत् प्रभुः॥
मनु० १। ३२

सज्जनों, मनुस्मृति अध्याय प्रथम श्लोक ३२ में कहा है कि प्रभु ब्रह्माजी ने अपने शरीर को दो भागों में विभाजित किया—आधे दाहिने अंग से पुरुष को और आधे बायें अंग से स्त्री को बनाया।

प्रश्न—जब पुरुष स्त्री आधे आधे अंग से पैदा हैं तो समानाधिकार मिलना चाहिये। यह सवाल है।

उत्तर—जिस पुरुष के अङ्ग से स्त्री पुरुष पैदा हुए हैं और समान हक चाहते है उसी पुरुष की आज्ञा वेद और शास्त्र हैं, इन वेद शास्त्रों में जो आज्ञा स्त्री पुरुष को दी है मानना चाहिये। किसी २ अंश में समान अधिकार की आज्ञा है किसी में स्त्री की विशेषता है और किसी में पुरुष की विशेषता है विचार कीजिये।

कन्या पुत्र आधे २ शरीर से हैं परंतु बनावट में बहुत भेद है। पुरुष के वीर्याधिक्यसे पुत्र तथा स्त्री के रजोधिक्य से कन्या पैदा होती है। स्त्री के मासिक धर्म से शुद्ध होने पर ४।६।८।१०।१२।१४ वीं रात्रि में गर्भ रहने से पुत्र और ५।७।६।११।१३। १५ वीं रात्रि में गर्भ रहने से कन्या होती है। ज्योतिष में पुरुष संज्ञक नक्षत्र में गर्भ रहने से पुत्र और स्त्री संज्ञक नक्षत्र में गर्भ रहने से कन्या होती है। जहां पुरुष संज्ञक रजोरात्रि और स्त्री संज्ञक नक्षत्र होता है वहां पुरुष को राशि कन्या मिथुन और स्वभाव में

भी पुरुष की उत्तेजना कम होती है। जहां स्त्री संज्ञक रजो-रात्रि और पुरुष संज्ञक नक्षत्र होता है तब गर्भ रहने से कन्या होती है परंतु स्वभाव बोली उत्तेजना पुरुष की सी होती है, नपुंसक नक्षत्र में दोनों में विपरीत भाव होता है। पुरुष की ३॥ व्याम आंत है स्त्री के ३ व्याम है। पुरुष के १० छिद्र स्त्री के तेरह, दो स्तन और एक गर्भ का—

सुश्रुत में लिखा है—

तेजो ध्यायनम् क्रमशः पच्यमानानां धातूनामभिनिर्वृत्तस्नेहजातं वसाख्य स्त्रीणां विशेषतो भवति। तेनानीव सौकुमार्य्यमृद्वल्परोमशोत्साह दृष्टिस्थिति पक्तिकान्तिदीप्तयो भवन्ति। सूत्रे। एकातु प्रकृतिरचेतना त्रिगुणाबीजधर्मिणी प्रसवधर्मिणी अमध्यस्थधर्मिणी चेनिऽवहवस्तु पुरुषाश्चेतनावन्तोऽगुणा अबीजधर्मिणोऽप्रसवधर्मिणो मध्यश्चधर्मिणश्चेति।

सुश्रुत शरीरस्थाने।

भाषा—क्रम से पकी हुई धातुओं का अभिनिर्वृत्त स्नेह से उत्पन्न आग्नेय तेज को वसा कहते हैं वह वसा धातु पैदाइश से ही स्त्री के शरीर में अधिक होती है उससे स्त्री के शरीर में अति सुकुमारता, कोमलता, मुच्छ आदि रोमों का न होना, उत्साह, दृष्टि में आकर्षण शक्ति, स्थिति, पाचनशक्ति,

छटा दीप्ति होती है। पुरुष के शरीर में इससे विपरीत होते है। पुरुष ज्यों हीं बाल्यावस्था से युवापन में आता है रूखा हो जाता है। प्रकृति एक है यह अचेतन त्रिगुणात्मकबीज-धर्मिणी प्रसवधर्मिणी अमध्यस्थधर्मिणी है इससे स्त्री बीज को धारण करती है और संतान उत्पन्न करती है। पुरुष बीजदाता गर्भ कराने वाला है। देखिये ईश्वरीसत्ता से ही उनके अधिकार् में भेद पड़ गया। स्त्री के रजोदोष, गर्भ के पालन की नाड़ियाँ इत्यादि पृथक् होती हैं, उसको प्रसव में पीड़ा होती है। जो सज्जन बराबर हक रखना चाहते हैं उन्हें पहले पुरुषों में गर्भ धारण करना, प्रसव पीड़ा छिद्रादि डाक्टरों से आपरेशन करा के ठीक करना चाहिये तब समानाधिकार की चर्चा उठानी उचित है।

स्त्रीजाति के अंग में कोमलता, मुधरता, अंग के भीतर गर्भाशय, दुग्धाशय अधिक होते हैं ऊपर से उनके मुच्छादि नहीं होती है। यह न्यूनाधिक्यता कुदरती है—जब यह बातें समानाधिकार में कुदरत से कम बढ़ है तो कार्य में सब अंश में समान अधिकार कैसे हो सकता है ? स्त्री का अमंत्रिक संस्कार—पुरुष का मंत्र सहित संस्कार, पुत्र गुरु के पास जाकर पढ़ें—कन्या के पिता भ्राता वेद को छोड़ अन्य विद्या पढ़ावें, 'स्त्री शूद्र द्विजबंधूनां त्रयी न श्रुतिगोचरा' स्त्री शूद्र द्विजबंधु (अर्थात् ब्राह्मण क्षत्री वैश्य में पतित) ये तीनों वेद

के अधिकारी नहीं है। इस पर 'इमां वाचं कल्याणीं' यह मंत्र स्त्री शूद्रों के वेद पढ़ने में प्रमाण दिया जाता है। यह बिलकुल झूंठ है। इस मंत्र का प्रसंग देखो-यज्ञ में आये हुये ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र स्त्री आदि के पूंछने को यज्ञ करनेवाले की तरफ से वाक्य है। आगे फल में यह कहा है जिसमें सब प्रसन्न हों और मुझको आशीर्वाद दें। विचार करो ऐसे अर्थ वाला मंत्र स्त्री शूद्र के वेद पढ़ने में कदापि नहीं हो सकता है। प्रसंग देखना चाहिए केवल मत्र का टुकड़ा या प्रसंग छोड़ देने से काम नहीं सिद्ध होगा, जैसे 'कुरान मत पढ़ो' ऐसा लिखा हुआ एक पुरुष किसी को दिखलाने लगा आधा टुकड़ा हाथ में छिपाये था जब हाथ हटवाया तो उसमे निकला कि 'नशे की हालत में कुरान मत पढ़ो'। इसी प्रकार प्रसंग छोड़ कर मंत्र श्लोक का अर्थ मत बदलो, मंत्र श्लोक का भाव छोड़ कहीं से टुकड़ा मत ले भागो, कहीं तीन ही अक्षर जैसे 'दिधिषोः' इसको कल्प-वृक्ष बना कर वेद प्रक्रिया के सारे प्रसंग में पानी मत फेरो, चेत जाओ। स्त्री का पुरुष से बड़ा अधिकार है, ऐसी स्त्री जो पहला दरजा भी पास नहीं जज्ज कलक्टर से व्याह होने पर उसी दिन जजिन कलक्टराइन हो जाती है। इसी भांति क ख तक का भी ज्ञान न होते हुए पंडिताइन होती है और गरीब की कन्या राजा को व्याह जाने पर

महारानी, सेठ को व्याह जाने पर सेठानी होती है। स्त्री पुरुष दोनों को मनुस्मृति में काम बांट दिया गया है, स्त्री गृहेश्वरी घर की मालकिन होती है।

जाया—पुत्र उत्पन्न करनेवाली, पत्नी—पति को धर्मादि कराने में संग देकर सब धर्म पूर्ण कराने वाली, माता—बच्चों को मान देकर लालन पालन करनेवाली इत्यादि विशेषतायें स्त्री में हैं। पुरुष बाहर से धन लाकर नौकर की तरह सब का पालन करने वाला, रक्षा करने वाला, व्यवहार चलाने वाला, तीर्थ यज्ञादि से स्त्री को उद्धार करने वाला, अगर स्त्री का दास हुआ तो बन्दर की तरह नाचने वाला, स्त्री के पैरों के तलुआ के तले अपनी आंखों की पुतली बिछाने वाला, होता है। मित्रो अब सोचिये समानाधिकार कैसा? अगर डाक्टर साहब स्त्री को पुरुष और पुरुष को स्त्री बना दें तो भी समानाधिकार न होगा विपरीतालंकार फिर भी होगया। यदि होली की पिचकारी की तरह कभी एक धार वाली और कभी फुहारदार बनावैं तो भी यह ऊपरी दिखावा बदल जाय परंतु भीतरी कुदरती काररवाई में दाल न गलैगी। बस होगई समानाधिकारता। एक पुरुष १० स्त्रियों को गर्भ धारण करा सकता है परंतु एक स्त्री दश पुरुषों से कैसे गर्भ धारण करेगी? जहां मज़ा पर आगई, धर्म और लोक चाहे भाड़ में जांय हम ऐसा ही करेंगे,

ऐसी दशा में हम भी कुछ न बोलेंगे तुम्हारी रास्ता अलग और हमारी अलग, एक तो अखिल भारतीय प्राचीनमंडल और दूसरी विलायत पार्टी। मौज महमदा तेरी गाय बांध चहै छेरी।

सच्चा सुधार।

सज्जनों, सच्चा सुधार तो धर्म को आगे करने से होगा 'धर्मादर्थश्च कामश्च धर्मादेव गतिर्नृणाम्' धर्म ही से धन, काम, सुख और मुक्ति होती है। गीता-'नियतं कुरु कर्मत्वं कर्मज्यायोह्यकर्मणः' धर्मानुकूल ही अपनी २ वर्ण जाति का कर्म करना उचित है, कर्म भी वही करै जो शास्त्र कहता है मनमानी करने से न सिद्धि न सुख न परमगति होती है। शास्त्रों में वर्णाश्रमधर्म कर्म विभाग किये है इसी पर 'धर्म कर्म शिक्षा सर्बस्व' नामक पुस्तक दो भाग में लिखी गई है जिसमें मनुस्मृति आदि ग्रन्थों के प्रमाण श्लोक भाषा सहित लिखे हैं मंगा कर देखिये और ईश्वरी आज्ञा शास्त्रों को मान कर वैसा ही आचरण कीजिये।

(१) ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र अपना धर्म जीविका धीरे २ स्वीकार करें।

(२) द्विजाति एवं ब्राह्मण बालकों को संस्कृत शिक्षा सदाचार सहित सिखाई जाय।

(३) स्त्री जाति को उनका धर्म सदाचार सिखा कर विलायती रग ढंग से दूर रक्खा जाय।

(४) बाल बिवाह न हों, कन्या का बारह वर्ष से ऊपर और पुत्र का सोलह वर्ष से ऊपर ब्याह किया जाय।

(५) बृद्ध विवाह का रोकना, अधिक अवस्था होने पर बिवाह नहीं करना इसमे दुःख मिलता है और मर्यादा बिगड़ जाती है।

(६) बहुविवाह जब संतान मौजूद है और अवस्था भी आ गई हो तो विवाह न करे, इमसे रियासत छिन्न भिन्न हो जातो और कलह बढ़ती है।

(७) विधवाओं को सदाचार की शिक्षा देना, उनके पालन में ठीक यत्न करना, दूसरे की विधवाओं को उनके घर में ही सहायता देकर उनके सतीत्व, धर्म और शरीर की रक्षा करनी चाहिये।

(सवाल) बिधवों के गर्भपात, म्लेक्ष होने पर विचार करो।

जवाब—देखिये मर्द अपनी कमजोरी को छिपा कर बेचारी विधवाओं पर कलंक लगा उन्हें दोषी बनाते हैं, पाप मे अधिक दुख होता है। लोग कहते हैं आगे बिधवा कम थीं अब ज्यादा हैं इस से जरूर विवाह होना चाहिये। मित्रो! रोग का निदान ढूढ़ कर उसको समूल नाश करने

से ही शरीर आरोग हो कर जीवन सुखी होता है। यदि ऊपरी अंगों की दवा करो तो कहने को भले ही रोगनाश और शरीरसुख होता है परन्तु थोड़े ही दिनों में रोग इकदम बढ़ कर शरीर और सुख दोनों का नाश कर देता है। इसी तरह बिधवा होना इस रोग का निदान प्रथम धर्म का छोड़ना और अधर्म का बढ़ाना है, द्वितीय बाल विवाह और बृद्ध विवाह है। इन निदानों को अच्छी प्रकार समझ लीजिये और इनकी तरक्की को रोकिये तो सदा के लिये अनंत बिधवाओं की संरक्षा और विधवाओं की न्यूनता हो सकती है। किन्तु तरक्की की लम्बी दौड़ लगाने वाले डाक्टर रोगी को विपरीत औषधि तथा कुपथ्य से ही निरोग करना चाहते हैं! अब तो रोग के बढ़ाने को वेद शास्त्र इतिहास पुराणों के अर्थ बदल बदल कर अनेक प्रकार के उलटे उपदेश दिये जाते हैं, स्त्रियों से कहते हैं आप तो लड़का पैदा करने की मशीन (पेंच) हों, स्वतंत्र हो, कुछ पाप नहीं है, कुमारी, सधवा, विधवा, सब मौज करो वेद शास्त्र यही कहते हैं। पुरुषों को यह उपदेश देते है कि तुम लड़का पैदा करवावो कुछ पाप नहीं है इन पण्डितों के पचड़े और ढकोसलों में मत पड़ो। जब ऐसी उलटी शिक्षा दोनों पा गये और भाई देवर जेठ ससुर सब के दिलों से यह धर्म बंधन निकल गया कि यह हमारी बहिन, भौजाई, माता के बराबर है—यह छोटे

भाई की स्त्री पुत्रवधू के बराबर है-यह हमारी पुत्रवधू कन्या के बराबर है तब ये सब ज़बरदस्ती पराधीन बेबश बेचारी विधवाओं की इज्जत खराब करते हैं और दुर्नीति शिक्षा देकर उनके दिल से धर्माधर्म का दृढ बंधन तोड़ देते हैं। अब रह गई लोकलाज उसके मारे उन बेचारी विधवाओं को गर्भ धारण करा कर इधर उधर निकालते छोड़ते फिरते है। शोक है अपनी भूल पराये शिर लादते है! धिक्कार है ऐसे मर्दपन को जो मूँछ रख कर ऐसे दीन हीन अनाथ अबला विधवाओं की यह दुर्गति कर उनको बदनाम करते हैं!! स्वयं रक्षा न करके उनको कलंकित करते हुए उन्हें अनन्त काल दुख भोगने और उनके पतिकुल पितुकुल दोनों को नर्क भेजने के इरादे से पुनर्विवाह का महापाप संचार कर मुँह काला करते हैं!!! सोचिये, समझिये, उठिये और लंगोटा कस कर सच्चे पंथ में आ जाइये, लड़ाई से दो शक्तियों को मिट्टी में न मिलाइये, वेद शास्त्र तथा लोक की मर्यादा भ्रष्ट मत कीजिये। आइये हम आप मिल कर बालविवाह बृद्ध विवाह रोक कर बेचारी विधवाओं को सतीत्व पालन करावें और उनके दोनों कुल और उन्हें अनन्त दुःख से बचावें। अन्यथा आप चाहे शिर पीट कर मर जावें सती साध्वी बहिन बेटियां तुम्हारी अधर्म की शिक्षा पर लात मार कर पातिव्रतधर्म का पालन करेंगी और दोनों कुल

तार कर परलोक में पति को पाकर परमेश्वर से मिलेंगी। जो तुम्हारे हथकंडे में आकर अपना सर्वस्व खो चुकी हैं उन गई बीती दुष्टाओं की क्या गिनती है। देखिये राक्षसी शूर्पणखा का भी पुनर्विवाह राक्षसराज रावण ने नहीं किया किन्तु अब रावण के वंशज इसी पर कमर कसे हैं। इससे क्षमा प्रदान कर चेत जाइये दुराग्रह छोड़ दीजिये भारत को आरत न कीजिये।

कन्या प्रमाण।

सज्जनों, साधारण रीति से नारी और कन्या शब्द सब स्त्रीमात्र में कह दिये जाते हैं जैसे—

द्विधाकृत्वात्मनोदेहमर्द्धेन पुरुषोऽभवत्।
अर्द्धेन नारी तस्यांस विराजमसृजत्प्रभुः॥ ३२॥

मनु० १। ३२

ब्रह्माजी अपने देह के दो विभाग करके आधे दाहिने अङ्ग से पुरुष और आधे बायें अङ्ग से नारी बनाई तिस नारी में विराट संसार को पैदा किया। देखिये पैदा होते ही नारी शब्द कहा गया है। लोक में स्त्री पुत्र पौत्र वाली भी होती हुई अपने मां बाप के घर में अमुक की कन्या कही जाती है, उसके मां बाप उसे कन्या पुत्री बेटी आदि विशेषण देकर बुलाते हैं। मनुः १०। ११–'क्षत्रियाद्विप्रकन्यायां

'भवति जातितः' यहां पुत्र पैदा करने वाली स्त्री को कन्या ही कहा है, इत्यादि ।

अब विशेषता में विचार कीजिये—

कन्यायाः कनीनच असंस्कृत विवाह कर्मिकैव कन्या कन्यात्वेन गृह्यते। तेन ततः प्राक् परोपभुक्ताऽपि तत्वं न जहाति नाऽपि विप्रषिद्धतेति ॥

अष्टाध्यायी ४ । १ । ११६

भाषा—जिसका विवाह संस्कार नहीं हुआ है उसे कन्या कहते हैं चाहे बड़ी होने पर पुरुष से भोगी भी गई हो परंतु उसका कन्यापन नहीं जाता है न कोई निषेध ही है।

इदं विप्रतिषिद्धम्। कोविप्रतिषेधः। अपत्यमिति वर्त्तते। यदि च कन्या नापत्यम्। अथापत्यं न कन्या। कन्याचापित्यं चेति विप्रतिषिद्धम्। नैतद्विप्रतिद्धम्। कथम्—कन्या शब्दोऽयंपुंसाऽभिसम्बन्धपूर्वके संप्रयोगे निवर्त्तते। या चेदानीं प्रागभिसम्बन्धात् पुंसा-सह संप्रयोगं गच्छति तस्यां कन्या शब्दो वर्त्तत एव। कन्यायाः कन्योक्तायाः कन्याभिमतायाः सुदर्शनायाः यदपत्यं सकानीन ॥ इति ॥

पतञ्जलि भाष्यम् अ० ४ । पा० १

भाषा—यहाँ क्या विप्रतिषेध है, यदि अपत्य कन्या नहीं, कन्या अपत्य नहीं इत्यादि। कन्या शब्द पुरुष के संग बिना

...स निवृत्त होता है जो विवाह संबंध के बिना पुरुष का संग करै भी तौ भी कन्या ही कही जायगी, और उसमें लड़का भी होगा तो वह कानीन निंदित पुत्र कहा जाता है।

इसी बात को कैय्यट लिखते है—

शास्त्रोक्तो विवाहोऽभिसम्बन्धस्तत्पूर्वके पुरुष संयोगे कन्या शब्दो निवर्त्तते। यातु शास्त्रोक्तेन विवाह संस्कारेण बिना पुरुष युनक्ति साकन्यात्वं न जहाति॥ कैय्यटः।

भाषा—विवाह सबंध से पुरुष सङ्ग हो तब कन्या शब्द निवृत्त होता है जो शास्त्रोक्त विवाह संस्कार के बिना पुरुष संग करै वह कन्या ही रहैगी निंदा भले ही होवै।

कन्याग्रहणादत्रोढायामित्याध्याहार्यम्।
विवाहासंभवात्कन्याग्रहणं स्त्रीमात्रप्रदर्शनार्थम्॥
कनति शोभते। कनति गच्छति रागिमनो यस्यां।
कन्यते दीप्यते काम्यते—गच्छति। कुल्लूक भट्टः।

भाषा—अध्याहार से यानी साधारणपन से व्यवहार में ब्याही को भी कन्या कह सकते है जैसे ब्याही कन्या को पिता के घर में कन्या ही कहते है। विशेष रूप से तो बिना विवाह वाली ही कन्या को कन्या कहैगे। शोभावाली, मन खींचनेवाली इत्यादि अनेक अर्थ कन्या शब्द के है परन्तु ठीक ठीक शास्त्र और लोक से बिना विवाह भई ही

को कन्या कहते हैं इस बात को सज्जन अपने हृदय में अच्छी तरह धारण करलें।

कन्याओं का ब्रह्मचर्य।

प्र०—'ब्रह्मचर्येण कन्या युवानं विंदते पतिम्' ॥

अथर्व वेद का० ११ सू० ५ मं० १८

भा०—अथर्व वेद के इस मंत्र में कन्याओं का ब्रह्मचर्य साथ ही यज्ञोपवीत वेद पढ़ना भी सिद्ध है।

उ०—मित्रो, विचार कीजिये मंत्र का अक्षरार्थ यह है कि 'ब्रह्मचर्य से कन्या युवा पति को प्राप्त होती है' तहां खींच खांच करके गुरुकुल में रहना, वेद पढ़ना, जनेऊ होना घुसेड़ते हैं। इस पर प्रमाण—स्मृति—'स्त्रियो द्विधा ब्रह्मचारिण्यः सद्योवध्वश्च पुराकल्पेषु नारीणां मौञ्जीबन्धनमिष्यते' इत्यादि। स्त्री दो प्रकार की होती रही है—एक तो 'ब्रह्मचारिणी' दूसरी 'विवाहिता' तहां पहले कल्प में स्त्रियों का मौंजी बंधन अर्थात् ब्रह्मचारियों की तरह लँगोटा कसके गृहस्थ धर्म त्याग कर पठन कर पुरुष संग छोड़ ब्रह्मचर्य धारण कर मुक्त हो जाती थीं अब यह धर्म नहीं सध सकता है इससे कन्या अपने घर ही मे रहे और जब तक ब्याह की अवस्था न आवै तब तक घरवाले उन्हें गृहस्थ व्यवहार प्रचार श्लील गीत गान चाल ढाल हँसी दिल्लगी न करने दें और न आप स्वयं करें। पान खाना, नोक

झोंकवाली पोशाक, जूते, सिलीपट, चटक मटक चाल रोकें, सीधी सादी चाल व्यवहार सिखावें, प्यार से बचपन में ही लड़की को जूते पहनाय मिस बनाय सत्यानाश न करें। अनर्गल व्यवहारों से बड़ी होने पर उनके गुल खिलते हैं तब माता पिता झोकते और रोते हैं। इससे सज्जनों कन्याओं की माता या घर में जो स्त्री उस पर मालिकिनी हो उसको उत्तम शिक्षा दे मर्यादा से रहना सिखावें, जूती सिलीपट न पहनावें, कांटा लगाना पान खाना रोकें, घर में ही उनके भाई बाप विद्या पढ़ा दें जिससे उनको धर्माधर्म का ज्ञान हो जाय, यह नहीं कि कन्या पढ़ गई दादी मां संग ले जाकर थियेटर स्वांग में व्यभिचार प्रचार की पुस्तकें खरीद कर ले देती हैं। घर वाले भाई बाप भी नाबिल ही काबिल पढ़ाने में कितार समझते हैं या गुरुकुल भेज सर्वांग शिक्षा देते हैं या एफ० ए० बी० ए० पढ़ा विलायत भेजने के लिये तैयार हैं। मित्रो, कन्या रत्न है, बुरे आचरणों से नष्ट हो जाती है, इस पर दो कुल-पिता और पतिकुल की जिम्मेदारी है, धर्मशास्त्र की शिक्षा पढ़िये इनको नाश मत कीजिये। बेटियो, तुम उन्नति के घोड़े पर चढ़ना छोड़ दो केवल शुद्ध धर्म रूपी स्वराज्य सिंहासन पुष्पक विमान पर जम कर डटो और प्राचीन धर्म मर्यादा का पालन करो, दोनों कुल तार अपने को तारो यह तुम्हारे लिये आदर्श शिक्षा है।

कन्यादान ।

गोदानाद्भूमिदानाच्च कन्यादानं विशिष्यते ।
अन्यदानानि कन्यायाः कलां नार्हन्ति षोड़शीम् ॥१
धर्मशास्त्र ।

भा०—गोदान और भूमिदान से कन्यादानश्रेष्ठ होता है और सब दान कन्यादान के सोलहवें हिस्से में भी नहीं होते हैं।

सज्जनों विचार कीजिये कन्यादान का इतना माहात्म्य ठीक है कन्या ही में पुत्र हो पुरुष, और कन्या पैदा हो स्त्री होती है और दोनों मिल कर या पृथक् भी अनेक दान धर्म करते हैं तो सब की मूल तो कन्या ही है उसके दान में जो फल होता है उसकी बराबरी दूसरे दान कैसे कर सकते है। रही गो-भूमि इसकी बराबर कहीं कहीं कहे गये हैं उसका प्रयोजन यह है कि जिस तरह कन्यादानकर्ता पिता का कुल और कन्यादान लेनेवाले पति का कुल दोनों आगे चलने हुए अंशांश से फलभागी होते रहते हैं इसी तरह गौ भूमि का भी नाश नहीं है इससे इस अंश में समता कही गई है और सब दान हाथी घोड़ा धनादि की मूल नाश हो जाती है इससे कन्यादान के सोलहवें हिस्से में भी नहीं है। क्षत्रियों में स्वयंबर भी होता रहा है तहां पर पीछे कन्या-

दान विवाह जरूर होता रहा है। सीतारामादि पांडवादि के दृष्टांत मिलते हैं।

प्र०—'कन्यादानं त्रिःकार्यम्'-कन्यादान तीन वार करै।

उ०—बुद्धिमानों विचार करो, इस पद से शास्त्रियों की बुद्धि भी हिल गई और कन्या का दान तीन वार होना चाहिये लिख मारा पर वाह री विद्या, न विचार किया—न कोई धर्मशास्त्र देखा। धर्मशास्त्र मनुः अ० ९ श्लो० ४७—'सकृदंशोनिपतति सकृत्कन्या प्रदीयते'। दाय विभाग एक वार होता है और कन्या एक वार दी जाती है। अब तीन वार का मतलब सुनिये—विवाह पद्धति में कन्या के बाप दादा परदादा के नाम तीन वार शाखोच्चार करके प्रयत पाणिरित्यादि पढ़ते हैं—दूसरे—वाल्मीकि रामायण बालकांड सर्ग ७१ श्लो० २१-२२—

सीतां रामाय भद्रं ते ऊर्मिलां लक्ष्मणाय वै।
वीर्य शुल्कां ममसुतां सीतां सुरसुतोपमाम् ॥२१॥
द्वितीयामूर्मिलां चैव त्रिर्वदामि न संशयः।
ददामि परमप्रीतो वध्वौ ते मुनिपुङ्गव ॥ २२ ॥

भाषा—सीता रामजी को और ऊर्मिला लक्ष्मण को देऊंगा, पराक्रम ही मूल्य है, मेरी बेटी सीता देवकन्यातुल्य है ॥ २१ ॥ दूसरी ऊर्मिला कन्या लक्ष्मण को देऊंगा, तीन वार कहता हूं। हे मुनिश्रेष्ठ यह दोनों तुम्हारी बहू होंगी ॥

२२ ॥ देखिये–'कन्यादानं त्रिकार्यं' का यह अर्थ कन्या दान तीन वार कहके ददानि ददानि ददानि पिता कहे तब दृढ़ता प्रतीत होती है । लोक व्यवहार, घोड़दौर, नीलाम आदि में एक–दो, एक–दो, में समाप्ति नहीं होती जब एक–दो–तीन कहते है तब पक्का समझा जाता है। इससे कन्या-दान एक ही वार होता है परंतु त्रिवाचक होता है यह सिद्ध हुआ। इससे प्यारे मित्रो ! विद्या में धूल मत डालो–हठ छोड़ दो–हमारे भाई हो विदेशी हवा से धुंध में मत चकराओ, चेत जाओ।

कन्यावरवृति व सगाई फलदानादि ।

सज्जनों, सब जाति में किसी न किसी भांति यह रवाज होती है परंतु द्विजाति (ब्राह्मण क्षत्री वैश्य जाति) में विशेष रूप से वेद शास्त्रानुकूल होती है और शास्त्र में विवाह के दो अंग हैं एक कन्यावरवृति (कन्या वर का वरण) दूसरा कन्यादान विवाहादि। प्रथम कन्यावरवृति लक्षण कहते है।

रामश्रमाचार्यः कन्यावरणम्, त्रिश्वस्वाती वै-ष्णावपूर्वात्रयमैत्रैर्वस्वाग्नेयैर्वा करपीडोचित ऋक्षैः। वस्त्रालंकारादिसमेतैः फल पुष्पैः संतोष्यादौ स्या-दनुकन्यावरणंहि ॥ १ ॥ वरवृतिः—वरणिदेवोऽथवा कन्यका सोदरः शुभदिने गीतवाद्यादिभिः संयुतः।

वरभूतिं वस्त्र यज्ञोपवीतादिभिर्ध्रुवयुतैर्वन्हिपूर्वात्रयैराचरेत् ॥ २ ॥

भाषा-उत्तराषाढ़ स्वाती श्रवण तीनों पूर्वा अनुराधा धनिष्ठा कृत्तिका तथा विवाहिक नक्षत्र रोहिणी तीनों उत्तरा रेवती स्वाती मूल मृगशिरा मघा अनुराधा हस्त इन नक्षत्रों में वस्त्र गहना फल पुष्पों से कन्या वरण करै। वरवृत्ति-ब्राह्मण या कन्या का भाई अच्छे दिन में मंगलगान वाद्य सहित वस्त्र यज्ञोपवीत आदि मुद्रा पात्रादि लेकर तीनों उत्तरा रोहिणी कृत्तिका तीनों पूर्वा नक्षत्र में वर की वरीक्षा करै। कहीं २ दोनों के होते हैं और वरीक्षा फलदान तो सबही के होते हैं तहाँ दोतरफा प्रतिज्ञा है—

वाक्दत्ता मनोदत्ता दत्ता पाणिकुशोदकैः। तत्र वाग्दत्ता वर वरणकाले कन्या वरयोः पितृवाक्यम् ॥ हरितफल द्रव्यादि गृहीत्वा पठति—वाचादत्ता मया कन्या पुत्रार्थं स्वीकृतात्वया। कन्यावलोकनविधौ निश्चिस्त्वं सुखीभव ॥ १ ॥ वाचादत्ता त्वया कन्या पुत्रार्थं स्वीकृतामया। वरावलोकन विधौ निश्चिस्त्वं सुखीभव ॥ अन्यर्थमित्यादि ऊहः कार्यः ॥

वाक्दत्ता मनोदत्ता और कुश जल से तीन प्रकार से कन्यादान होता है तहां वाक्दत्त मनोदत्त का विधान कहते हैं-वाक्दत्त कन्या के वर वरण समय में कन्या वर के

पिताओं के वचन यह हैं—कन्या का पिता पढ़े—वाणी से हम अपनी कन्या आप के पुत्र के लिये देते हैं कन्या के देखने में आप निश्चित हैं सुखी रहिये। वर का पिता—वाणी से आपने अपनी कन्या मेरे पुत्र को दी है वर के देखने के लिये आप निश्चित हों सुखी रहिये। यह वरीक्षा है। आगे फलदानादि देश काल कुल जाति के अनुकूल सब में होते हैं, सगाई वैश्यों तथा हमारे गौण ब्राह्मण भाइयों में वर्षों तक चलती हैं यहां तक लड़की लड़के की गोद भरना, होली दिवाली पठावा, गहना कपड़ा भुगतान टेहला लड़का त्योहार में ससुरार और लड़की भी सासरे जाय रीति चुका कर अपने बाप के घर आ जाती है, इस दशा में उस कन्या का वह वर लाक्षणिक पति हो जाता है प्रत्यक्ष से नहीं। यहां सगाई फलदान के बाद यदि लड़की मर जाय तो तीन दिन का सूतक पतिकुल को लगता है।

स्त्रीणामसंस्कृतानांतु त्र्यहाच्छुद्ध्यन्ति बान्धवाः।
यथोक्तेनैव कल्पेन शुद्ध्यन्ति तु सनाभयः ॥ ७२ ॥

मनुः अ० ५ । ७२

स्त्रीणामिति—स्त्रीणामकृतविवाहानां वाग्दत्तानां मरणे बान्धवा भर्त्रादयस्त्र्यहेण शुद्ध्यन्ति। वाग्दानं विनाभर्तृपक्षेसंबंधाभावादश्रुत मपि वाग्दानान्तपर्यंतं बोद्धव्यम्। सनाभयः पितृपक्षाः वाग्दत्तानां विवाहाद-

बांऽक्मरणे यथाक्तेनैव कल्पेनेत्येतच्छ्लोकपूर्वार्धोक्तेन त्रिरात्रैणैव शुद्ध्यन्तीत्यर्थः। तदुक्तमादिपुराणे—आजन्मतस्तु चूडान्तं यत्रकन्या विपद्यते। सद्यः शौचं भवेत्तत्र सर्ववर्णेषु नित्यशः। ततो वाग्दानपर्यन्तं यावदेकाहमेवहि। अतः परं प्रवृद्धानां त्रिरात्रमिति निश्चयः। वाग्दाने तु कृते तत्र ज्ञेयं चोभयतस्त्र्यहम्। पितुर्वरस्यचततो दत्तानां भर्तुरेव। स्वजात्युक्तमशौचंस्यान्मृतके सूतकेऽपिच। मेधातिथिगोविन्दराजौतु यथोक्तेनैवकल्पनेतिनृणामकृतचूडानामित्येतदुक्तेन विधिना शुद्ध्यन्तीति व्याचक्षाते। अत्रचव्याख्याने पुत्रवत्कन्यायामपि चूडाकरणादूर्ध्वं मरणे त्र्यहाशौचंस्यात्। तच्चादिपुराणाद्यनेकवचनविरुद्धमिति ॥७२

भाषा—स्त्री जिसका वाग्दान हुआ है विवाह नहीं हुआ है उसके मरने पर बंधु जे भर्तादिक कन्या के पति ससुर जेठ आदि जितने कुटुंबी हैं तीन दिन सूतक मान के शुद्ध होते हैं। वाग्दान के बिना भर्ता के कुल का संबंध नहीं होता—सनाभयः कन्या के पिता के पक्षवाले बाप भाई आदि भी तीन दिन में शुद्ध होते हैं—यही विषय आदि पुराण में कहा है—कन्या के जन्म से मुंडन तक मरने पर सब वर्णों में शीघ्रही शुद्धि होती है मुंडन के बाद सगाई तक एक दिन का सूतक दोनों पक्ष को लगता है। परन्तु मेधातिथि गोविंद-

राज का यह निश्चय है कि मुंडन के बाद सगाई तक तीन तीन दिन का सूतक उसके पतिकुल और पितुकुल दोनों को लगता है। सज्जनों विचार कीजिये जब सगाई के बाद कन्या के मरने पर उसके पति और ससुरादि को तीन दिन का सूतक लगता है तो सगाई के बाद उसका पति लाक्षणिक पति तो जरूर ही हो गया इसमें ज़रा सा भी संदेह नहीं रहा। तहां दूसरा प्रमाण—उद्वाहतत्व काश्यप वचन—

सप्त पौनर्भवा कन्याः वर्जनीयाः कुलाधमाः। वाचादत्ता मनोदत्ता कृतकौतुकमंगला॥ उदकस्पर्शिता याच याच पाणिगृहीतिका। अग्निपरिगता याच पुनर्भूप्रभवा च या॥ इत्येताः काश्यपेनोक्ता दहन्ति कुलमग्निकाः॥

भाषा—सात प्रकार की कन्या कुल में अधम कहलाती हैं उनका विवाह नहीं करै-(१) जो वाणी मे किसी को दी गई हो, (२) जो मन से भी किसी को दी गई हो, (३) प्रथम विवाह के लिये तैयारी उत्साह हो गया हो, (४) जो जल से संकल्प कर दी गई हो, (५) जो पति को हाथ पकड़ा दी गई हो, (६) जो अग्नि की भाँवर भी फिर चुकी हो, (७) पुनर्भू से पैदा हो। यह सातो कन्या काश्यपजी ने अग्नि के समान कुल दाहक बताई है। देखिये वाक्दत्त मनोदत्त को भी दुबारा व्याह वर्जित हैं—इस पर पराशरजी ने कहा है—

यह श्लोक विधवा विवाह समर्थकों का प्राण है परंतु ब्रह्मर्षि आदि महात्मा विद्वान् कहते हैं कि बहुत प्राचीन पुस्तकों में 'पतिर्नान्यो विधीयते' पाठ है इस अर्थ के प्रचार के दृष्टांत भी आगे देखिये।

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीबे वा पतितेऽपतौ ।
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते ॥
अपतौ नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे पतिते सति-
नारीणां पंचसु आपत्सु अन्यः पतिः विधीयते ॥१॥

पराशर स्मृति अ० ४-श्लो० ३२ ।

सज्जनों, उद्वाह तत्व काश्यप के वचन प्रमाण से विवाही कन्या की कौन कहै सगाई वाली कन्या का भी दूसरे पति के साथ विवाह नहीं होना चाहिये। मित्रो, वेद शास्त्र के वचन कानून के समान हैं और पुराणों की कथा नज़ीर के समान हैं अगर कानून में दोफसली सबूत पाया जाय तो नजीर में जिस पक्ष की पुष्टी मिलै उस पक्ष को पुष्ट करने वाला कानून अर्थात् वेद शास्त्र के मंत्र श्लोक भी समझे जाँयगे—अब कानून और नज़ीर से दोनों पक्ष साफ साफ निर्णय कीजिये। नष्टमृतेप्रव्रजितक्लीवपतितलाक्ष-णिक सगाई वाला पति हो तौ भी कन्या का दूसरे पति के साथ विवाह न हो दोनों कानून और नजीर भी पढ़िये। प्रथम तो वाग्दत्ता मनोदत्ता का भी दुबारा ब्याह नहीं होना

चाहिये दान भावॅरें की कौन कहै। काश्यप का वचन सातों को मने करता है। विवाही कन्या का पुनर्विवाह तो सपने में भी कहीं सुनने में नहीं आया है अब वचन और मनसे दी गई या कन्या अपने ही मन से पति वर के स्वी कर लिया है वह भी दूसरें पति को नहीं विवाही गई है। (१) सावित्री ने सत्य-वान के गुण सुन कर मन से बर लिया। जब बाप ने विवाह के लिये स्वयंवर करना चाहा तब उसने अपनी माता से कहा दिया कि हमने पति बर लिया है। बाप ने सत्यवान को सुन कर पंडितों से उसकी व्यवस्था उम्र पूँछी, तब पंडितों ने पिता को अंधा बनमें बास राजहीन उम्र्क्षीण आदि दोष बतलाये। पिता ने घबड़ा कर हर तरह से सावित्री कन्या को समझाया और डांट कर कहा कि बेटी तुम ऐसे पति को मत स्वीकार करो (इसकी कथा महाभारत वनपर्व में पढ़ देखिये)। बेटी ने उत्तर दिया कि व्याह एक बार होता है, मैंने अपना पति सत्यवान मन से बर लिया क्या बार २ व्याह होता है, कुछ भी हो व्याह यही करूंगी, मर चहै भलेही जाऊं पर अन्य पुरुष सपने में भी नहीं करूंगी। अंत में पिता हार गये सत्यवान को व्याह दिया। सावित्री यमराज से पति को लाई यह मानसिक व्याह नज़ीर पहला पति मनसे स्वीकार करने पर दूसरे के संग व्याह न करै, सावित्री सत्यवान की नज़ीर सुनाई।

दूसरी नजीर—देवी भागवत नवमस्कंध-सुदर्शन अयोध्या के राजा वाल्य अवस्था में दूसरे नाना युधाजित के भय से प्रयाग में भरद्वाज मुनि के पास अपनी माता सहित विदल्ल मंत्री के साथ जाकर छिपे, दैवात् देवी की कृपा हुई। काशीनरेश की कन्या ने सुदर्शन के लक्षण सुन अपना पति सुदर्शन को मन से वर लिया। काशीनरेश ने स्वयंबर किया बेटी ने मने किया, पिता नही माने सब राजाओं को स्वयंबर के लिये बुलाया, बेटी ने माता से कहके सुदर्शन को निमंत्रण दिलवाया, निमंत्रण पाकर माता सहित सुदर्शन आये। स्वयंबर प्रारंभ होने को था कि बेटी ने पिता से प्रतिज्ञा की कि हमारा व्याह सुदर्शन के साथ करदो नहीं प्राण त्याग कर दूंगी। पिता ने हार मान सुदर्शन से व्याह किया। सब राजा लड़े अंतमें हारे, सुदर्शन अयोध्या के राजा भये, राजा रानो सुखी भये। बस यह दूसरी नज़ीर दूसरा पति नहीं किया। (३) भारत आदि पर्व—काशीनरेश की अंबा आदि तीन कन्या भीष्मजी हरलाये, भाईको व्याह करने लगे, तब बड़ी कन्या अंबा ने कहा—मैं शाल्व को पति मान चुकी हूं। भीष्मजी सुनते ही सुरक्षा कर शाल्व के पास भेजदी। शाल्व ने पराई जीती समझ कर स्वीकार नहीं की। लौट कर अंबा भीष्मसे कहने लगी कि मुझे यहीं व्याह दो। भीष्मजी ने पुनर्भू समझकर इनकार कर दिया। यहां तक कि इसी

कन्या विवाह के पीछे भीष्मजी से और भीष्मजी के गुरु परशुरामजी से २७ दिन घोर युद्ध हुआ परन्तु कन्या अंबा को नहीं ब्याहा अंत में वही भीष्मजी के मारने को तप कर मर कर शिखंडी भई उसीको सामने खड़ा कर अर्जुन ने भीष्मजी को मारा। मित्रो, देखो जब वाक्‌दत्ता मनोदत्ता पर यह महाभारत है तो विवाही का पुनर्विवाह कहां से आवैगा। अब विधवा विवाह समर्थकों के ही मन की सुनिये—

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे वा पतितेऽपतौ
पञ्चस्वापत्सु नारीणां पतिरन्यो विधीयते।

पराशर स्मृतिः अ० ४। ३२।

स्त्रीपुंसयोस्तु संबन्धाद्वरणं प्राग्विधीयते।
वरणाद्ग्रहणं पाणेः संस्कारो हि द्विलक्षणः॥
तयोरनियतं प्रोक्तं वरणं दोषदर्शनात्॥

नारद स्मृति।

नष्टेमृते० इस श्लो०—अपतौ लाक्षणिक पति सगाईवाला—पतौ विवाहित भांवरवाला इस पर झगड़ा है। पहले तो पद सिद्धी श्लोक यानी कानून पर विचार कीजिये अगर इसमें संदेह रह जाय तो दोनों पक्ष के दृष्टांत यानी नज़ीरें सुनिये जो लाक्षणिक पति में सब दृष्टांत तुल जाय तो सगाई वाला ठीक है जो विवाहित में लागू हो तो वह ठीक। छल और हठ छोड़िये धर्म पर थिर हो कर ईश्वर के डर से सत्य सत्य निर्णय कीजिये दिल में हाथ धरो सच्ची आवाज़ आवेगी।

वरवृति सगाई।

सिद्धांत कौमुदी तत्वबोधिनी टीका—

नष्टे मृते प्रव्रजिते क्लीवे वा पतितेऽपतौ। अपतौ इत्यत्र, पतिः समास एव। एवकार इष्टतोऽवधारणार्थः। घिसंज्ञः स्यात्। टिप्पणी—कियतेन पतिः समासएव' इतिसूत्रेणेति चेन्न समुदायस्यपतिरूपत्वाभावेन बहुच्पूर्वकपतिशब्दस्यापि घिसंज्ञास्यात् इत्यादि अथकथं सीतायाः पतये नम इति 'नष्टेमृते प्रव्रजिते क्लीवे च पतितेऽपतौ' इति पराशरश्च। अत्राहुः पतिरित्याख्यातः पतिः 'तत्करोति तदाचष्टे' इति णि चि टि लोपे 'अचइः'। इत्यौणादिक इप्रत्यये 'णेरनिटि' इतिणिलोपे च निष्पन्नोऽयं पति शब्दः 'पतिः समासएव' इत्यत्र न गृह्यते लाक्षणिकत्वादिति ॥ पराशरश्चेति ॥ वस्तुतस्तु पराशरस्मृतौतु 'अपतौ' इत्येवच्छेदः। तथा च ईषदर्थकेन नया सह समासे घिसंज्ञा निर्बाधैव। सप्तपदीतः प्राक् ईषत्पतित्वस्यैव सत्वेन "कामंतुक्षपयेद्देहं पुष्पमूलफलैः शुभैः। नतु नामाऽपिगृह्णीयात्पत्यौप्रेते परस्यतु" ॥ (५।१५७) ॥ पाणिग्रहणिकामंत्रा नियतं दारलक्षणम्। तेषां निष्ठातु विज्ञेया विवाहात्सप्तमेपदे (८।२२७) ॥ नोद्वाहिकेषु मंत्रेषु नियोगः कीर्त्यते क्वचित्।

न विवाहविधावुक्तं विधवावेदनं पुनः (९।६५) ॥ अयं द्विजैर्हि विद्वद्भिः पशुधर्मो विगर्हितः। मनुष्याणामपि- प्रोक्तो वेने राज्यं प्रशासति ॥ (६।६६) ॥ समहीमखिलां भुञ्जन्राजर्षिप्रवरःपुरा। वर्णानां संकरं चक्रे कामोपहतचेतनः ॥ (६।६७) ॥ यस्याम्रियेत कन्याया वाचा सत्ये कृते पतिः। तामनेन विधानेन निजो विन्देत देवरः ॥ (६।६६) ॥ इति मनूक्त्या "अद्भिर्वाचा च दत्तायां म्रियेतोर्ध्वं वरो यदि। न च मंत्रोपनीता स्यात्कुमारी पितुरेव सा ॥ इति स्मृत्यन्तरेण च सह न विरोध इतिदिक् ॥५॥ व्याख्यातमिति। वस्तुतस्त्वैतद् व्याकरणानिष्पन्नत्वेनासाध्वेव। तेषां तपोमहात्म्येनासाधुशब्द प्रयोगेऽपिदोषाभावः। स्मृतिपुराणान्तर्गतानां तु तेषामुच्चारणेऽस्माकमपि दोषाभावः। स्वातन्त्र्येण तादृशं प्रयुञ्जानास्तु प्रत्यवयन्त्येव। छन्दोवत्कवयः कुर्वन्ति नैषेष्टिरस्ति" इति नदी संज्ञासूत्रे भाष्योक्तेः। इत्थं यथा कथं चित्साधुत्वाभिप्रायस्य तेषां वाक्येषु कल्पनानौचित्यात्। पराशरस्मृतौपतित्वेनाख्यात एवनतु वास्तवः, सप्तपदीतः प्राक् पतित्वाप्राप्तेरित्येवमर्थसामञ्जस्येपि 'सीतायाः पतये' इत्यत्र तादृगर्थ कल्पनं न सम्यक्। तत्र पतित्वस्य जातत्वेन सर्वं

वाक्यं सावधारणमिति न्यायेन 'आख्यात एव' इत्यर्थ प्रतीतौ तत्रानर्थ संभावनाया अपि प्राप्तेः ॥

प्रश्न–भाषा–नष्ट, मृतक, बाहर गया, क्लीव, पतित, पति हो तो इन पांच आपत्ति होने पर स्त्री का दूसरा पति होना चाहिये।

उ०–यहां दूसरे चरण के आखीर पद में अपतौ है इसके माने यह है कि सगाई होने पर पति का लक्षण उस वर में आ जाता है इससे लाक्षणिक पति कहलाता है। सगाई कहीं कहीं वर्षों तक रहती है उस दशा में अगर वह लाक्षणिक पति नष्ट यानी भ्रष्ट रोगी दुर्दशा आदि हो तो उसकी सगाई छोड़ दूसरे को व्याह दे। (१) जो सगाई किया हुआ पति मर जाय तो भी दूसरे को व्याह दे–(२) प्रव्रजित यानी साधु हो गया या भग गया हो तो भी सगाई करी कन्या दूसरे पति को व्याह दे। (३) जो नामर्द सुनने में आवे तो भी उसकी सगाई छोड़ और दूसरे पति को व्याह दे। (४) यदि हत्यादि करके पतित हो जाय तो भी सगाई छोड़ दूसरे पति को व्याह दे। यह पाचों आपत्ति जो सगाई के पीछे आ जावें तो सगाई छोड़ दूसरे पति को व्याह दे।

प्र०–सात पुनर्भू कन्याओं में वाक्दत्ता मनोदत्ता भी तो है जैसे औरों का व्याह नहीं हो सकता है वैसे ही सगाई वाली का भी आपत्ति आने पर भी व्याह न होना चाहिये।

उ०—ठीक है, न होना चाहिये। आपत्ति होने पर भी उन्हीं पति के साथ व्याह हो जावै इसके तीन दृष्टांत ऊपर कह चुके, (१) सावित्री, (२) सुदर्शन की रानी, (३) अंबा का। अब इस पर नारद स्मृति के वाक्य से स्त्री पुंसयोरित्यादि वाक्य ऊपर लिख चुके है उसका अर्थ यह है स्त्री पुरुष का व्याह संबन्ध के दो भाग हैं, (१) वरण, (२) पाणिग्रहण से लेकर समस्त व्याहरीति। इन दोनों में वर वरण यानी फलदान सगाई अनियत हैं अर्थात् पक्के नहीं, फलदान सगाई के पीछे ये पांचों आपत्ति आ जांय तो कन्या का और पति से व्याह करदे परन्तु दूसरा अंग पाणिग्रहण विवाहादि हो जाने पर यह पांचों आपत्ति आवें तो कभी भी व्याह नहीं हो सकता है और न करना चाहिये।

प्र०—देखो अनेक रीति से 'पतौ' भी हो सकता है सीतायाः पतये कैसे सिद्ध होगा ?

उ०—नहीं २। वस्ततः पराशरस्मृति में 'अपतौ' ऐसा ही पदच्छेद है, ईषत् अर्थ में नञ् से समास होने में घिसंज्ञा बिना बाधा के हो गई। सप्तपदी के पहले तक ईषत्पतित्व रहता है, देखो पराशरजी ने अपनी स्मृति में मनुजी को मान करके उनकी मनुस्मृति का पूरा प्रमाण दिया है, पराशरजी मनुस्मृति के विपरीत कभी नहीं लिख सकते हैं, यदि ईषत् पतित्व न मानोगे तो मनुजी के इन श्लोकों का

अर्थ कहां लेजावोगे। पति मरने के बाद स्त्री शुभ पुष्प फल मूल खाकर अपनी जिंदगी पार करदे परन्तु पति के मरने के पीछे पति की भावना से दूसरे पुरुष का नाम तक भी नहीं लेवे (५। १५७)। पाणिग्रहण के मंत्र दारलक्षण में नियत निश्चित हैं-मंत्रों से व्याह होने से कन्या व्याही हो जाती है उनकी निष्ठा विवाह से सप्तम पद में जानना चाहिये (८। २२७)। विवाह वाले मंत्रों में नियोग कहीं नही कहा गया है। विधवा का फिर विवाह तथा अन्य पुरुष संग कभी भी नहीं हो सकता है (९। ६५)। विद्वान् ब्राह्मणों ने यह पशुधर्म कहा है और बड़ी निंदा की है ऐसा कभी नहीं हुआ है केवल बेन राजा ने मनुष्यों में यह पशुधर्म चलाया था (९। ६६)। वह राजा जब तक रहा पृथ्वी में राज करके कामवश होकर सब वर्णों को मिलाकर वर्णसंकर कर दिया (९। ६७)। अंत में मुनियों ने समझाया किन्तु नहीं माना तब शाप देकर मार डाला। पीछे उपद्रव होते देख कर उसी का मृतक शरीर मथने से ईश्वर ही पृथुरूप से प्रगट हुए और अधर्म प्रचार होने के कारण भूखों मरती हुई प्रजा का पृथ्वी को दुह कर पालन किया (श्रीमद्भागवत चतुर्थ स्कंध अ० १७। १८)। सगाई होने पर जिस कन्या का पति मर जाय तो व्याह की विधि से उसके देवर को व्याह दी जाय (९। ६९)। यह सब मनुजी कहते हैं। मन

वाणी से दीगई कन्या के, पति मरने पर यदि उसका मंत्र द्वारा व्याह नहीं हुआ है तो वह कन्या बाप की है यह दूसरी स्मृति कहती है। इन बचनों से विरोध नहीं होना चाहिये। जो व्याही कन्या के पती का अर्थ लावोगे तो इन बचनों में विरोध हो जायगा जो मंत्र से व्याही कन्या का पुनर्विवाह का नाम भी लिया जाय। यथार्थ में 'सीतायाः पतये' व्याकरण की रीति से ठीक नहीं है परन्तु तपस्वी महात्मा को उलटा शब्द कहने में दोष नहीं है—स्मृति पुराणों में उनके बचन वैसे ही पढ़ने में हम को भी दोष नहीं है। मुनि लोग स्वतंत्र हैं उनके बचन वेद के तुल्य गिने जाते हैं परंतु ऐसा ही सब कोई करे यह इष्ट नहीं है। नदी संज्ञासूत्र में भाष्य में कहा है—मुनियों की कल्पना अनुचित नहीं मानी जाती है पराशर स्मृति में पतित्व यानी पति का भाव कहा गया है यथार्थ में वह व्याहा पति नहीं है—सप्तपदी के पहले तक पूरा पतित्व भाव नहीं होता है इससे 'सीतायाः पतये' यह ऋषि वाक्य है यह दृष्टांत देकर तुम्हारा व्याहा पति सिद्ध करना झूंठ है केवल लाक्षणिक पति की ही संभावना है झूंठे अनर्थ की संभावना मत करो, पराशरजी ने केवल वाचादत्त मनोदत्त यानी सगाई वाली कन्या को ही कहा है। यह शास्त्रार्थ का नमूना है सामने आने पर खज़ाना खुलेगा, आओ तो सही, दबो मत, शास्त्र कुंजरे का गल्ला

नहीं—साहूकार का पक्का खाता है जब चाहे समझ लीजिये।

प्रश्न—'नष्टे मृते' इस श्लोक के 'पतौ' इस पद में विवाहिता ही के मरे पति को कहा है—नष्ट मृत आदि पर भी प्रमाण देखो—

मनु० अ० ९। ७६—प्रोषितो धर्मकार्यार्थं। अष्टौ वर्षाण्युदीक्षेत अ० १२-९८। भारत भीष्म पर्व अ० ९१—अर्जुनस्यात्मनः श्रीमानिरावान्नाम वीर्यवान्। पद्म पुराण भूमिखंड अ० ८५—प्लक्षद्वीपेमहाराज, दिव्यादेवीतिविख्याता। पूरा प्रसंग प्रश्नों के उत्तर में पूर्वापर सहित आवैगा इससे पिष्टपेषण नही है।

भाषा—नष्ट मृत आदि पांच प्रकार की आपत्ति में ब्याही कन्या का विषय है सगाई वाली का नहीं। मनु० अध्याय ९ श्लो० ७६ में—धर्मकार्यार्थ से जिसका पति परदेश गया हो वह आठ वर्ष, विद्या और यश के लिये गया हो तो ६ वर्ष काम के लिये बाहर गया हो तो तीन वर्ष परखै, अ० १२ श्लो० ९८—आठ वर्ष ब्राह्मणी परदेशी पति को परखै, जिसके पुत्र नहीं वह चार वर्ष परखै पीछे दूसरे का सहारा लेले। और भी स्मृतियों में पाया जाता है—अर्जुन ने नागकन्या ब्याही, पद्मपुराण में दिव्यादेवी का कई वार स्वयंबर भया, भारत में दमयंती के पुनः स्वयंबर को ऋतुपर्ण बुलाये गये। राम ने तारा का सुग्रीव से, मंदोदरी का

विभीषण से व्याह करा दिया—इत्यादि पांचो आपत्ति में प्रमाण मिलते हैं तुम सगाई में जबरदस्ती खींचते हो।

उ०—सज्जनों, देखिये मंत्र श्लोक वही है परन्तु ऊपर नीचे का प्रसंग छोड़ देने से श्लोक का दूसरा अर्थ मालूम होता है १। श्लोक में चरण छोड़ देने से दूसरा अर्थ भान होता है २। चरण में एक पद ले भागने से अनर्थ प्रतीत होता है ३। पद में अर्थ तोड़ फोड़ कर मन गढ़ंत अर्थ खींचने से दही का अर्थ हँसिया हो जाता है ४। मित्रो, पाठक गण, यह धर्म का विषय है धर्मस्य सूक्ष्मा गतिः। धर्म की सूक्ष्म गति होती है, हठ छोड़ कर ऊपर नीचे के श्लोकों का भाव लेकर और श्लोक में चारों चरण का अर्थ समझ कर पद में अक्षरों का समयानुकूल उचित अर्थ जो वहां ठीक लगता हो किया करो। जैसे 'सैधव' इस पद का एक अर्थ सेंधा निमक और दूसरा अर्थ सिंधु देश का घोड़ा है। मित्रो, भोजन के समय यदि कोई 'सैधवमानय' कहे और सुनने वाला सेंधा निमक लेजाय तब तो ठीक ही है, किन्तु उसका अर्थ घोड़ा भी है ऐसा समझ कर सेंधिया घोड़ा लेकर खड़ा कर दे तो बिगड़ गया। इसी प्रकार सवारी के समय कोई कहै 'सैंधवमानय' और नौकर सैंधव के अर्थ सेंधा निमक भी है ऐसा समझ कर सवारी के समय सेंधा निमक का ढेला ले आवै तो पद का अर्थ ठीक होते हुए भी काम

बिगड़ जायगा। बस इन्हीं बातों का ध्यान रखना परम आवश्यक है।

पांच प्रकार के धर्म भी अधर्म कहे गये हैं। भागवत सप्तम स्कन्ध कर्म पञ्चाध्यायी—

विधर्मः परधर्मश्च आभास उपमा छलः। अधर्म शाखाः पञ्चेमाः धर्मज्ञोऽधर्मवत्त्यजेत् ॥ १२ ॥ धर्मबाधो विधर्मः स्यात्परधर्मोऽन्यचोदितः। उपधर्मस्तु पाषण्डो दम्भो वा शब्दभिच्छलः ॥ १३ ॥ यस्त्विच्छया कृतः पुंभिराभासो ह्याश्रमात्पृथक् ॥

भाषा—विधर्म, परधर्म, उपमाधर्म, छलधर्म, आभासधर्म ये पांच धर्म भी अधर्म की शाखा हैं, धमज्ञ पुरुष इन पांचों धर्मों को अधर्म की तरह त्याग करे। १ विधर्म—अपने वर्णाश्रम के अनुसार कहे गये धर्म में जिस धर्म से बाधा पड़े वह विधर्म है, २ परधर्म—दूसरे का धर्म दूसरे और को समझाना यह भी अधर्म है। ३ उपमाधर्म—पाखंड है जो केवल दिखावा भर को है भीतर से उसके करने में न तो श्रद्धा है न निष्ठा है, दुनिया को राजी कर ठगने को जो किया जाय वह उपमाधर्म पाखंड है। ४ छलधर्म-शब्दभित् यानी अक्षरों को तोड़ फोड़ ऐंठ मरोड़ कर अपना मतलब निकालना जैसे 'देवताऽंविद्वांसः' देवता विद्वान है, यहां यह कहना कि विद्वान ही देवता हैं अर्थात् देवता और नहीं है इसी प्रकार

अर्थ का अनर्थ करना यह छलधर्म अधर्म है। ५ आभास-धर्म—जो धर्मशास्त्र की मर्यादा को छोड़ कर चारों आश्रम से अलग अपनी इच्छा से मनमानी करे और कहे कि यही धर्म है वह आभासधर्म अधर्म है। इन पांचों धर्मों को अच्छी तरह जांच कर अधर्म से बचिये और ऊपरी प्रश्नों के उत्तर सुनने की कृपा कीजिये।

मनुः ९। ७६ के आगे पीछे का प्रसंग देखिये केवल प्रोषितो धर्म० इस श्लोक को ही लेकर मत भागिये—मनु अ० ९—विधायवृत्तिंभार्यायाः प्रवसेत्कार्यवान्नरः। अवृत्ति-कर्षिता हि स्त्री प्रदुष्येत्स्थितिमत्यपि॥ ७४॥ विधाय-प्रोषितो वृत्तिं जीवेन्नियममास्थिता। प्रोषितेत्वविधा येव जीवेच्छिल्पैरगर्हितैः॥ तिलक—भक्ताच्छाद-नादि दत्वा पत्यौ देशान्तरं गते देहप्रसाधनपरगृह-गमनरहिता जीवेत। अदत्वा पुनर्गते सूत्र निर्माणा-दिभिरनिन्दितशिल्पेन जीवेत॥ ७५॥ प्रोषितोधर्म-कार्यार्थं प्रतीक्ष्योऽष्टौ नरः समाः। विद्यार्थंषट् यशोर्थं वा कामार्थं त्रींस्तुवत्सरान्॥ ति०—प्रोषित इति गुर्वाज्ञा संपादनादिधर्मकार्यनिमित्तं प्रोषितः पतिरष्टौ वर्षाणि पत्न्या प्रतीक्षणीयः ऊर्ध्वं पति संनिधिं गच्छेत् तदाह वशिष्ठः प्रोषितपत्नी पञ्चवर्षाण्युपासीत, ऊर्ध्वं पतिसकाशं गच्छेत॥ ६७॥ यदिधर्मार्थाभ्यांप्रवासं

मत्यनुकामा न स्यात् यथाभेत एवं वर्तितव्यं स्यात्॥ ६८ इति ॥ विद्यार्थं मोषितः षट वर्षाणि प्रतीक्ष्यः। निजविद्याविभाजनेन यशोऽर्थमपि मोषितः पतिः षड़ेव। भार्यान्तरोपभोगार्थं गतस्त्रीणि वर्षाणि, उर्ध्वं पतिसंनिधिं गच्छेत् ॥ ७६ ॥ संवत्सरं प्रतीक्षेत द्विषंतीं योषितं पतिः। ऊर्ध्वं संवत्सरस्त्वेनां दायं हृत्वा न संवसेत् ॥ ति०—संवत्सरमिति—पतिर्विषयसंजातद्वेषां स्त्रियं वर्षं यावत्प्रतीक्षेत। नत ऊर्ध्वमपि द्विषन्तीं स्वदत्तमलंकारादि धनं हृत्वानोपगच्छेत्। ग्रासाच्छदानमात्रं तु देयमेव ॥ ७७ ॥ इत्यादि ॥

भाषा—स्त्री का पति अपनी स्त्री के भोजन वस्त्र का पूर्ण निर्वाह करके परदेश जाय जिसमें पति के परदेश से आने तक स्त्री को भोजन वस्त्र का दुःख न हो। पति के परदेश चले जाने पर उसकी स्त्री अपने शरीर का शृङ्गार न करै, शृङ्गार करने से पति के मिलने की इच्छा होगी। पति जिसका परदेश में है ऐसी स्त्री दूसरे के घर में उत्सव आदि में न जाय क्योंकि वहां औरों के शृङ्गार, गान तान व्यवहार देखकर विदेशी पति की स्त्री का मन खराब होगा। निज घर में भी हँसी दिल्लगी किसी से न करे, पातिव्रत धर्म पालन कर विदेशी पति के आने का समय पूरा करे, यदि जीविका का बंदोबस्त पति न कर गया हो या बीच ही

में खर्च कम हो जाय तो विदेशी की स्त्री जीविका के लिये सूत कातना इत्यादि करके अपनी गुजर करे जिससे संसार में निंदा न हो, जिसके करने से विदेशी की स्त्री की निंदा हो वह न करे ॥ ७५ ॥ किसी धर्म कार्य जैसे तीर्थ यात्रा या और कोई धर्मकार्य से परदेश गया है तो आठ वर्ष तक विदेशी की स्त्री उसकी राह देखे, आठ वर्ष के बाद विदेश ही में अपने पति के पास चली जाय। इस पर वशिष्ठ स्मृति पृष्ठ ७४ में लिखा है कि विदेशी की स्त्री पांच वर्ष तक पति के आने की रास्ता देख कर पांच वर्ष के पीछे विदेश में अपने पति के पास चली जाय और वशिष्ठजी यह भी कहते हैं कि जो स्त्री न जाना चाहे या पति का पता न लगे तो विधवा स्त्री की तरह निर्वाह कर जन्म पार करे। विद्या के लिये पति विदेश गया हो तो ६ वर्ष परखै, यश के अर्थ गया हो तौ भी ६ वर्ष परखै, किसी दूसरी स्त्री में फँस कर न आया हो तो तीन वर्ष परखै, इसके उपरान्त पति के पास चली जाय नहीं तो विधवा की भांति वशिष्ठजी के कहने पर निर्वाह करै यही संमत मनुजी का है ॥ ७६ ॥ अब पति से जो स्त्री गुस्सा होकर अपने पिता के घर से न आवै तो द्वेष करने वाली स्त्री को साल भर पति परखै, और उसको बार २ बुलावै यदि कई बार बुलाने पर भी न आवे तो अपना दिया गहना जेवर सब ले लेवै, केवल भोजन

कपड़ा देवै ॥ ७७ ॥ इसी तरह कई स्मृतियों में लिखा है यह बात दूसरी है कि आजकल की शुद्ध की गई या बनावटी वशिष्ठ व्यास आदि के नाम से चाहे जो कुछ कहदो, और क्षेपते के श्लोकों का प्रमाण दो, और कहो यही ठीक है तब 'यन्मनुरवदत्तद्भेषजमिति' जो मनुजी कहैं वह दवा है 'मन्वर्थ विपरीता या सा स्मृतिर्न विशिष्यते' मनुस्मृति के अर्थ से जो स्मृति का अर्थ विपरीत है वह स्मृति माननीय नहीं है इससे और स्मृतियों के वचन जो विदेशी पति के पास जाने या विधवा की तरह जन्म पार करने के सिवाय दूसरा अर्थ कहैं भी तो मानने योग्य नही हैं। मित्रो, विचार करो जिस मनुस्मृति के प्रमाण पर आप नष्ट या प्रव्रजित पति होने पर दूसरा विवाह कराते थे वह तो सिद्ध नहीं भया इसमे दुराग्रह छोड़ो तो शीघ्र समझ जावोगे। अब नष्ट पतित और प्रव्रजित होने पर भी अपने प्राचीन पति ही से मिलने का उदाहरण सुनिये—भागवत नवम स्कंध अ० ६—में सौदास राजा वशिष्ठ के शाप से १२ वर्ष तक राक्षस रहे परन्तु रानी ने दूसरा व्याह नहीं किया, उस बारह वर्ष के अन्तर्गत राक्षसी दशा में कोढ़ में खाज एक ब्राह्मणी का शाप होगया जिससे स्त्री को छूते ही मर जांय। १२ वर्ष पश्चात सौदास राजा राक्षस से शुद्ध हुए और प्रायश्चित्त कर राज्य पाई पर ब्राह्मणी के शाप से रानी के पास जाने में लाचार हो गये।

सौदास राजा की रानी मदयन्ती ने दूसरा विवाह नहीं किया था ॥ १ ॥ रामायण—श्रीरामजी को प्रव्रजित साधु होकर बन जाने में सीताजी के दूसरे व्याह को दशरथ या जनक ने या स्वयं सीताजी ने बातचीत नहीं चलाई ॥ २ ॥ स्कंध पुराण एका०—पं० ललित गंधर्व शाप से राक्षस हो गया, उसकी स्त्री का नष्ट पति होने पर भी दूसरा व्याह नहीं हुआ, बेचारी ने राक्षसपति के पीछे मारी २ फिर कर बड़ा दुःख उठाया, अंत में मुनि की दया से उसके सत से उसके पति का उद्धार हुआ ॥ ३ ॥ भारत आदि पर्व—सत्यवती के पुत्र चित्रांगद विचित्रवीर्य के मरने पर अंबिका अंबालिका रानियों का दूसरा व्याह क्यों न कर दिया गया, तब क्या यह श्लोक नहीं था ॥४॥ पांडु को शाप होने पर कुंती माद्री का दूसरा व्याह क्यों नहीं भया ? नियोग तो आप भी निंद्य मानते हैं इसी से यह चाल है। ऐसी ऐसी सैकड़ों नज़ीरें हैं सामने आवो तो मज़ा चखो। अगर कहो कि 'कलौ पाराशर स्मृतिः' कलियुग के लिये पाराशर स्मृति है तो ५०२६ वर्ष कलियुग की बीत गई कहीं एक भी विधवा विवाह लिखा दिखलावो या तुम्हारे बाप दादा परदादा सरदादा किसी ने भी किया हो तो कहो, अगर यह कहो कि वे तो ओल्ड-फूल (पुराने बेवकूफ) थे हम यह शास्त्र नहीं मानते है तो आप सच्चे सपूत हैं, करो मनमानी, पर शास्त्र के नाम से तो मुँहकी खावोगे।

प्रश्न—नष्ट आदि चार को तो हम भी नहीं कहते हमारा तो 'मृते' (मरे) पति पर कहना है, देखो भारत भीष्म पर्व अ० ९१ में अर्जुन ने नागकन्या से ब्याह किया उसमें इरावान लड़का पैदा हुआ ऐसे ही सब कोई करो।

उ०—महाभारत भीष्म पर्व अ० ६१—अर्जुनस्यात्मजः श्रीमान्तिरावान्नाम वीर्यवान। सुतायां नागराजस्य जातः पार्थेन धीमता ॥७॥ ऐरावतेन सादत्ता ह्यनपत्या महात्मना। पत्यौ हते सुपर्णेन कृपणादीनचेतना ॥ ८ ॥ भार्यार्थं तां च जग्राह पार्थः कामवशानुगाम्। एवमेषसमुत्पन्नः परक्षेत्रेऽर्जुनात्मजः ॥ ६ ॥ स नागलोके संवृद्धो मात्रा च परिरक्षितः। पितृव्येन परित्यक्तः पार्थद्वेषाद्दुरात्मनः ॥ १० ॥ इन्द्रलोकं जगामाशु श्रुत्वा तत्रार्जुनंगतम् ॥ ११ ॥ न्यवेदयत चात्मानमर्जुनस्यमहात्मनः। इरावान्नस्मिभद्रंते पुत्रश्चाहं तत्रप्रभो ॥ १२ ॥ मातुः समागमोयस्तु तत्सर्वं प्रत्यवेदयत्। तच्च सर्वं यथा वृत्त मनुसस्मार पांडवः ॥ १४ ॥ युद्धकाले त्वयास्माकं सह्यं देयमिति प्रभो। बाढ़मित्येव मुक्त्वा च युद्धकाल इहागतः ॥ १७ ॥

भाषा—अर्जुन का इरावान् नामक पुत्र नागराज की कन्या में अर्जुन से पैदा हुआ है। गरुड़जी ने उसके पति को मारा तब दीन कृपिण पुत्रहीन वह कन्या नागराज से दी गई ॥ ८ ॥ पार्थ ने काम के वशीभूत उस नागराज की

कन्या को भार्या के अर्थ में ग्रहण किया यह अर्जुन का पुत्र परक्षेत्र (दूसरे के क्षेत्र) में पैदा हुआ है ॥ ९ ॥ नागलोक में ही वृद्धि पाई, रक्षा किया गया—अर्जुन के बैर से चाचा ने उसे त्याग दिया ॥ १० ॥ अर्जुन को इन्द्रलोक में गया सुन कर वहां जाकर मिला, अपने को अर्जुन का बेटा बतलाया, मेरा इरावान नाम है, मैं आपका पुत्र हूं ॥ १३ ॥ अपनी माता के समागम का सब वृत्तान्त पेश किया तब सुन कर जैसा २ हाल कहा अर्जुन ने याद किया ॥ १४ ॥ कहा अच्छा युद्ध में आना मदद करना, वह हां करके चला गया और युद्ध में आकर लड़ कर मर गया ॥ १७ ॥ ऐसे ही भीमसेन का हिडंबा से उत्पन्न घटोत्कच भी लड़ा मरा ।

मित्रो, उसी स्थान में दो श्लोक तो आप पढ़ के प्रमाण देते है पर ज़रा उसके अगाड़ो के श्लोकों पर विचार कीजिये जिनमें परक्षेत्रे लिखा है, कामवशगा पद भी है । मित्रो, जब उस नागकन्या को जो काम के वश है पिता ने दी है विवाह का वहां भी जिकर नहीं है, उसका मनोर्थ पूरा कर दिया उसमें पुत्र भी हुआ, वहां लिखा है पराये क्षेत्र में पुत्र हुआ । देख लो वह नागकन्या अर्जुन की स्त्री नहीं हुई परक्षेत्र कहा है प्रमाण पढ़ लो । फिर उस कन्या को न तो अर्जुन के पास रहना, ससुराल आना जाना कुछ हाल नहीं है खाली महाभारत युद्ध का हाल सुन नागलोक से उस नागकन्या

का इरावान पुत्र जो अर्जुन से पैदा हुआ था लड़ाई में मारा गया यह कथा निकली और कहीं विवाहादि की कथा का नाम तक नहीं है। जिन देशों और जिन जातियों में विधवा विवाह होता हो उनका क्या ज़िकर पर नियम उनमें भी नहीं है कि होना चाहिये, कोई गई बीती कामवश भले ही करले तहां शर्त रहती है कि जो मेमसाहेबा दूसरा साहेब करैं तो मेरी रियासत की मालिकिन नहीं होवैं। मित्रो, इसी पर कानून बनाते हो? फिर देखो 'अपथे पदमर्पयन्ति हि श्रुतिवन्तो पि रजो निमीलिताः'-पढ़े लिखे धर्मशास्त्र जानने वाले सदाचारी भी चूक जाते हैं जैसे बृहस्पति, विधि। जब रजोगुण तमोगुण दिल में छा जाता है तभी खोटे रास्ते में पैर धरते हैं इस पर बहुत दृष्टांत हैं क्या वे प्रमाण हो सकते हैं? कभी नहीं। अगर जज या कलक्टर कुरीति करैं तो क्या कानून बन जायगा? हरगिज़ नहीं। अगर अर्जुन ने किया भी तो कुछ अच्छा नहीं माना न इस गर्ज से कि आगे को रवाज या चलन हो जाय इस पर अर्जुन ही का बचन सबूत है।

पहले नागकन्या से पुत्र हुआ पीछे भारत युद्ध हुआ अगर आजकल के अधर्म के ठेकेदारों की तरह विधवा विवाह चलाना होता तो अर्जुन वीर धर्म से भय खाकर आंसू बहाते हुए यह कभी न कहते-गीता अ० १-कुलक्षये

प्रणश्यंति कुलधर्मा सनातनाः। धर्मेनष्टे कुलं कृत्स्नम-
धर्मोऽभिभवत्युत ॥ ४० ॥ अधर्माभिभवात्कृष्ण प्रदु-
ष्यन्ति कुलस्त्रियः। स्त्रीषु दुष्टासु वार्ष्णेय जायते
वर्णसंकरः ॥ ४१ ॥ संकरो नारकायैव कुलघ्नानां
कुलस्य च। पतन्ति पितरो ह्येषां लुप्तपिंडोदक-
क्रियाः ॥४२॥ दोषैरेतैः कुलघ्नानां वर्णसंकरकारकैः।
उत्साद्यन्ते जातिधर्माः कुलधर्माश्च शाश्वताः ॥ ४३ ॥
उत्सन्न कुलधर्माणां मनुष्याणां जनार्दन। नरके नियतं
वासो भवतीत्यनुशुश्रुम ॥ ४४ ॥

भाषा-गी० अ० १ में अर्जुन कृष्ण से कहते हैं—लड़ाई में राजकुलों का नाश हो जायगा, राजकुल का नाश होने से सनातन कुलधर्म नाश हो जायगे, 'सब कुलधर्म नाश होने पर अधर्म होगा ॥ ४० ॥ अधर्म बढ़ने से कुलस्त्री दूषित होंगी। स्त्रियों के दुष्ट हो जाने पर वर्णसंकर पुत्र पैदा होंगे ॥ ४१ ॥ वर्णसंकर पुत्र जिन्होंने वे सब कुल नाश किये हैं उन नाश करने वालों को भी नरक ले जावेंगे। इन सब के पितरों की पिंडदान क्रिया बन्द हो जायगी, वर्णसंकर के हाथ का पिंड पितरों को नहीं मिलता है (इसी से यारों ने श्राद्ध ही उड़ा दी है) ॥ ४२ ॥ कुलनाशकों के वर्णसंकर करनेवाले इन दोषों से कुलधर्म जातिधर्म सभी लोप हो जायगे ॥ ४३ ॥ कुलधर्म नाश करने वाले मनुष्यों

का नरक में अवश्य वास होता है, ऐसा मुनियों से सुना है।

सज्जनों, अगर अर्जुन यह समझते कि हमने तो विधवा ब्याही है यही प्रथा चला दो तो यह रोना क्यों रोते? इससे प्रगट होता है कि अर्जुन की सम्मति विधवा विवाह में छू तक नहीं गई थी, वे विधवा विवाह को बुरा समझते थे। किसी से बुराई हो जाय तो उसका कानून नहीं बनावेगा और न उस नजीर से कानून बन सकता है यह आपका कहना हवा में गांठ लगाना है वंध्यापुत्र का वर्णन है।

प्रश्न—यह ठीक है पर जिस डर से अर्जुन ने कहा था वह भारत युद्ध तो हुआ ही, कुल नाश तो हो ही गये, तो अर्जुन का कहना कहां रहा?

उ०—प्यारे मित्रो, विचार करो इन्हीं अर्जुन के वचनों पर श्रीकृष्णजी ने गीता का उपदेश कर नियत कर्म यानी जिस वर्णाश्रम का जो धर्म कर्म है वह अपना २ करैं यह धर्म-शिक्षा दी। क्षत्री का धर्म युद्ध करना है, युद्ध का फल जीत हार, उस पर क्षत्री ध्यान न दे फल त्याग कर अपना धर्मयुद्ध करैं, वही अर्जुन ने किया, मरनेवाले अपने कर्मों से मारे गये, इन सब दलीलों से क्या, आप का इष्ट विधवा विवाह तब भी तो सिद्ध न हुआ। अब ५०२६ वर्ष के बाद इरावान के स्थानापन्न शिर उठाते हो, याद रक्खो न कहीं गरुड़ गये न गरुड़ध्वज कहीं गये और सुदर्शन चक्र तो चमक

ही रहा है, सँभल जाओ, रास्ते में आओ, ऋषि सन्तान हो, विदेशी माता के आश्रय से मत कूदो, रावण ने भी शूर्पणखा का व्याह नहीं किया तब क्या आप और आपकी मण्डली उससे भी बढ़ जाने का विचार करती है।

प्रश्न—पद्म पु० भूमिखंड अ० ८५ में तो प्लक्ष द्वीप के बासी दिवादास की बेटी दिव्यादेवी का २१ बार व्याह फिर भी स्वयम्बर हुआ तुम एक मे दो बार को भी मना करते हो अवश्य पुनर्विवाह होना चाहिये यह अकाट्य प्रमाण है।

उ०—मित्रो, देखो जम्बू प्लक्ष शाल्मलि इत्यादि सात द्वीप हैं, यदि पुराण मानोगे तो सब पुराण और उनमें जो लिखा है सब मानना पड़ैगा, मीठा २ गप्प कडुवा २ थू नहीं होगा। जम्बू द्वीप एक लक्ष योजन उसके आसपास चार समुद्र एक लक्ष योजन का घिरा हुआ है, फिर प्लक्ष द्वीप दो लक्ष योजन का उसको दो लक्षयोजन का समुद्र घेरे है, इसी तरह पांचोद्वीप एक दूसरे से दूने और दूने प्रमाण वाले समुद्र से घिरे है। देखिये जम्बू द्वीप मे नवखंड भारत, हरिवर्ष इत्यादि हैं जो इस समय नाम पलटकर एशिया, चीन, रूस, अरब, यूरोप आदि नाम से प्रख्यात है। मित्रो विचारो जब जंबू द्वीप ही के भारतादि सब खंडों की व्याह की रीति नहीं मिलती है अंग्रेज, रूस, अरबबासी, मुसलमानों, चीन और जापान सब की

रस्म रिवाज पृथक् २ हैं, तब प्लक्ष द्वीप जो कि दूसरा द्वीप एक लक्ष योजन खार समुद्र के बाद में है उसके राजाओं की रीति और भारतवासियों के व्याह से कैसे मेल हो सकता है? भारत में भी द्विजाति का कन्यादान व्याह वेद मंत्रों से होता है शूद्रअन्त्यज का साधारण होता है इसी से उनमें पुनर्विवाह भी होता है, द्विजाति में आत्मा से आत्मा का और शरीर से शरीर का व्याह दो भाग में होता है शरीर छुटने पर पुरुष का आत्मा स्त्री के सत से उत्तम लोक में रहता है। अद्धा नोट जैसे मर्द का चालान करदो पीछे स्त्री का आत्मा अद्धा नोट सतसाधन कर देह छोड़ कर दिव्यदेह लेकर अपने उसी पति से मिल कर सदा के लिये अमर हो परमसुख भोगना है। यदि पुनर्विवाह करा दोगे तो स्त्री का आत्मा और उसके पति और पिता माता के दश दश दश पुश्त के पुरुषा नरक में जांयगे।

प्रश्न–आप ने हमारी बात का तो उत्तर दिया नहीं ऊपर की बातों से समझा दिया प्रश्न का उत्तर तो दो दिव्यादेवी के विवाह का क्या उत्तर है कहिये?

उ०–अच्छा साहब लीजिये, पद्मपुराण भूमिखंड में अ० ८५ को ही न पढ़िये प्रसंग को लेकर ८६ अ० भी पढ़ना होगा। प्रथम ८५ की बात देखो पूरी कथा में विस्तार है मार्के की बात लो, अगर सामने आवो तो पूरी खावो।

दित्यादेवीति विख्याता० अस्या विवाहकालेतु चित्र-सेनोदिवं गतः ॥ ६१ ॥ अनुद्वाहितायाः कन्याया उद्वाहः क्रियते बुधैः ॥ ६४ ॥ भर्ता च म्रियते काले प्राप्ते लग्नस्य सर्वदा। एकविंशतिभर्तारः काले २ मृताः पितः ॥ ७० ॥ तस्यास्तु रूपसंमुग्धा राजानो-मृत्युनोदिताः। संग्रामंचक्रिरेमूढास्ते मृताः समरांगणे ॥ ७३ ॥ दिव्यादेवी सुदुःखार्त्ता गता सा वन-कंदरम्। रुरोद करुणंबाला० इत्यादि।

पद्मपुराण के ८५ अध्याय में विष्णुजी कहते है तथा उज्वल तोता अपने बाप कुंजल से भी पूछता है कि पिताजी मैं प्लक्ष द्वीप गया वहां दिवोदास राजा की कन्या दिव्यादेवी का हाल सुना, दिव्यादेवी के विवाह के समय उसका वर चित्रसेन मर गया बाप ने पंडितों से पूछा, पंडितों ने कहा अनुद्वाहित अर्थात् सगाई की हुई जिसका व्याह नहीं हुआ उसका पुनर्विवाह हो सकता है। राजा ने फिर किया। कहां तक कहें जब २ पिता व्याह पका करता है लग्न के समय वर मर जाता है। २१ बार लग्न के समय वर मरते गये। अन्त में स्वयंबर किया बहुत राजा बुलाये कन्या बरने को निकली उसके रूपमें मोहित होकर सब राजा लड़ कर मर गये, दिव्यादेवी रोकर बन में कंदरा में जाकर तप करने लगी। इसका क्या कारण है। यह ८५ अध्याय की कथा

है। मित्रो, ज़रा आंखें खोलो इसमें कैसा लिखा है बातें न बनाओ ऋषियों के श्लोकों में नुक़्ताचीनी मत करो इनका लिखना आर्ष कहा जाता है, वेद के तुल्य प्रमाण हैं, इसमें सगाई ही सिद्ध हुई, विवाह होना सिद्ध नहीं हुआ, बस हो गया अकाट्यपन, चुप हो गये जरा तो शरम खाओ अब आगे के अध्याय की कथा सुनो—

अ० ८६। कुंजल उ०—तस्यास्तुचेष्टितं वत्स दिव्या-देव्या वदाम्यहम्॥ अस्तिवाराणसी पुण्यानगरी, सुवीरो नामनामतः॥२॥ वैश्य जात्यांसमुत्पन्नो तस्य भार्यामहाप्राज्ञ चित्रा नाम, कुलाचारं परित्यज्य अनाचारेण वर्तते। न मन्यते हि भर्तार स्वैर वृत्या प्रवर्तते॥४॥ नित्यं परगृहेवासो रमते सा गृहेगृहे॥ साधुनिंदापरा०॥ स तां त्यक्त्वामहाप्राज्ञ उपयेमे महामतिः॥ अन्यवैश्यस्य कन्यां०॥८॥ दुष्टानां संगतिं प्राप्ता—दूतीकर्म चकाराथ। गृहभंगं चकाराथ। साध्वीं नारीं समाहूयपापवाक्यैः सुलो-भयेत्॥ ११॥ एवं गृहशतं भग्नं—अकारयच्च संग्रामं यमग्रामविवर्धनम्। तस्सत्कर्म विपाकोऽयं तया भुक्तो द्विजोत्तम॥ उज्ज्वल उ० केनपुण्यप्रभावेन दिव्यादा सस्य वैसुना॥ कुंजल उ०॥ भ्रममाणो महाप्राज्ञः कश्चित्सिद्धः समागतः। क्षुधापनोदनार्थं हि भुज्य-

तामन्नमुत्तमम् ॥ एवं सन्तोषितः सिद्धो गतस्तत्वार्थ दर्शकः । साचित्रा मरणं प्राप्ता स्वकर्मवशमागता । शासिता धर्मराजेन महादंडैः सुदुःखदैः ॥ ३७ ॥ साचित्रा नरकं प्राप्ता वेदनाज्ञातदायकम् । भुंक्ते दुःखं महाराज सहचैयुगमहस्रकम ॥ ३८ ॥ पूर्वं संपूजितः सिद्धस्तया पुण्यवतां वरः । तस्य कर्म विपाकोऽयं दिवोदासस्यवैगृहे ॥ ४० ॥ पापकर्म प्रभावाच्च गृहभंगान्महीपते। विधवात्वं भुंजते सा दिव्यादेवी सुपुत्रक ॥ ४४ ॥ इति

पुत्र ने पूछा यह क्यों ? बाप कहता है कि उस जन्म में यह एक वैश्य की स्त्री थी चित्रा नाम था पति को छोड़ व्यभिचार किया फिर कुटनी हो सैकड़ों सती स्त्रियों का धोखे से धर्म नाश कराया सैकड़ों पुरुषों में लड़ाई करा कर सैकड़ों घर नाश किये इससे मर कर नर्क भोगा फिर ब्याह समय पति मर गये विधवा की विधवा रही। चित्रा ने एक साधु ज्ञानी को भोजन दिया उसके फल में राजकन्या तो हुई पर जमा यमपुर में भोग, ब्याज में यह दुर्दशा हुई। मित्रो, चेतो इसी नज़ीर से विधवा विवाह कराते हो ?

प्रश्न—दमयन्ती का स्वयंबर भारत बनपर्व अध्याय ६९ में भया है यहां क्या कहते हो ?

उ०—पूरा प्रसंग बड़ी पुस्तक में पढ़ो, संक्षेप से यह है

कि नल जब दमयन्ती को छोड़ चले गये वह पिता के घर पहुंची, ब्राह्मणों से नल को ढुंढवाया, अयोध्या में पता पाकर अपनी माता से बोली कि पिताजी से न कहना मैं स्वयम्बर के बहाने ऋतुपर्ण को बुला कर अपने पति नल की जांच करूंगी। स्वयंबर का बहाना कर राजा को बुलाया। सौ योजन नल बाहुक रथ एक दिन में लाये। नल को आया सुन दमयन्ती ने परीक्षा कराई अंत में मा बाप से कह कर नलबाहुक को गृह में बुलाया। साधुवेष जटा गेरुआ वस्त्र पहने दमयंती नल बाहुक से पूछती है कि व्याह में न छोड़ने की प्रतिज्ञा कर चले जाने वाले राजा नल को आप जानते हैं? नल बाहुक ने कहा कि आप तो स्वयंबर करती है उन्हें क्या करोगी। बहुत बात के पीछे दमयती ने प्रतिज्ञा की। वन पर्व अ० ७५। ३२ से बहुत श्लोक–अयंचरति लोकेस्मिन्भूत साक्षी सदागतिः॥ एषमे मुंचतु प्राणान यदिपापं चराम्यहम्॥ ३२॥ तथा चरति तिग्मांशुः परेण भुवनंसदा। समुंचतु मम प्राणान् यदि पाप चराम्यहम्॥ चंद्रमाः॥ वायुदेवता सूर्य चन्द्रमा आदि सब देवता साक्षी है जो मैंने मन से भी परपुरुष की इच्छा की हो तो मेरा प्राण छूट जाय। अत में आकाश-वाणी हुई कि यह रानी साध्वी सती है, हे नल तुम्हारे बुलाने का यह यत्न है। राजा खुश हो मिले। अगर कहो ऋतुपर्ण आये क्यों तो–'अपथे पदमर्पयन्तिहि श्रुति

वन्तोपि रजोनिमीलिताः'॥ ऋतुपर्ण दमयंती की शोभा में मोहित हो गये नैषध में 'इमामयोध्यामपिपावनी' यह अयोध्या नही भावती इससे रजोगुण वाले अंधे हो खोटे रास्ते में चल देते हैं माया भावी खींचती है, नल दमयंती को मिलना था। इससे पुनर्विवाह तो सिद्ध नहीं भया वरन सती धर्म पक्का हो गया, ज़रा भाव देखो ऋतुपर्ण मत बनो।

प्रश्न—राम ने तारा-सुग्रीव मंदोदरी-विभीषण का ब्याह कराया तुम अपनी झिक २ करते हो।

उ०—पूरा हाल बृहत् सिद्धांत में देखिये—कुछ यहां लिखा जाता है—बाल्मीकि० कि० ३२-४० तारा राम से राम तारा से—येनेवबाणेन० ३२ स्वर्गेपि० ३४ यच्चापि-मन्ये० ३७ शास्त्र प्रयोगात्० ३८ त्वच्चापि मां तस्य मम प्रियस्य प्रदास्यते धर्ममवेदयवीर। अनेन दानेन नलप्स्यसे त्वमधर्म योगं मम वीरघातात् ॥ रामः ताराम् प्रति। धात्रा विधानं विहित तथैव न शूर पत्न्यः परिदेवयन्ति ॥ सावीर पत्नी०

भाषा—तारा अपने पति बालि का वध सुन विलाप कर राम से बोली कि जिस बाण से मेरे पति को मारा है उसी से मुझे भी मार कर मेरे पति को मुझे दान करदो तुम्हें बड़ा पुण्य होगा, स्त्रीवध का पाप न लगेगा, इत्यादि। रामजी ने समझाया कि ब्रह्मा की गति कठिन है, वीर पत्नी

को रोना नहीं चाहिये। मित्रो, यहां तारा से विवाह को नहीं कहा न मंदोदरी से कहा। अगर बाल्मीकि तथा तुलसीकृत रामायण किसी में भी कोई ब्याह कराना या ब्याह होना दिखावे तो मुंह मांगा इनाम ले। अगर हुआ हो तो कोई अपने भाई उनके लड़कों के नाम प्रगट करे। बस होगया पुनर्विवाह, सब ठंडे होगये।

गोत्र–उद्वाह तंत्र पराशर भाष्य—जमदग्नि, भरद्वाज, विश्वामित्र, अत्रि, गौतम, वशिष्ठ, काश्यप, अगस्त्य ये मुनियों के गोत्र गिनाये हैं।

विवाह–मनु० ३–२१—ब्राह्म, दैव, आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गांधर्व, राक्षस, पैशाच ये ८ है। लक्षण सिद्धांत में कहेंगे।

सारांश–नष्टे मृते० इस श्लोक में सगाईवाले लाक्षणिक पति को कहा है माता पिता कन्या पुत्र का बाल विवाह न करें न वृद्ध विवाह करें–अगर ब्याही के पांच आपत्ति में पुनर्विवाह कहा होता तो उसी के आगे के 'मृतेभर्तरि यानारी० तिस्त्रकोटयोर्द्धकोटी० व्याली यथा सर्पं०' परा० स्मृति० अ० ३०।३३।३४।३५। पति के मरने के पीछे जो ब्रह्मचर्य धारण करै वह ब्रह्मचारियों की तरह उत्तम लोक पावै॥ ३३॥ साढ़े तीन करोड़ रोम देह में हैं उतने समय स्वर्ग वास करै जो स्त्री पति के साथ सती हो

॥ ३४ ॥ साँप पकड़ने वाला जैसे मंत्र से सांप को बिलसे खींच लेता है इसी तरह सती अपने सत से अपने पति को अधोगति से उत्तम लोक में पहुंचा कर अपना शरीर कर्म भोग पूरा कर जाकर उसके संग आनंद करती है ॥ ३५ ॥ आप लोग मनमाने अर्थ कर या ग्रंथों के पूर्व पत्त लिख धोखा देते हो। गर्भपात, जिनाकारी यह सब आप की उलटी शित्ता लेक्चरों का फल है। जज या कोई विद्वान् भी अधर्म करे तो कानून नहीं हो सकता है इससे क्यों बेचारी सदाचारिणी पतिव्रता स्त्रियों के हृदय से धर्म बंधन तोड़ उन्हें पथभ्रष्ट करते हो, यह उपद्रव छोड़ो।

प्र०—ऋग्वेद में उदीर्ष्व नारि० इस मंत्र मे पुनर्विवाह लिखा है तुम क्यों झगड़े में डालते हो?

उ०—मित्रो, पूरा प्रसंग पढ़े बिना और का और अर्थ भान होता है पूरा मंत्र श्लोक छोड़ एक चरण से और मतलब जैसे 'कुरान मत पढ़ो' पर नशे की हालत में आधा न कहा तो दूसरा अर्थ कुरान न पढ़ना मालूम होगा। अत्तर तोड़ फोड़ कर दूसरा अर्थ हो जाता है जैसे 'देवता ॐ विद्वान्स':—देवता विद्वान है, तहाँ यह कहना कि विद्वान ही देवता है देवता कहीं नहीं है।

मंत्राः—ऋग्वेद मं० १० अ० २ सू० १८ मं० १-२-३-४-५-६-७-८-९ विस्तार से मंत्र भाष्य वृहत्सिद्धांत में होगा

यहां बहुत थोड़े में दिया है **परंमृत्यो इति चतुर्दशार्चं द्वितीयं सूक्तं**—इस सूक्त भर में मृत्यु देवता की प्रार्थना श्मशान कर्म वर्णन है पुनर्विवाह का लेश भी नहीं है किसी प्राचीन विद्वान् से पूंछो पूज्य तो उलटा ही कहेंगे—

पर मृत्योः० ॥१॥ मृत्योः पदं० ॥२॥ इमे जीवाः० ॥३॥ इमं जीवेभ्यः० ॥४॥ यथाहान्यु० ॥५॥ आरोहता० ॥ ६ ॥ इन सब मंत्रों में मृत्यु की प्रार्थना है। सातवां आठवां मंत्र नीचे पढ़ो—

मंत्रः—**इमा नारीरविधवा सुपत्नीराञ्जनेन सर्पिषा संविशंतु अनश्रवोऽनमीवा सुरत्ना आरोहन्तु जनयो योनिमग्रे ॥ ७ ॥ उदीष्वनार्यभिजीवलोकं गता सुमेतमुपशेष एवहि। हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभिसंबभूव ॥ ८ ॥**

भाषा—इस मृतक कार्य में जितनी सधवा आई हों वह सब विधवा नहीं होवें अपने नेत्र में घी लगावें 'आयुर्वैघृतं श्रुतिः' घृत से उम्र होती है। कोई रोवें नहीं निरोग रहें धन पुत्र वाली हो घर में सुख से बसें ॥ ७ ॥ हे मृतक की स्त्री जीव लोक जो पुत्र पौत्र रहने का स्थान अपना घर उसे देखो इस मृतक के पास सोती हो। इसी तुम्हारे पाणि-ग्रहण करने वाले और गर्भ धारण करने वाले पति के संबध से इदं जनित्वं यह संतान प्राप्त कर चुकी हो इससे आओ

इनका पालन पोषण करो ॥ ८ ॥ यह समझाना है। कोई कुर्वत: इस पद मे वर्तमान कह शंका करते हैं। भाई जब तक मृतक रक्खा है वर्तमान ही है कहा भी जाता है यह हमारा पति भाई पिता कहके रोते हैं–अगर दूसरा पति कहते तो इदं पद न देते। आगे संतानादि क्या दूसरा पति संतान संग लाया है जो इशारा करेंगे। हा हा! स्मशान में भी ब्याह सूझा। छीः २ ऐसा तो शूद्र भी नहीं करते। वेद प्राचीन है–एक भी विवाह नजीर लिखी दिखाओ तुम जीते–बस होगया पुनर्विवाह, अपने संग बरात भी ले जाया करो।

मंत्र ९ धनुर्हस्तात्०–धनुष हाथ में ले–तहां क्या धनुष या कहने वाले पुरुष का व्याह कराओगे।

प्र०—कुहस्विद्दोषा—इस मंत्र से विधवेव देवरम् इससे विधवा विवाह हो सकता है देवर: कस्माद्द्वितीयो वर० इत्यादि।

उ०—पूरा आद्योपांत मंत्रभाष्य बड़े सिद्धांतग्रन्थ में होगा यहां जरूरत भर देखो। ऋग्वेद मं० १० अ० २ सू० ४० इसमे १४ मंत्र है सूचना मात्र देखो। घोषाकाक्षी-वती० अश्विनी देवते० इनमें अश्विनीकुमार की स्तुति है।

मंत्रमस्तीका:–रथ यान्तं० इसमें अश्विनीकुमार का वर्णन है। अब अपना कुह० देखो।

मन्त्रः-कुहस्विद्दोषा कुहवस्तोरश्विनाकुहाभिपित्वं करतः कुहोषतुः। कोवाशयुत्रा विधवेव देवरं मर्यं न योषा कृणुतेसधस्थ। आ० ३२॥ शायणभाष्येदम्-हे अश्विना अश्विनौ इत्यादि।

भाषा-प्रार्थना है-हे अश्विनीकुमार दोनों देवता आप दिन रात में कहां रहे, कहां प्राप्तभये, किस यजमान ने वेदी में आपको बुलाया। इसमें दो दृष्टांत-जैसे विधवा देवर को और सब स्त्रियां पतिको। दूसरे में देवर को परकीय होने से दुराराध्य कहा है, इत्यादि। मित्रो, यदि देवर परकीय पति है तो परकीय दूसरे पुरुष से संग करना पाप है, मनुः अ० ९।६३ 'नियुक्तौ यौ विधिं हित्वावर्तेयातांतु कामतः। तावुभौ पतितौ स्यातां स्नुषागगुरुतल्पगौ॥ वंश डूबते देख नियोग की आज्ञा है तहां पुत्रोत्पादन पर ध्यान हो, स्त्री देह मे घी लपेट गर्भ धारण करै पुरुष-मुनि हो अमोघवीर्य जैसे व्यास जो एक बार में गर्भ धारण करा सकै। अगर फिर दोनों संग करैं तो बहू गमन और ससुर गमन का पाप लगे, इसीसे नियोग कलियुग में मना है, अब तो मज़ा पर है। नियोग तो आप भी बुरा मानते हैं अगर वंश डूबै तो कोई मुनि बुलाओ पूरा शास्त्रार्थ बड़ी पुस्तक में होगा।

निरुक्त० अ० २ खंड १५ में अपि वा धव इति

मनुष्य नाम इत्यादि दीव्यति कर्मा देवरः। देवर बालक हँसने खेलने वाला है न कि पति होने वाला, भौजाई अब भी हँसती है। गीत में हँसन खेलन को देवर वा जो मांगो। अच्छे भौजाई देवर तो मुहं तक नही देखते। वाल्मीकि कि० ६। २२। २३-नाहं जानामि केयूरे नाहं जानामि कुंडले। नूपुरावेव जानामि नित्यं पादाभिवंदनात् ॥

लक्ष्मण राम से कहते है कि हम सीताजी के कुंडल केयूर नही जानते, प्रणाम करने से नूपुर जानते हैं। सत्यवती ने व्यास को माता की आज्ञा प्रधान पर मुजिर कर के काम लिया फिर ससुर की तरह और बहू की तरह हो गये। आपका विधवा विवाह 'कौशल्ये देवरस्तेद्य' से भी नहीं सिद्ध हुआ, आदि। अ० १०६ खूब पढ़ो। देवर वरदान या क्रीड़ा देने वाले को कहते हैं। भाग० स्कं० ४ अ० १४-पश्यति देवरने शिवजी को कहा है। मित्रो चाहे शिर पटक दो परन्तु विधवा विवाह वेद में तो निकलेगा नहीं। यह सब मंत्र अश्विनीकुमार की स्तुति के है इसी में तुम्हारा झगड़ा था सो छिसमिस होगया।

प्र०-कस्माद्देवरो द्वितीयोवरः० देवरः अपरपतिः० तो देवर द्वितीय वर और दूसरा पति क्यों कहा गया ?

उ०-मित्रो, मनुः-यस्या म्रियेत कन्याया वाचा सत्ये

कृतेपतिः। तामनेन विधानेन निजोविंदेत देवरः॥ जिस कन्या की सगाई होकर लाक्षणिक पति मर गया हो तो उसका देवर के संग व्याह हो इससे देवर को अपरपति कहा है। और 'पातीति पतिः' पालन करने से भी देवर पति है तहां प्रमाण–पितृमातृसुतभ्रातृ श्वश्रूश्वसुरमातुलैः। हीना नस्याद्विना भर्त्रा गर्हणीयान्यथा भवेत्॥ इत्यादि॥ स्मृतिषु प्रामाण्यम्-पिता माता बेटा भाई सासु ससुर मामा आदि का सहारा लेकर विधवा स्त्री रहै नहीं तो निंदित हो जायगी। यदि व्याह कराना होता तो मनु ऐसा क्यों लिखते? निरुक्त में देखो–मनुः प्रमाणम् अ० ५ १५८।१५९–आसीना मरणात्क्षांता० धर्मसंग्रहे० मृते भर्तरि या नारी कांक्षंतीचापरंपतिम्। महद्दुःखमवाप्नोति पति लोकाच्चहीयते॥ अनेकाणि॥

भाषा–पतिहीन स्त्री मरणपर्यंत क्षमायुक्त सतसे ब्रह्मचर्य पालन करे, ब्रह्मचारियों का उत्तम धर्म चाहती रहो। जो स्त्री पतिके मरने पर दूसरे पति की आकांक्षा करती है वह बड़ा दुःख पाती है और पतिलोक से गिर जाती है। बस समझ लीजिये यहां पुनर्विवाह का नाम भी नहीं है सब अश्विनीकुमार के स्तुतिमंत्र हैं।

प्र०–सोमः प्रथमो विवदे० सोमो ददत् गंधर्वाय० दोनों मंत्रों से कई पति पाये जाते हैं।

उ०—सज्जनों, इस प्रसंग में विनियोग अर्जीदावा देखो इस विवाह प्रकरण में ४७ मंत्र अनेक छन्दों अनेक स्वरों के हैं उनमें २० से २८ तक मनुष्य विवाह के हैं फिर ४० से ४७ तक आशीर्वाद के हैं प्रथम ५ चंद्रमा की प्रशंसा के हैं।

मंत्राः—ऋग्वेद मं० १० अ० ७ सूँ० ८५—४०।४१ पहले पाँच चंद्र मंत्र के प्रतीक सोमेनोत्तभिता भूमिः। १। सोमेन पृथवीमही०। २। सोमं मन्यते०। ३। वार्हतैः सोमरक्षितः। ४। वायुः सोमस्य रक्षिता०। ५। इन सब मंत्रों में चन्द्रमा की स्तुति है।

मंत्र ४०। ४१—सोमः प्रथमो विविदे गन्धर्वो विविद उत्तरः। तृतीयो अग्निष्टे पतिस्तुरीयस्ते मनुष्यजाः॥ ४०॥ सोमो ददद्गन्धर्वाय गन्धर्वो ददग्नये रयिं च पुत्रांश्चादादग्निर्मह्यमथो इमाम्॥ ४१॥

शा०भाष्य—जातां कन्यां सोमः प्रथमभावीसन् विविदे लब्धवान् गन्धर्व उत्तरः सन्विविदे। अग्निस्तृतीयः पतिः ते तव पश्चान्मनुष्यजाः पतिश्चतुर्थः॥ ४०॥ सोमोगन्धर्वाय प्रथमं ददत् प्रादात् गन्धर्वो अग्नये प्रादात् अथो अपि च अग्निरिमां कन्यांरयिं धनं पुत्रांश्च मह्यं अदात॥ ४१॥

भाषा—गर्भ से उत्पन्न कन्या के भावी पति चंद्र हैं गंधर्व उसके पोछे फिर अग्नि तीसरा पति है मनुष्यज चौथा पति

है ॥ ४० ॥ सोम ने गंधर्व को पहले दी गन्धर्व ने अग्नि को दी इसके पीछे अग्नि ने यह कन्या धन पुत्र वाली मुझे दी ॥ ४१ ॥ कोई २ मनुष्यजा: शब्द को बहुवचन कह कर बहुत पति बतलाते हैं। मित्रो, पहले पांच मंत्रों में चंद्रमा पृथ्वी आदि पालक हैं सामवेद में प्र० ४ खं० ६ में चंद्र का वर्णन—भवत्यथ संभरणम् नमोधिभ्यश्च वनस्पतिभ्यश्च गोभ्यश्च पशुभ्यश्च सान्नप्यस्य सान्नाप्यत्वं चंद्रमा वैधाता। संवर्तस्मृतिः—रोमकालेतु संप्राप्ते सोमो भुंक्ते हि कथ्यते। रजो दृष्ट्वातु गन्धर्वो कुचौदृष्ट्वा तु पावकः। इत्यादि। देखिये सामवेद में सब का पालक चंद्रमा कहा गया है। वेद में भी—'चन्द्रमा मनसोजातः'। भागवत में—'मित्रोपेन्द्रोश्विवन्हिका'। वेद में चन्द्रमा मन से भागवत में दश इन्द्रियों के दश देवता शरीर में स्थित हैं उनका अपनी २ इन्द्री के पालन से पतित्व है इससे कन्या का जन्म से चंद्र पालन कर रक्षक हैं जब तक रोमादिक हों। रजोधर्म तक गंधर्व का समयभोग होता है यह समय सुंदरता होने का है इससे गंधर्व कहा है जब स्तन प्रगट हुये तो अग्नि का समयभोग व्यतीत होता है। ज्योतिष शास्त्र में भभोग भजात ग्रहों की गति के नाम हैं तुम्हें भोग ही सूझता है। तब चौथा मनुष्य पति अग्नि के संमुख अग्नि से पाता है, भाव मंत्रार्थ तो ऐसा है विचार लो। अगर पहले दूसरे तीसरे पति का नाम सोम गंधर्व अग्नि

कहोगे तो कोई ऐसी स्त्री जिसके चार पति हों दिखलावो। अगर द्रौपदी को कहो तो उसके पांच हुए मंत्र का अर्थ बिगड़ गया, द्रौपदी के शाप की कथा भारत में पढ़ लो--चारो युगों में किसी के, या आप के घर में कभी भया हो तो कहो। पुनर्विवाह व्याही कन्या का अगर होता तो सामवेद में-'ध्रुवमसि ध्रुवाहं कुले भूयासम्०' हे ध्रुव तुम ध्रुव हो मैं पतिकुल में ध्रुव अचल रहूं यह कभी न कहते। इससे बहुत पति नहीं हो सकते हैं वृथा भ्रम में मत पड़ो।

प्रश्न-मनुष्यजाः बहुवचन है इसमें क्या समाधान है?

उ०--राम २ ऐसी मोटी बात! अष्टाध्यायी काशिका ३।२।६७।६८ टी० सिद्धान्त कौमुदी में भी लो।

सूत्र--जन सन खन क्रमगमो विट् ६७ विड् वनोरनुना-सिकस्यात्। पढ़लो, इन दोनों सूत्रों से एक बचन में ऐसा रूप होता है वेद में। बस ठंढे हो, ज्यादा शास्त्रार्थ बृहत्सि-द्धान्त में जो पृथक् छप रही है मंगा कर पढ़ो।

प्रश्न-पतिमेकादशं कृधि० इसमें ११ पति कहे हैं तुम दूसरे ही में रोते हो।

उ०--मित्रो, कुछ अक्षर पढ़ं हो तो देखो--पतिम् एक-वचन है एकादशं एकवचन को ग्यारा नहीं कहते है दश पुत्र और ग्यारहवां पति हो भा० दशम अ० ६१ में पढ़ो कृष्ण की

हर एक रानी में दश २ पुत्र भये । अष्टा० अ० ३ । २ । ४७ । ४८ । संख्यायाः गणस्य नियामे मयट् ४७ तस्य पूरणे डट् इससे एकवचन है ।

प्र०—कृष्णयजुः तैत्तरीय अनु० प्र० ६ अ० १ मं० १ में उदोर्ष्वनारि० इस मंत्र में दिधिषोः इस पद में पुनर्विवाह में पद हो दिया है इस में क्या करोगे अब होने दोगे या नही ?

उ०—प्यारे, तुम्हें व्याहही व्याह सूझता है ज़रा अक्षरों को तो समझ लो, ऊपर नीचे के मंत्रों के अर्थ पर निगाह डालो, अक्षरों पर पेंचैती मत करो, पहले इससे ऊपर का मंत्र पढ़ो—मन्त्र—तैत्तरीय अ० ६ । १ । १३—इयं नारी पति लोकवृणाना निपद्यत उपत्वामत्र्य प्रेतम् । धर्मं पुराणमनुपालयन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि ॥१॥ शायणभाष्यं-'इयं पुरोवर्तिनी नारी स्त्री । नृनरयोर्वृद्धिश्च' इति शार्ङ्गरवादिषुपाठात् ङीन् प्रत्ययः । 'नित्यादिर्नित्यम्' इति आद्युदात्तत्वम् । पतिलोकम् पत्युः लोकः पत्या अनुष्ठितानां यागदानहोमादीनां फलभूतं स्वर्गादि स्थानम् तं पतिलोकम् वृणाना सहधर्मचारिणीत्वेन संभजमाना । वृङ् संभक्तौ लटः शानच । क्रादित्वात् श्नाप्रत्ययः । चितः । इति अन्तोदात्त्वम् । एवंभूता स्त्री हे मर्त्य मरणधर्मन् मनुष्य प्रेतम् प्रकर्षेण गतंअस्मात् भूलोकाद्द विनिर्गतं त्वा त्वाम् उप

निपद्यते समीपे नितरां गच्छति। अनुमरणार्थं प्राप्नोतीत्यर्थः। पद्गतौ। दिवादित्वात् श्यन् प्रत्ययः कस्माद्धेतोरित्याह। पुराणं पुरातनम् अनादिशिष्टाचारसिद्धं स्मृतिपुराणादि प्रसिद्धं वा। पुराणप्रोक्तेषु इत्यत्र पुराणेति निपातनात् तुडभावः। धर्मम् सुकृतम् अनुपालयन्ती। आनुपूर्वेण संप्रदायाविच्छेदेन परिपालनम् अनुपालनम्। तत्कुर्वती। लक्षणधर्मस्य अनुमरणजन्यस्य अनुपालनाद्धेतोरित्यर्थः॥ स्मर्यते हि—

भर्तारमुद्धरेन्नारी प्रविष्टा सह पावकम्। व्यालग्राही यथा सर्पं बलादुद्धरते बिलात्। इतितस्मै तथा विधायै अनुमरणं कुर्वती स्त्रियै इह अस्मिन् लोके जन्मान्तर लोकान्तरेऽपि प्रजाम्। प्रजायत इति प्रजा। उपसर्गे धनं च धेहि प्रयच्छ। अनुमरणप्रभावाज्जन्मान्तरेपि स एव पतिर्भूयात्।

भाष्यभाषा—मृतक पति के आगे वर्तमान उसकी स्त्री पति ने यज्ञ दान होम आदि करके जो लोक फल में स्वर्गादि स्थान पाये हैं सहधर्मचारिणी होने के कारण उन्हीं लोकों में पति के साथ रहने की इच्छा रखती है—हे मृतक इस भूलोक से चले गये तुमको समझ कर तुम्हारे समीप अतिशय (बड़ी जोरदार इच्छा से) जाती है अर्थात् तुम्हारे ही साथ मरण चाहती है। क्यों ऐसा करती है। तिस पर कहते हैं पुराना स्मृतिपुराणादि में प्रसिद्ध सनातन

धर्म को–अनुपूर्व मे संप्रदाय के बिना तोड़े हुए पालन करती है –पति के साथ मरना लक्षण धर्म के पालन से। स्मृति भी यह कहती है—

स्मृति–जो स्त्री अग्नि में प्रवेश करती है वह पति को उद्धार करती है। जैसे सांप पकड़नेवाला मंत्रबल से बिल से सर्प को जबरदस्ती खींच कर पकड़ लेता है इसी प्रकार पतिव्रता स्त्री सती होकर पति का उद्धार करती है। इससे 'जन्मान्तरे लोकान्तरे वा' इस स्त्री को जन्मांतर लोकान्तर में पुत्र धन दो।

सज्जनो, इस मंत्र में पति के यज्ञ दान होम फल से प्राप्त लोकों में सङ्ग जाने वाली स्त्री की तरफ से उस मरे पति से प्रार्थना है 'पतिलोकं वृणाना' यह पद कहा है फिर 'जन्मान्तरे अस्मिन् लोके लोकान्तरे' जन्मान्तर में इस लोक में तुम्हीं पति होकर या लोकान्तर और लोकों में भी इसको पुत्र धन दो इससे स्वर्ग और पुनर्जन्म में उसी पति के साथ पुनर्विवाह साबित हुआ वही आगे के मन्त्र में साफ कहेंगे देखिये। कृष्णयजुर्वेद तैत्तरीय संहिता प्र० ६। अ० मं० यही आपकी पूंजी है।

मंत्र–उदीर्ष्वनार्यभिजीवलोकं गतासुमेतमुपशेष एहि।
हस्तग्राभस्य दिधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभिसंबभूव॥

शायणभाष्यं–तां प्रतिगतः देवरः जरद्दासो वा पाणाव-

भिपद्योत्थापयति उदीर्ष्वनार्यभिजीवलोकमितासुमेत मुपशेष एहि हस्त ग्राभस्य दिधिषोस्त्वमेतत्पत्युर्जनित्वमभि संबभूव। इति। हे नारि त्वमितासुं गतप्राणमेतं पतिमुपशेष उपेत्य शयनं करोषि। उदीर्ष्वास्मात्समीपादुत्तिष्ठ जीवलोक मभि जीवं तं प्राणिसमूहमभिलक्ष्यैहि आगच्छ त्वं हस्तग्राभस्य पाणिग्राहवतो दिधिषोः पुनर्विवाहेच्छोः पत्युरेतज्जनित्वं जायात्वमभि संबभूव अभिमुखेन सम्यक् प्राप्नुहि।

भाष्यभाषा–मृत पति के समीप बैठी मर कर पतिलोक में या जन्मान्तर में उसी पति को पाने की इच्छा से प्राण देने वाली दुखी स्त्री से उसका देवर या कोई बूढ़ा नौकर उसके पास जाकर समझावै। यह समझाने का मन्त्र है। हे नारी तुम उठो इस मृत पति के पास सोती हो आओ हाथ पकड़नेवाले और तुम्हारे गर्भ धारण करने वाले इसी पति के इस जनित्व पुत्रादिक को प्राप्त भई हो। दिधिषु शब्द का गर्भ धारण करने वाला और दूसरा पति ये दो अर्थ हैं किन्तु जैसे सैंधव के दो अर्थ सेंधा निमक और सिंधिया घोड़ा है पर भोजन में सिंधिया घोड़ा और यात्रा में सेंधा निमक लाना उलटा है इसी प्रकार स्मशान भूमि में दूसरा पति अर्थ करना नितान्त भूल है इस स्थल पर गर्भ धारण ही अर्थ उचित है। इसी को दुबारा कहा है। हे नारी तुम इस मृतक पति के पास सोती हो इसके पास से उठो

जीव लोक जिसमें प्राणी समूह जीते हैं ऐसे संसार को देखो आओ तुम्हारा हस्त पकड़ने वाला और फिर भी विवाह करने की इच्छा वाले पति की यह जनित्व संतानादिक जो सामने है अच्छी तरह प्राप्त हो यानी तुम्हारा पति परलोक में या जन्मान्तर में मिलेगा उसकी सन्तान की रक्षा करो। वह स्त्री ऊपर 'पतिलोकं वृणाना०' 'जन्मान्तरे अस्मिन लोके लोकान्तरे वा' जन्मान्तर में इस लोक में या लोकान्तर में पति के मिलने को तैयार थी इससे इस मन्त्र 'पुनर्विवाहमिच्छो०' फिर विवाह की इच्छा रखने वाले उस मरे पति को ही कहा है नकि उसी मुरदाघाट ही में ऐसी दुखी स्त्री को मुर्दनी में आये हुए व्यवहारियों में से कोई खसम बनाने वाले को कहा है। यह सामने प्राप्त जनित्व उसी मृतक पति की सन्तान प्राप्त हो। मित्रो, ऐसा तो शूद्रों के भी नहीं होता है कि इधर पति मरा उधर श्मशान ही में परखा परखी होने लगे। वेद अनादि हैं। चारों युग में एक भी प्रमाण दिखलाइये तुम्हारी डिगरी हुई। समाजी भाइयों के घर पर ३०९१३ विधवायें बैठी हैं किसी एक का भी मुरदनी से जोड़ा मिलाके लाये है या यह मंत्र खाली समझाने ही का है? आंखों में धूल मत झोंको, ज़रा तो लज्जा लगे। बस अब तुम्हारे यहां काम पड़े तो मशान ही से जोड़ा मिलाना शुरू करो तब इस मन्त्र का तुम्हारा अर्थ ठीक हो जायगा और पक्के कट्टर प्रमाणी बन जाओगे।

भाइयो, यह इनका मौरूसी मन्त्र है इसी में उछले कूदे आसमान छुए लेते हैं, फैसला आप सब पर है, इनका अर्थ मुरदनी में जोड़ा मिलाना ठीक है या हमारा अर्थ उस दुखिया स्त्री को पुत्रादि का सहारा और किसी भांति समझाना ठीक है? आप फैसला करें। यही ऋग्वेद में कह चुके है कृष्णयजुर्वेद दाक्षिणात्यों का है याज्ञवल्क्य ने उगल दिया था तित्तर हो मन्त्र लिये गये इससे तैत्तरीय कहलाया। फिर याज्ञवल्क्य ने सूर्य से शुक्ल यजुर्वेद पढ़ा। तैत्तरीय संहिता वाले दाक्षिणात्य तो मौन है पर 'नाव २ झगड़ेलू आवैं पैरत आवैं साखी' धूर्त पूज्य कट्टर धरती खोदे डालते हैं। यही मन्त्र तिबारा अथर्ववेद में भी कहेंगे। दिधिषुको दूसरा पति कोश के प्रमाण से कहोगे तो वही प्रमाण दिधिषु दिधिषू दो बहिनों को कहा है।

प्रश्न—इसमें जीवलोक कहा है न जाने मर कर आदमी कहां जाता है जैसे पतिके मरने के पीछे स्त्री ६०।७० वर्ष जियै तो कैसे मिलेगी क्या वह जन्म बिना बैठा रहेगा। लोक कहीं नही हैं देवता भी कही हैं नहीं केवल ब्रह्म है और यह मृत्यु लोक है तुम कोरी बातें बनाते हो बीच में रोड़ा अटकाते हो वेद की ओट से मौज उड़ाने दान लेने वाले पोपों की हम एक नहीं मानेंगे।

उ०—मित्रो, आप वेद २ चिल्लाते हो इससे हम भी उन्हीं

वेदों से प्रमाण दिखला कर समझाते है अगर आप वेद का नाम न लो तो मौज करो हमसे कुछ मतलब नहीं। अब वेदों में ही देखिये लोक भी हैं, देवता भी हैं, स्त्री पुरुष का मिलना भी है, ज़रा ध्यान दीजिये।

अभी 'इयं नारी पतिलोकं वृणाना०' इस मन्त्र के शायणभाष्य ही में प्रमाण है 'व्यालग्राही यथासर्पं बलादुद्धरते बिलात्'। एवं 'पतिव्रतानारी पतिमुद्धृत्य मोदते'। जैसे साँप पकड़ने वाला मन्त्रबलसे बिलके भीतर से सांप को पकड़ लेता है ऐसे ही पतिव्रता स्त्री पातिव्रत के सत् से पति का उद्धार कर उसके संग सुख भोगती है। जब स्त्री का पति मरता है तब वह सत् सँभालती है तो उसका पति चाहे पापी भी हो परंतु उसके पातिव्रत से उत्तम लोक में बसता है वहां देवतों के एक ही दिन में साल भर मनुष्यों का व्यतीत हो जाता है अगर ६०।७० वर्ष भी स्त्री जियेगी तो देवतों का थोड़ा ही समय हुआ। अगर मानलो जन्म भी हो तो स्त्री मर कर अपने उसी पति को अवश्य मिलेगी इसमें सैकड़ों नज़ीरें हैं पर एक दो देख ही लीजिये—

लोक—शुक्लयजुर्वेद अ० १५ मं० ४६। ५०—येन ऋषयस्तपसा—निदधेनाके ४६ तं पत्नी भिरनुगच्छेम, नाकं गृभणानाः॥ ५०॥ छान्दोग्य उपनिषद्—स यदि पितृलोककामो। सिद्धान्तशिरोमणि-विधूर्ध्व भागे पितरो वसन्तः।

नाकस्वर्ग० इन मंत्रों में पितृलोक का वर्णन है चद्रमा के ऊपर लोक में पितर बसते हैं। इत्यादि।

देवता-शुक्ल यजुः अ० २५ मंत्र १९ ॐ स्वस्तिन इन्द्रो-स्वस्तिना बृहस्पति द०। अ० १४ मं० २० अग्निर्देवता वातो देवता सूर्यो देवना चन्द्रमा देवता आदि। अग्नि देवता वातो देवता सूर्य देवता चन्द्रमा देवता इत्यादि देवता हैं। आपके 'देवताः विद्वान्सः' के हिसाब से भले न हों पर वेद तो कहता है। इन्हीं सब मंत्रों की व्याख्या सामवेद में है। बड़ी पुस्तक में लिखी जायगी।

प्र०-अथर्व वेद में—इयं नारी पतिलोकं वृणाना० उदीर्ष्वनारि० इन दो मंत्रों में क्या कहोगे खीचाखींच करके हमारी नहीं जमने देते हो अब इसमें कहो।

उ०-तृतीयेऽनुवाके सप्त सूक्तानि-तत्र प्रथम सूक्तस्य आद्यया चितौभार्या प्रेतेन सह संसुप्तायाम् ॥ ऋक् पाठः ॥

मित्रो, तीसरे अनुवाक में सात सूक्त हैं तहां प्रथम सूक्त में चिता में प्रेत के साथ पड़ी हुई स्त्री के पास पढ़ने के हैं यह विनियोग यानी अर्जीदावा है इसमें पुनर्विवाह यार लोग निकालते हैं। भाइयो, मंत्रभाष्य और उनके अर्थ ध्यान से पढ़िये।

मंत्र-इयं नारी पतिलोकं वृणानानिपद्यत उपत्वा मर्त्य प्रेतम्।
धर्मं पुराणमनुपालयन्ती तस्यै प्रजां द्रविणं चेह धेहि॥

यह मृतक की स्त्री मृतक के अगाड़ी सोती है पति के किये यज्ञ दान होम के फल में जो स्वर्गादि लोक कहे हैं उनकी इच्छा करती है यह सहचारिणी है पति के साथ यज्ञ होमादि धर्म करती रही है ऐसी यह स्त्री, हे मृतक तुम्हारे पास मरने को तयार है । क्यों मरने को तैयार है— पुराणं स्मृति० पुराणादि में जो प्रसिद्ध सनातनधर्म है उसे पालन करती है अनुपालन यानी परंपरा से पालन की रीति है इस कारण यह भी पालन करती है ।

उपनिपद्यमाना सा यदि इह लोके पुनर्जीवितुम् इच्छेत तदा उदीर्ष्व । इत्यनयाद्वितीययर्चा प्रेतेन सह संविष्टां ताम् अभिमन्त्र्य उत्थापयेत् ।

मंत्र—उदीर्ष्वनार्यभिजीवलोकं गतासुमेतमुपशेष एहि ।
हस्तग्राभस्य दधिषोस्तवेदं पत्युर्जनित्वमभि संबभूथ ॥ २ ॥

शायणभाष्यम्-हे नारि धर्मपत्नि जीवलोकं जीवानां जीवतां प्राणिधारिणां लोकः । लोक्यते अनुभूयते जन्मान्तर कृत धर्माधर्म फलं सुखदुःखात्मकम् अस्मिन्निति लोकः भूलोकः । उभाभ्यामेव मनुष्यलोकम् । इति श्रुतेः । तथा विधं जीवलोकं अभिलक्ष्य उदीर्ष्व । पत्युः सकाशात् उत्तिष्ठ । इरगतौ कम्पने च । आदि प्रभृत्यः शपः । इति शपोलुक् । गतासुम् गता असवः प्राणा यस्मात्स तथोक्तः तथा विधम् एतं पतिम् उपशेषे उपेत्य तेनसार्ध शयनं करोषि शीङ्—

स्वप्ने। अदादित्वात् शपोलुक। इदानीं शास्त्राविरोधिदृष्ट फलानुरोधेन तत उत्थानं प्रतिपाद्यते। दृष्ट फलाभावप्रतिपत्यर्थं गतासुम् इति विशेषणम्। उपशयनं दृष्टप्रयोजनं नारस्तीत्यतः एहि पत्युः सकाशादागच्छ। जीवनावस्थायामेव पति सकाशात् सर्वं ऐहिकं पुत्रादिलक्षणं अभिप्राप्तम्। अतोऽपि हेतोरागच्छेति प्रतिपाद्यते हस्तग्राभस्येति। हस्तगृह्णातीति हस्तग्राभः पाणिग्रहणकर्ता तस्य ग्रह उपादाने इत्यस्मात 'कमण्यण् इति अण् प्रत्ययः। हृग्रहोर्भश्छन्दसि' इति भत्वम्। दधिषो धारयितुः तवपत्यु इद जनित्वम् अपत्यादि रूपेण जन्मत्वम् अभिसंबभूथ अभिसंप्राप्ताऽसि। बभूथाततन्थ जगृभ्नववर्थेति निगमे इति भावो निपात्यते।

भाषा—हे नारि मृतक की धर्मपत्नी जिसमें धर्माधर्म का फल भोगने को मिलता है ऐसे प्राणधारियों का लोक यह भूलोक है—पुण्य पाप दोनों से मिलता है इस भूलोक को देख कर उठो आओ यहां से। इस मृत पति के पास पड़ी हो शास्त्र के फल में विरोध नहीं है दृष्टफल के अभावसिद्ध्यर्थ गतप्राण कहा है। पति के पास से आओ। इस पति की जीती ही अवस्था में इस पति से पुत्र धनादि पा चुकी हो। इससे आओ देखो हस्त ग्रहण करनेवाले गर्भ धारण करने वाले तुम्हारे इसी पति की यह जनित्वं अपत्यादि पुत्रादिक अभि संबभूथ पा चुकी हो। यह अक्षरार्थ है। मित्रो, इसमें

ध्यान दो–वेद प्राचीन हैं अब के नहीं हैं जो पुत्र प्राप्त में शंका हो। स्मशान में पति के पास पड़ी दुखिया रोती हुई सती स्त्री को ब्रह्मचर्य धारण करने और उसके पति के जो पुत्र धन रियासत है उसके सहारे रहने को कहा है कि इस हस्त-ग्रहण करनेवाले गर्भधारण करने वाले अपने पति की संता-नादि को देखो इसके सहारे अपनी जिंदगी पार करो। मित्रो, ज़रा होश में आओ ऐसे समय पर क्या यह हो सकता है कि उठ, मुर्दनी में आये एक यह व्यक्ति हाथ पकड़ने और गर्भ धारण करने को तैयार हैं इसके साथ ब्याह कर चल दे? चारों युग में, या आजकल भी ऐसी एक नज़ीर दिखला दो बस फैसला हो गया। अरे काहे को वेद में दोष लगाते हो ज़मीन आसमान कहीं भी पापियों को जगह न मिलेगी। मृतक पति पड़ा है इससे वर्तमान है वर्व (क्रिया) पासटेंस (गुज़रे की) संबभूथ प्राप्त हो चुकी हो। इस विषय पर हिन्दी पढ़नेवाली जनता भी विचार कर सकती है कि इन नये नकली पूज्य और प्रोफेसरों का अर्थ ठीक है अथवा प्राचीन ऋषियों का? बस विधवा विवाह समर्थकों की जान-उदीर्ष्व० मंत्र १ ऋग्वेद २ तैत्तरीय ३ अथर्ववेद में है तीनों जगह का शायण भाष्य लिख दिया और अर्थ कर दिया। अब भी कुछ जुर्रत हो तो ५००० रक्खे है तुम भी ५००० मिलादो, नियम तै कर होने दो, एक दो दश दिन महीना वर्ष की मियाद है, छिपो नहीं, शास्त्र साहूकार का खाता है

जब चाहे देखो जैसे का तैसा है। नहीं तो अब वेद शास्त्र का नाम लेकर जनता को धोखे में मत डालो। अपनी घर-वाली को तुम्हें अधिकार है ४ और १०-११ के प्रमाण तुम्हें मिलते है करो, हमें भी खबर देना, एक दो...की हम भी मदद करा देंगे।

प्र०—सोमस्य जाया प्रथमं०। सोमो दददुगंधर्वाय०—इन दोनों का अर्थ करो, मनुष्यजाः यहां भी है इसमें क्या कहोगे ?

उ०—मित्रो, इन दोनों मंत्रों का भाष्य अर्थ व्याख्या ऋग्वेद और सामवेद में पहले कर चुके है वही पद और अक्षर इनमें भी हैं वही शायणजी यहां भी भाष्यकर्ता हैं उन्हीं प्रमाणों से आपके मनुष्यजाः पद की शंका दूर हो जायगी जरा एक बार फिर पढ़लो। हां, देवताओं का केवल समय व्यतीत होने को भोग कहा है उसमें कोई दोष नहीं है प्रमाण और देख लो। अत्रि स्मृतिः—

पूर्वं स्त्रियः सुरैर्भुक्ताः सोमगन्धर्ववन्हिभिः।
भुञ्जते मानवाः पश्चान्नैवा दुष्यन्ति कर्हिचित्।

पहले स्त्रियां चन्द्रमा गंधर्व अग्नि देवतों से अवस्था व्यतीत होने की रीति से भोगी गई यानी उन देवतों का समय गुजरा है व्याह होने पर मनुष्य भोगते है यहां स्त्रियां बहुवचन है इससे मनुष्य में भी बहुवचन कहा है—और

शंका न करना। समय व्यतीत होना इस भोग में कोई दोष नहीं है ज़रा अक्षर के भीतर घुसो, भाव देखो, काता और ले भागे ऐसा मत करो, आगे पीछे के मंत्र सहित पूरा भाष्य व्याख्या बड़ी पुस्तक में देखना।

प्र०—अदेवृघ्न्यपतिघ्नी०, इस मंत्र में देवृकामा कहा है यहां क्या अर्थ होगा ?

उ०—यह मंत्र ऋग्वेद में भी है वही अक्षर वही भाष्य व्याख्या ऊपर कर चुके है पढ़लो, प्रसंग सहित बड़ी पुस्तक में लिखा है कोई नया प्रश्न कीजिये।

प्र०—या पूर्वपतिं वित्वा० । समानलोकोभवति० इन दोनों मंत्रों में विधवा विवाह कहा है यह तो नया प्रश्न है इसमें आप क्या पैंतड़े बदलोगे ?

उ०—भैया पूरी व्याख्या तो बड़ी पुस्तक में होगी पर तुम्हारे प्रश्न का अंतिम संस्कार अब भी किये देते हैं, जरा सावधानी से पढ़िये, दिल से पूछिये, हठ छोड़िये, ईश्वर दिल में है वही उत्तर देकर आप को परितोष कर देगा। पढ़िये—

अथर्व वेद—अस्मिन्सूक्ते पञ्चौदन नाम सत्रे हूयमानस्याजस्य जीवतो मारितस्य च प्रशंसा इत्यादि इस पंचौदन नाम सूक्त में आज यज्ञ की प्रशंसा है जिसमें बहुत मंत्र हे आपके

'या पूर्व०' 'समानलोको भवति०' ये दोनों मंत्र भी हैं इस सूक्त में आज के पंचौदन यज्ञ का विनियोग (अर्जीदावा) है तो फैसले में बिधवा विवाह कहां से आवेगा। सब मंत्रों की व्याख्या तो बड़ी पुस्तक में होगी। सब के प्रतीक आप के दोनों मंत्र ठीक जाँच लो।

पञ्चरुक्मा० ॥ २५ ॥ पञ्चरुक्मा ज्योतिरस्मै भवन्ति वर्म वासांसि तन्वे भवन्ति। स्वर्गलोकमश्नुते योजं पञ्चौदनं दक्षिणा ज्योतिषं ददाति ॥ २६ ॥

भाषा—स्वर्ण वस्त्र धेनु प्राप्त होती हैं जो जो पंचौदन आज यज्ञ करके स्वर्ण दक्षिणा देता है ॥ २५ ॥ सुवर्ण को ज्योति देह में और रक्षा होती है स्वर्ग लोक भोगता है जो पंचौदन आज यज्ञ करके स्वर्ण दक्षिणा देता है ॥ २६ ॥

मंत्रः—यापूर्वं पतिं वित्त्वाथान्यं विन्दते परम्। पञ्चौदनं च तावजं ददातोन वियोषतः ॥ २७ ॥ समानलोको भवति पुनर्भुवा परः पतिः। योजं पञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषं ददाति ॥ २८ ॥

भाषा—जो स्त्री पहले पति को प्राप्त हो कर दूसरे पति को प्राप्त होती है वे दोनों जो पञ्चोदन आज यज्ञ करें तो उनका वियोग नहीं होवै ॥ २७ ॥ पुनर्भू दूसरा पति समान लोक वाला होता है जो पञ्चौदन आज यज्ञ करके स्वर्ण दक्षिणा देता है। यह अक्षरों का अर्थ है। अब आप

और सब जनता विचार करे कि क्या इसमें विधवा विवाह निकल पड़ा जो आप झट दोनों मंत्र ले दौड़े हैं। मित्रो, ये दोनों मंत्र कहते हैं कि अगर स्त्री दूसरा पति कर ले और पञ्चौदन यज्ञ करके स्वर्ण दक्षिणा देवे तो समान लोक हो। इससे दूसरा पति करना महापाप होगया इससे तो पञ्चौदन यज्ञ स्वर्ण दक्षिणा से प्रायश्चित्त करके उद्धार होना सिद्ध होता है। जैसे कोई गौ या ब्राह्मण मारै या और कोई महा-पाप करै तो मनु के प्रायश्चित्ताध्याय से यह प्रायश्चित्त कर लेवे तो शुद्ध होगा। मित्रो, तो गौ ब्राह्मण का मारना क्या शास्त्र विहित हो गया? इसी प्रकार इन दोनों मंत्रों में परपुरुष परस्त्री ग्रहण करनेवालों के लिये प्रायश्चित्त करके शुद्ध होना बतलाया गया है जिन से आप विधवा विवाह का ढोल पीटते है, ऐसी धूर्तता मत किया करो। मित्रो, ज़रा सोचो वेदों का नाम छोड़ मन गढ़ंत शुद्ध वेदों के भरोसे मत उछलो—प्राप्ते बसन्तसमये काकः काकः पिकः पिकः जब निर्णय समय बसंत आवेगा तो कौवा कौवा कोयल कोयल बोलने परही मालूम होजायगा जैसे उन्नाव सभा में प्रसिद्ध शास्त्रीजी की दशा भई। आगे के मंत्र प्रतीक देखो।

अथर्व—अनुपूर्व वत्सां०। २९। आत्मानंपितरं०। ३०। यो वै नैदाघं॥ इत्यादि इन सब मंत्रों में पञ्चौदन अाज सत्र का माहात्म्य है।

प्र०—'उत्पतयो दशस्त्रिगा:०' देखो इस मंत्रमें स्त्री के दश पति अब्राह्मण है और हाथ पकड़नेवाला ब्रह्मा वही एक पति है इससे दश तक पतिहो सकते हैं इसमें चाल दिखलाओ ?

उ०—अथर्व वेद सं० का० ५ अ० ४ अ० १७। ८–उत-पतयो दशस्त्रियाः पूर्वे अब्राह्मणाः। ब्रह्माचेद्‌ हस्तमग्रहीत् स एव पतिरेकधा।

भाषा—उत, वितर्क से स्त्री के दश पति पूर्व अब्राह्मण होते है चेद्‌ जो हाथ पकड़ता है वही एक पति ब्रह्मा निश्चित है। यह अक्षरार्थ है। मित्रो, इस मंत्र मे कन्या के दश पति अब्राह्मण यानी ब्राह्मण नही ह वे दश देवता है जो पालनरूप पति हैं दश देवता शरीर रक्षा करते हैं, जो हाथ पकड़ता है वह एक निश्चित पति ब्रह्मा कहा जाता है इससे यह पुष्ट होता है कि वे दश हाथ पकड़नेवाले अर्थात् ब्याह करनेवाले नहीं है हाथ पकड़नेवाला विवाहित एक ही पति है उस ही का नाम ब्रह्मा है। अभिप्राय यह है कि ब्रह्मा सृष्टि करते है इससे हाथ पकड़नेवाला एक निश्चित विवाहित पति ब्रह्मा है वही संतान पैदा कर सकता है और दश देवता पालन करने वाले है। जो अब्राह्मण दश पति मानोगे तो क्या राय है, आप की बेटियां बिना विवाह भये अब्राह्मण दश पति नौकरों से निपट सुलझ लें तब एक ब्राह्मण का हाथ पकड़ कर ब्रह्मा वाली होवें। मित्रो, ज़रा

निगाह खोलो, ये अक्षर हैं, मनमानी गप्प लेक्चर नहीं हैं जो बक कर और लिख कर पत्रों में छपा दिये—सीधी-सादी जनता भी इस चालाकी को समझ सकती है, बस हो गये दश पति, हवश पूरी हो गई, अब कहो ?

प्र०—बातों से उलटा पलट करके समझा दिया कोई दश रक्षक पतियों का प्रमाण दो।

उ०—अथर्व वेद सं० का० १४ अनु० ४। मंत्र—इन्द्राग्नी द्यावापृथिवी मातरिश्वा मित्रावरुणा भगो अश्विनोभा। बृहस्पतिर्मरुतो ब्रह्म सोम इमां नारीं प्रजया वर्धयन्तु॥

भाषा—इन्द्राग्नी १ द्यावापृथिवी २ मातरिश्वा ३ मित्रावरुणा ४ भगो ५ अश्विनोभा ६ बृहस्पति ७ मरुतो ८ ब्रह्म ९ सोम १०। ये दश स्त्री के पालक पति संतान के लिये शरीर वृद्धि करें। मित्रो, ये दश देवता स्त्री के हाथ मुख कान बुद्धि मन और सब शरीर का पालन कर पुत्र पैदा करने लायक सयानी कर देते हैं इससे रक्षक पति हैं ब्याह से संतान करने वाला एक पति ब्रह्मा होता है अगर ये सचमुच पति होते तो पतिमेकादशं ग्यारह पति सिद्ध हो जाते यहां हाथ पकड़ने वाला निश्चित एक ही पति है वह ब्रह्मा कहा गया है लो देवता विसर्जन भये—अब कहो।

प्र०—तस्मादेकस्य बह्वो जाया० इस मंत्र में 'सहपतयः' है इससे स्त्री के एक साथ बहुत पति नहीं हो सकते

अलग २ हो सकते हैं–देखो द्रौपदी के महाभा० में पांच पति भये, बस पोपराज अब कहो क्या लीला फैलाओगे ?

उ०–सच्चे कथन में कपट का क्या काम, अक्षर देखो, प्रसंग देखो, ले ले मत भागो–तस्मादेकस्य वह्व्यो जाया भवन्ति, नैकस्य वह्वः सहपतयः।

भाषा–तिससे एक पुरुष के बहुत स्त्री होंय–एक स्त्री के बहुत सहपति न होंय। आप कहते हो 'सह' साथ पति न होंय पीछे बहुत हो जांय। यहां 'सह' शब्द के 'साथ' माने नहीं हैं 'समान' माने हैं—वाल्मीकि० बाल कां० सर्ग ७३ श्लो० २६। २७–अब्रवीज्जनको राजा कौशल्यानन्द-वर्धनम्। इयं सीताममसुता सहधर्मचरीमव ॥२६॥ प्रतीच्छ चैनां भद्रंते पाणिं गृह्णीष्वपाणिना। पतिव्रता महाभागा छायेवानुगता सदा ॥२७॥ जनक रामजी से कहते हैं कि यह सीता मेरी कन्या आपकी सहधर्मचरी हो अर्थात् आप के समान धर्मचारिणी हो संग में धर्म करै। तुम्हारा कल्याण हो अपने हाथ से इसका हाथ पकड़ो। पतिव्रता बड़भागिनी आपकी छाया की तरह आप के संग रहेगी। अगर 'सह' का यह मतलब होता कि स्त्री के दूसरा पति का हो तो जनक सहधर्मचरी कैसे कहते 'छाया पति-व्रता महाभागा' ये पद न कहते–वेद में एक श्रुति के दो अर्थ नहीं हो सकते। प्रमाण लो—

मीमांसा न्यायः अर्थभेदे वाक्यभेदः। अगर अर्थ का भेद करोगे तो वाक्यभेद होना चाहिये अर्थात् दो वाक्य अलग २ होने चाहिये एक वाक्य में सहपतयः के दो अर्थ नहीं हो सकते हैं। और भी सुनो—

तैत्तरीय सं० कां० ६ प्र० ६ अ० ४—यदेकस्मिन् यूपे द्वे रशने परिव्ययति। तस्मादेको द्वे जाये विन्दते, यन्नैकाꣳरशनां द्वयोर्यूपयोः परिव्ययति, तस्मान्नैका द्वौ पती विन्दते।

भाषा—जब एक यज्ञ के एक खंभ में दो रस्सी बँध जाती हैं इससे एक पुरुष दो विवाह कर सकता है परन्तु एक रस्सी दो खंभों में दूसरे काल में भी नहीं बँध सकती है। क्यों, वह उच्छिष्ठ हो जाती है। एक यज्ञ में सब वस्तु खंभ रस्सी पात्र आदि जो काम में आ गये वे सब दूसरे यज्ञ में रस्सी आदिक काम में नहीं आ सकते हैं दूसरे यज्ञ में नये बनाये जाते हैं। यज्ञ पूर्ण होने से बेकाम हो जाते है। इसी प्रकार स्त्री रस्सी है, पुरुष खंभ है, यज्ञ व्याह है। एक पुरुषरूप खंभ में कई स्त्री बँध सकती हैं स्त्रीरूप रस्सी व्याहयज्ञ में उच्छिष्ट भई दूसरे पति खंभ में नहीं बँध सकती है यह प्रमाण है, न मानने की कोई दवा नहीं है।

प्रश्न—तो द्रौपदी और जटिला के कई पति क्यों भये हैं इसका भ्रम हटाओ, महाभारत में नीलकंठजी ने अपने टीका में प्रमाण दिये हैं।

उ०—सुनिये, म० भा० आदि प० अ० १९५ श्लोक २३—यत्तु द्रुपदं प्रति युधिष्ठिरः—सर्वेषां महिषी राजन् द्रौपदी नो भविष्यति । एवं प्रव्याहृतं पूर्वं मम मात्रा विशांपते ॥ 'तत्रमीमांसा तंत्रवार्तिके कुमारिल भट्टै-रेवमभिहितम्' । यो भोक्ता पाण्डुपुत्राणामेकपत्नी विरुद्धता । सापि द्वैपायने नैव व्युत्पाद्य प्रतिपादिता ॥ यौवनस्थैव कृष्णाहि वेदिमध्यात्समुत्थिता ॥ सा च श्रीः श्रीश्च भूयोभिर्भुज्यमाना न दुष्यति । बभूव-कन्येवगतेगतेऽहनि ॥

भाषा—महाभारत आदि पर्व अ० १९५ श्लोक २३—जब अर्जुन द्रौपदी को स्वयंवर से वर लाये तो प्रथम आ माता से कहा कि एक अपूर्व वस्तु लाये हैं । माता कुंती ने कहा पांचोपुत्र आपस में बांटलो । तब कहा कि स्त्री है । माता ने कहा कि हमतो कह चुकीं, मेरी आज्ञा से पांचो पुत्र व्याह लो । मातृदेवोभव० माता की आज्ञा शिरोधार्य । पांचो पुत्र व्याह को तैयार भये । यह सुन द्रुपद धृष्टद्युम्न द्रौपदी के पिता भाई सब ने इनकार किया । युधिष्ठिर ने माता की आज्ञा शिरोधार्य कही । बड़ा विवाद हुआ । तब व्यासजी आये और द्रौपदी का पूर्वजन्म में कन्या अग्नि से प्रगट होना और पांडवों को पांच इन्द्र की कथा सुनाकर द्रुपद को समझाया और आज्ञा दी कि व्याह करदो, यह दिव्य कन्या

युवा आग से निकली है पेट से जन्म नहीं है, यह नियम मनुष्यों का है, यह देवी और ये पाँचो पुत्र देवता से पैदा हैं, हमारी आज्ञा है। जहाँ देवता मुनि कह देते हैं तहां दोष नहीं माना जाता है देखो म० भा० १११ अ० ६३ में सूर्य का कुंती से और पराशर का सत्यवती से कहना है—मत्प्रसादान्नते राज्ञि भविता दोष इत्युत। इति। उवाच मत्प्रियंकृत्वा कन्यैव त्वं भविष्यसि॥

हे रानी मेरी प्रसन्नता से पाप न होगा॥ इति॥ मेरा प्रिय करके तुम कन्या ही हो जाओगी इस वचन से दोषभार देवता और ऋषिवचन से नाश हो गया। इसमे द्रौपदी के शाप के कारण पांच पति हुए, भारत पढ़लो। रही नीलकंठ की, इस प्रसंग से नीलकंठ ने लिखा परंतु नीलकंठ का यह उद्देश नहीं है कि आप उनकी मिसाल दे विधवा विवाह चलावैं अगर यही कहो तो महा० भा० अ० १०४ श्लो० ३१ में उन्हीं नीलकंठजी ने क्या लिखा है देखिये--

इदानीं तनानां नीचानां च स्त्रियादयः पतयो दृश्यंत इति 'नदेवचरितं चरेदिति न्यायेन नीचानां पशु प्रायाणां चाचारस्या प्रामाण्याच्च नियोगस्येति दिक्।

अब के नीच पुरुषों में स्त्री के दो तीन पति करने की प्रथा दिखाई देती है, ब्राह्मण क्षत्री वैश्यों में नहीं। अर्थात्

दूसरा तीसरा पति करने कराने वाले नीच हैं। जो द्रौपदी की कहो तो देवतों का आचरण मनुष्य को नहीं करना चाहिये। दो तीन पति करना पशु तुल्य नीचों का निंदित आचरण है। लो नीलकंठ नीलकंठ होगया, सुन लिया, नीलकंठ ने पुनर्विवाह करने वालों को नीच पशु तो कह दिया कुछ और बना चाहते हो। हम बार बार कहते है कि शास्त्र के संग्राम में न आओ, लो धूर फांको, होगया, मौन गहो। पूरा शास्त्रार्थ फिर देखना। सिद्धांत सुना दिया।

इति वेदशास्त्रार्थः द्वितीयो खंडः।

मनोरंजन–जिसके कुलकी जो रीति हो करने में हँसी नहीं होती है–सत्यवती परदादी, अंबिका अंबालिका दादी, कुंती सास, द्रौपदी बहू, एक ही क्रम चला आया। कहो आप की परदादी के कितने हुए ? आप की दादी के नंबर कितने ? आपकी मा के कौन २ भये ? लुगाई में तुम कितने शामिल हो ? क्या आपकी दादी परदादी मा आज्ञा देती है अगर देती हों तो शास्त्र की एक न मानो आनन्द रूप हो मज़ा लूटो, आकबत् की.. जानैं।

गांधारी की कथा आपको अच्छी न लगैगी हुर्रह २ ज्वाय २ ॥

मन्वादिस्मृति संग्रह ।

प्र०—मनुः अ० ९ श्लो० १७५ । १७६—या पत्या वा परित्यक्ता । साचेदक्षतयोनिः । प्रोषितो धर्मकार्यार्थं । १ । ८५ अन्ये कृत युगे धर्माः । (उत्तर में सब श्लोक पूरे देंगे इससे बार बार नहीं लिखे) ।

भा०—या पत्या० इस श्लोक में जो विधवा या पति से त्यागी गई और की स्त्री हो पुनर्भू इत्यादि साचेदक्षतयोनिः वह अक्षत योनि हो तो पुनर्विवाह होना चाहिये । कहिये हर युग के और २ धर्म है इससे भी अब ब्याह होना चाहिये, अब तो मानो ।

उ०—आप से प्रथम से निवेदन है कि श्लोक के पद और अक्षरों पर ध्यान दीजिये सब अर्थ ठीक समझ लोगे और बिधवा विवाह उड़ जायगा । जो शास्त्र कहे उसे हम तुम दोनो मानें, आपका हमारा झगड़ा शास्त्र का है कोरी बातों का नहीं है । श्लो०—या पत्या वा परित्यक्ता विधवा वा स्वयेच्छया । उत्पादयेत्पुनर्भूत्वा स पौनर्भव उच्यते ॥१७५॥ साचेदक्षतयोनिः स्यात् गतप्रत्यागताऽपि वा । पौनर्भवेन भर्त्रा सा पुनः संस्कारमर्हति ॥ १७६ ॥

ति०—या भर्त्रा परित्यक्ता मृतभर्तृका वा स्वेच्छयान्यस्य पुनर्भार्या भूत्वा यमुत्पादयेत् स उत्पादकस्य पौनर्भवः पुत्र

उच्यते ॥ १७५ ॥ साचेदक्षतयोनिः सत्यन्यमाश्रयेत्तदा तेन पौनर्भवेन भर्त्रा पुनर्विवाहाख्यं संस्कार मर्हति । यद्वा कौमारंपतिमुत्सृज्यान्यमाश्रित्य पुनस्तमेव प्रत्यागता भवति तदातेन कौमारेण भर्त्रापुनर्विवाहाख्यं संस्कारमर्हति ॥ १७६

भा०—जिस को पति ने छोड़ दिया या बिधवा जिसका पति मर गया है ये दोनों अपनी इच्छा से और दूसरे की पुनः भार्या स्त्री होकर पुत्र उत्पन्न करैं वह उत्पन्न करने वाले का पौनर्भव पुत्र होता है ॥ १७५ ॥ अगर वह अक्षत योनि होती हुई दूसरे को पकड़े तब उस पौनर्भव भर्ता के साथ पुनर्विवाह हो । या व्याहे पति का संग नहीं किया छोड़ कर दूसरे का ग्रहण किया और उसे छोड़ कर अपने पहले कौमारपति के पास आ गई तो उस कौमारपति के साथ पुनर्विवाह हो । यह अक्षरार्थ है । चारो युग में साधा· रण धर्म और है पर विशेष धर्म जैसे विवाह संस्कार वैसे ही रहेंगे । सारांश-जब पति से त्यागी स्त्री या विधवा दूसरे की स्त्री हुई उससे पुत्र हुआ तो पैदा करनेवाले का पौनर्भव पुत्र कहलाया । अक्षतयोनि स्त्री का उससे व्याह हो । मित्रो, इसमें बिधवा विवाह तो नहीं निकला जब पति से त्यागी या बिधवा के पौनर्भव पुत्र से विवाह कहा तो निंदित विवाह हुआ । देखो १२ प्रकार के पुत्रों में पौनर्भव पुत्र महा निंदित गिनाया गया है यहां तक कि उसका हिस्सा भी

नहीं मिलता है। मनु: अ० ९। १६०—कानीनश्च सहोढ़श्च क्रीत: पौनर्भवस्तथा। स्वयंदत्तश्च शौद्रश्च षड्दायाद्-वान्धवा: ॥१६०॥ कानीन (कुमारीपुत्र) १, सहोढ़ (पेट में पुत्र सहित व्याही) का पुत्र २, क्रीत ३, यह पौनर्भव ४, स्वयं दत्त ५, शूद्री का पुत्र ६, ये हिस्सा न पावें। तो क्या पुनर्विवाह ठीक हुआ ? कदापि नहीं। दोनों गये बीते स्त्री पुरुषों का विवाह कहा है। क्या इसी को लेकर, शास्त्रोक्त कह कर, विधवा विवाह कराने का दम भरते हो, याद रक्खो द्विजाति में विधवा विवाह होना कभी उचित नहीं है।

नियोग भी मनुजी ने निंदित लिखा है। मनु: ६६। ६७ ६८—अयं द्विजैर्हि विद्वद्भि: पशुधर्मो विगर्हित:० इत्यादि यह नियोग पशुधर्म है, विद्वान् इसको निंदित कहते हैं। शूद्रान्त्येषु पुनर्भव: परिणय: प्रोक्त: विवाहोक्तभै। मुहूर्त मार्तण्डे। शूद्रों और अन्त्यज कोरी चमारों में पुनर्विवाह कहा है सो होता है। बस मनुस्मृति में पुनर्विवाह की जान केवल ये दो श्लोक है इन्हीं पर समर्थक मूछ मरोड़ते हैं अत: जनता से नम्र निवेदन है कि फैसला करें हृदय से पढ़ें सोचें शास्त्र क्या कहता है, मनुस्मृति के प्रमाण समाप्त हो गये वृथा बकवाद मत करो। अगर मनुजी को पुनर्विवाह कराना होता तो ये श्लोक पातिव्रत धर्म करने को न कहते—मनुस्मृति: अ० ५ श्लोक १५५ से १६६ तक, सतीधर्म

श्लो० प्रतीकाः विशीलः कामवृत्तो वा० १५४, नास्ति-स्त्रीणां० १५५, पाणिग्राहस्य साध्वी स्त्री० १५६, कामं तु क्षपयेद्देहं० १५७, आसीतामरणात्क्षांता० १५८, अनेकानि सहस्राणि० १५६, मृतेभर्तरि या नारी० १६०, अपत्यलोभातु स्त्री० १६१, नान्योत्पन्ना प्रजास्तीह० १६२, पतिंहित्वापकृष्टंस्वम्० १६३, व्यभिचारात्तुभर्तुःस्त्री० १६४, पतिं या नाभिचरति० १६५, अनेन नारी वृत्तेन० १६६।

भाषा—स्त्री को पति से अलग व्रत यज्ञ उपवास नहीं है, पतिसेवा ही से स्वर्ग होता है। १५५। हाथ पकड़ कर शास्त्र विधि से व्याह करने वाले पति के जीते और उसके मरने पर भी कुछ अप्रिय (दूसरा विवाहादि) न करै तो पतिलोक पाती है अन्यथा नर्क में जाती है। १५६। फूल फल कंद मूल जो पवित्र हों उनसे निर्वाह कर देह का पालन करले परन्तु पति के मरने पर पति के लिये दूसरे पुरुष का नाम भी न ले। १५७। मरने तक क्षमाशीला नियता सतीधर्म पालन करती हुई ब्रह्मचारिणी पतिव्रताओं का उत्तम धर्म चाहती हुई निर्वाह करै नही तो नर्क जायगी। १५८। अनेक ब्रह्मचारी जिस तरह बिना संतान के स्वर्ग गये हैं ऐसे वह पतिव्रता बिना पुत्रही पतिलोक पावैगी। १५६। पति के मरने पर जो सती स्त्री ब्रह्मचर्य पालन करती है बिना संतान ही ब्रह्मचारियों की तरह स्वर्ग पाती

है। १६०। पुत्र के लालच से जो स्त्री अपने पति का उल्लंघन यानी नियोग से जो पुत्र चाहती है उसकी संसार में निंदा होती है और पतिलोक से गिर जाती है। १६१। मित्रो, जहां नियोग को भी बुरा माना है जिसमें उसके पति ही का नाम चलता है स्वामी दयानंद स० जी ने उसे भी निंदित कहा है, बिधवा विवाह का क्या जिकर है, ज़रा सोचो, शरम खाओ, इस देश को बिला आयत कर ठिकाने न लगाओ। दूसरे खसम से पैदा हुआ पुत्र पुत्रही नहीं है और बिधवा व्याही स्त्री स्त्री नहीं है—जिस प्रकार रंडी को कोई स्त्री नहीं मान सकता इसी प्रकार जिसकी बिधवा रंडा अगर खसम करै तो क्या रंडी से कम हुई। साध्वीनां सती स्त्रियों को कभी स्वप्न में भी दूसरा पति नहीं लिखा है। १६२। जो अपना खराब पति जैसे क्षत्री वैश्य या गुणहीन रोगी को भी छोड़ कर दूसरा श्रेष्ठ पति ब्राह्मणादि या गुण वाले को ग्रहण करती है वह निंदा पाती है उसे धरौआ बैठ-कुआ कहा जाता है, सब छी छी करते हैं।१६३। अपने पति के न रहने पर जो स्त्री परपुरुष से संग करती है उसकी बड़ी निंदा होती है, इतना ही नहीं मर कर नर्क फिर शृगालयोनि में जन्म पाती है, अगर फिर स्त्री हुई तो 'पापरोगैः' पाप और रोगों यानी फिर विधवा होना दूसरा किया तो रोगों से पीड़ित रहती है सुख नहीं पाती है। १६४। जो स्त्री

मन वाणी शरीर से दूसरे पुरुष की इच्छा नहीं करती है वह पतिलोक पाती है और सती कही जाती है । १६५ । इस सती पातिव्रत धर्म से युक्त जो स्त्री मन वाणी शरीर से सत सँभाले रहती है उसकी यहां कीर्ति होती है और मरने पर पतिलोक पाती है । १६६ ।

सारांश-मित्रो, मनुस्मृति सब स्मृतियों से श्रेष्ठ है— 'यन्मनुरब्रवदत्तद्भेषजम् । मन्वर्थ विपरीता या सास्मृतिर्न विशिष्यते' जो मनु कहते हैं वह औषध की तरह हितकारी है। मनुस्मृति के अर्थ से जो स्मृति उलटा अर्थ कहे उसका अर्थ नहीं मानने योग्य है। इन बचनों से अगर कोई भी स्मृतिकार या मनगढ़ंत श्लोक मुनियों के नाम से कहे और विधवा विवाह का प्रमाण दे तो सब झूंठे हैं, एक भी नहीं मानने लायक है । जनता आप फैसला करले। मनुस्मृति में तो विधवा विवाह का जिक्र ही नहीं है नियोग को भी पशुधर्म कहा है। इसे दुष्ट बेन राजा ने चलाया था जिससे सतयुग में भी सब भूखों मरने लगे अंत में वह भी मर गया। मित्रो, यह कलियुग है ८ छटांक का घी ५ सेर का अन्न अब बिकता है अगर यह अधर्मरूप घोर पाप चला तो आगे न जाने क्या होगा। अन्य देशों की देखा देखी मत करो 'स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः' गीता। अपना २ धर्म हितकारी है अपना धर्म खराब भी हो तो

नहीं छोड़ना चाहिये पर का धर्म विधवा विवाह आदि पराई दृष्टि से अच्छा भी हो तो हमको नष्ट करने वाला है, नहीं करना चाहिये। एक सज्जन की आपस में बातचीत है-एक जड़िया सज्जन से उसके बिरादर बोले कि अबतो विधवा विवाह होना चाहिये। पूँछा क्यों? बोले औरतें दुराचार करती हैं नहीं मानती है। सज्जन ने कहा कि पांच सेर का घी और मन भर का अन्न खाती थीं तब तो ठिकाने थीं अब ८ छटांक के घी और ५ सेर के अन्न में हथेली पर धरे फिरती हैं, यह सब आपकी अधर्म शिक्षा और नाविल काविल किताब और लेकचरों का फल है, आप खुद उनकी इज्ज़त बिगाड़ते हो और बनते हो रक्षक। पराई बहू बेटी लेले भागते हो, जैसे कानपुर की एक प्रतिष्ठित सेवा समिति के कमांडर ने किया, अंत में पदच्युत हुए, अपनी कमजोरी और बदमाशी बेचारी विधवाओं के शिर मढ़ते हो यह तुम्हारी बदनियती है। इसे सुन कर दूसरे महाशय मौन होगये। बस हो गया प्रमाण, आगे चलिये।

प्र०-या० ४ अ० ६७। ६८-अक्षता च क्षता चैव०। ६७। अपुत्रां गुर्वनुज्ञातो०। ६८। अक्षता च क्षता चैव० इस श्लोक में विधवा विवाह का अर्थ है कहिये-अपुत्रां० इस श्लोक में नियोग की आज्ञा है, पंडितजी कहीं की तो मानो एक तरफ से सभी डकार जाओगे?

उ०—मित्रो, समझ लो अक्षर कहो समझ समझा कर तुम अपना अर्थ भीतर से निकाल लो अपने और इस पक्ष के सब श्लोक तिलक सहित पढ़लो फैसला तुम्हारे और जनता के हाथ में है। श्लो०—अक्षता च क्षता चैव पुनर्भूः संस्कृतापुनः। स्वैरिणी या पतिं हित्वा सवर्णं कामतः श्रयेत्॥ ६७॥ तिलक—अन्यपूर्वा द्विविधा-पूनर्भूः स्वैरिणी चेति। पुनर्भूरपि द्विविधा क्षता चाक्षता च। तत्र संस्कारात्प्रागेव पुरुष संबन्धदूषिता। अक्षता पुनः संस्कार दूषिता। या पुनः कौमारे पतिं त्यक्त्वा कामतः सवर्णमाश्रयति सा स्वैरिणीति।६७।

भाषा—अन्यपूर्वा यानी दूसरा है पहिले जिसके ऐसी स्त्री दो तरह की होती है एक पुनर्भूः दूसरी स्वैरिणी। पुनर्भू के भी दो भेद है (१) क्षता और (२) अक्षता। इन दोनों की हालत सुनो—जो व्याह से पहिले ही दूसरे पुरुष के संसर्ग में दूषित भई हो वह क्षता कहलाती है। दुबारा संस्कार से दूषित अक्षता है। अब स्वैरिणी का बयान सुनिये जो कौमारपन में पति को छोड़ काम से सवर्ण का आश्रय ले वह स्वैरिणी है॥ ६७॥ सज्जनों यह श्लोक और तिलक का अक्षरार्थ है जनता फैसला करे क्या इसमें बिधवा विवाह निकल आया? अगर निकला तो किस पद से? यदि पुनः संस्कारदूषिता कहो तो अक्षर ही कहते

हैं 'पुनः संस्कार से दूषित' क्या दूषित भी जायज हो सकती है और कानून बन सकती है। करने को तो शूद्रों को शास्त्र ही आज्ञा देता है पर द्विजाति ब्राह्मण क्षत्री वैश्य को कहीं भी इस स्मृति या किसी में स्वप्न में भी आज्ञा नहीं है। बस, मिताक्षरा ने तो तुम्हारा ही गला घोट दिया, विधवा विवाह की नामंजूरी हुई, दूसरा सबूत पेश कीजिये।

प्र०—अपुत्रां० और आगर्भ० का क्या अर्थ करोगे? साफ २ कहना खींच तान मत करना।

उ०—साफ २ सुनो। अक्षर श्लोक तिलक भाषा सब पढ़ लो हमारा रत्ती भर कसूर नहीं। याज्ञवल्क्यमिताक्षरा-कार ने आप की मदद नहीं की हम क्या करें पढ़ लीजिये—

श्लो०—अपुत्रां गुर्वनुज्ञातो देवरः पुत्रकाम्यया। सपिण्डो वा सगोत्रो वा घृताभ्यक्त ऋतावियात्॥ ६८॥ आगर्भसंभवाद्गच्छेत्पतितस्त्वन्यथा भवेत्। अनेन विधना जातः क्षेत्रजोऽस्य भवेत्सुतः॥ ६९॥

ति०—अपुत्रामलब्धपुत्रां पित्रादिभिः पुत्रार्थमनुज्ञातो देवरो भर्तुः कनीयान् भ्राता सपिण्डो वा सगोत्रो वा। एतेषां पूर्वस्य पूर्वस्याभावे परः परः घृताभ्यक्तसर्वाङ्गः ऋतावेव वक्ष्यमाणलक्षणे इयाद्गच्छेत् आगर्भोत्पत्तेः। ऊर्ध्वं पुनर्गच्छन् अन्येन वा

प्रकारेण तदा पतितो भवति अनेन विधिनोत्पन्नः पूर्व परिणेतुः क्षेत्रजः पुत्रो भवेत् । एतच्च वाग्दत्ता-विषयमित्याचार्याः। यस्याम्रियेत कन्याया वाचासत्ये कृते पतिः। तामनेन विधानेन निजो विन्देत देवरः इति। ६। ६८। मनुस्मरणात ॥ ६९।।

भाषा—अपुत्रा नहीं प्राप्त है पुत्र जिसके पिता आदिक से आज्ञा पाकर देवर (पति का छोटा भाई) या सपिंड सगोत्रवाला और कोई। इनमें देवर न हो तो सपिण्ड और सपिंड न हो तो गोत्रवाला अनेन विधानेन व्याह कर अपने सर्वाङ्ग में घी लपेट कर घृताभ्यक्ता स्त्री के सब अंग में भी घी लपेट कर ऋतुकाल मासिक धर्म से शुद्धकाल में स्त्री को ऋतुदान दे अगर गर्भ न धारण हो तो दूसरे मास में ऋतु से शुद्ध में फिर ऋतुदान देवे। आगर्भोत्पत्ते०—गर्भधारण तक मासिक धर्म न होने से गर्भ धारण होने से फिर संग न होवै अगर फिर दोनों मिलें तो दोनों को महापाप हो। इस विधि से जो लड़का हो वह पहले व्याहे पति का क्षेत्रज पुत्र है और यह दिधिषु पति हुआ। तहां आचार्यों का यह संमत है कि यह विधान वाग्दत्त यानी सगाई भई के साथ ही हो सकता है तहां मनु० ६। ६७—जिसका वाग्दान होने पर पति मर जाय तो उसे उसका देवर ऊपर कही हुई इस विधि से ग्रहण करै। लो मित्रो, तुम्हारे विधवा विवाह को तो

फांसी हो गई–रहा नियोग उसके भी जंजीर बेड़ी पड़ गई। अब जनता अक्षर २ पढ़के फैसला करले इसमें एक अक्षर बनावटी नहीं, हम क्या करें याज्ञवल्क्य से कहो।

प्र०–सकृत्प्रदीयते कन्या० इस श्लोक में 'दत्तामपि-हरेत' इस पद में तो दी हुई हरले कहा गया है अब तो दोबारा व्याह हो गया कहिये अब क्या चाल है ?

उ०–श्लोक और उनके तिलक हम लिखे देते है फैसला आप और जनता पर है। याज्ञ० ३ श्लो० ६५–सकृत्प्रदीयतेकन्या हरँस्तां चौरदंडभाक। दत्तामपि हरेत्पूर्वाच्छ्रेयाँश्चेद्वर आव्रजेत्।

ति०–सकृदेव कन्या प्रदीयते इति शास्त्रनियमः। अतस्तांदत्वा अपहरन् कन्यां चौरवद्दण्ड्यः। एवं सर्वत्र प्रतिषेधे प्राप्तेऽपवादमाह। यदि पूर्वस्माद्वराच्छ्रेयान्विद्याभिजनाद्यतिशय युक्तो वर आगच्छति पूर्वस्य च पातकयोगो दुर्वृत्तत्वं वा तदादत्तामपि हरेत्। एतच्च सप्तमपदात्प्राग्द्रष्टव्यम्॥ ६५॥

भाषा–एकही बार कन्या दी जाती है यह शास्त्र का नियम है। अगर कन्या को देकर हर लेवे तो बाप भाई या और कोई कुटुम्बी जो कन्यादान कर हर लेवे उसको चोर की तरह सजा देवे इससे एक बार कन्या का देना जो मनुजी ने भी अ० ९ श्लो० ४७ में–सकृदंशो निपतति सकृत्कन्या

प्रदीयते' इत्यादि हिस्सा विभाग एकही बार होता है और कन्यादान एकही बार होता है, लिखा है। इस प्रकार सब शास्त्र में प्रतिषेध प्राप्त होने पर अपवाद में यह कहते हैं कि जो पूर्व वर में पातक का योग या कोई विशेष कुचाल औगुण हो और पूर्व वर से विद्यादि में श्रेष्ठ वर मिलै तो दी हुई भी कन्या हर लेवे, देना न देना कुछ नहीं कहा, देखलो अक्षरों में। और यह सब करतब सप्तपद यानी सात भांवर समाप्त होने के पहले हो सकता है, यह श्लोक का अर्थ हुआ।

मित्रो, इस पर ध्यान दीजिये, मिताक्षराकार ने ठीक लिखा है। कन्या के बिवाह होते समय जो वर में कोई पातक यानी पातक ही से मृगी आदि रोग होते हैं या कोई लंगड़ा अंधा या और कोई औगुन जँचै तो उसको न दे दूसरे को दे दे। देख लीजिये सप्तपद सात भांवर के पहले की शर्त लगाते हैं अगर सात भांवरादि हो जांय तो यह काररवाई शास्त्र से नाजायज होगी। इससे बिधवा विवाह तो नहीं निकला—अगर निकला तो सधवा विवाह निकला। हम ऊपर सौदास राजा के पतित होने के ३ दृष्टांत में कह चुके हैं कि मदयंती का दूसरा विवाह नहीं हुआ, धृतराष्ट्र के अंधे होने पर भी गांधारी का दूसरा विवाह नहीं हुआ, पांडु पांडु रोगी थे किन्तु कुंती और माद्री का दूसरा विवाह नहीं हुआ।

प्रमाण दे चुके। अजी भाई साहब चारो युग में वेद पुराणों में एक भी तो विवाही सधवा का पतित दुर्वृत्त पति

होने से दूसरा विवाह दिखलावो, तुम्हारी डिगरी। अगर यह हो कि किसी ने किया हो या न किया हो हम करेंगे, यह बात ही दूसरी है इसके लिये कोई मना नहीं कर सकता। अगर तुम्हारी बहिन बेटी मिडिलची को विवाही है तो अभी बारिष्टर बड़ा टोप वाला तजवीज़ करादो, एक अक्षर न पढ़े हुये के बदले कोई नया पूज्य शास्त्री ढूंढ़ दो। बोलो राजी हो? बेटी से भी पूँछ लो, होने दो। उभयाभ्यां...... न दोषो मनुरब्रवीत्। हम भी मौन हो जायगे। परन्तु खोटे विचारों से स्मृतियों को क्यों बिगाड़ते हो। चाहे हज़ारों प्रमाण दो पर पूरा प्रसंग देखने से, पूरा श्लोक देखने से तुम्हारी धुवां सी कलई उड़ जायगी इससे आप शास्त्र का तो वृथा ही नाम लेते है।

इसी श्लोक की मिताक्षरी टीका में अनन्य पूर्विकां० इत्यादि पढ़ लो कही विधवा विवाह का लेश भी नहो है।

याज्ञ० ३।७१–सोमः शौचं ददावासां गन्धर्वश्च शुभांगिरम्। पावकः सर्व मेध्यत्वं मेध्या वै योषितो-ह्यतः॥ ७१॥

सोमो ददद् गंधर्वा० में सोम पवित्रता देता है, गन्धर्व सुन्दरवाणी देता है, अग्नि पवित्रता देता है, इससे स्त्रियां पवित्र होती है नकि सब पति होते हैं और स्त्रियों को दूषित करते है।

शास्त्रार्थप्रश्नजालम् ।

पराशर ४ । ३०–नष्टे मृते० ॥१॥ नारद स्मृति अ० ३२ श्लो० २८–अष्टौवर्षाण्युदीक्षेत० ॥ २ ॥ नारद स्मृति अ० १२ मंत्र ४६ । ४७ । ४८–कन्यैवाक्षत योनिर्वा० कौमारं पतिमुत्सृज्य० । असत्सु देवरेषु स्त्री० ॥३॥ नारद स्मृति १२ अ० ८०–अनुपन्ना० ॥४॥ वशिष्ठ अ० १७ । ६४–या च क्लीवंपतिमुत्सृज्य० । अ० १७ । ७४–पाणिग्रहे मृते बाला० ॥५॥ अद्भिर्वाचा च दत्तानां यावच्चेदाहृता कन्या० ॥ ६ ॥ वशिष्ठ धर्मशास्त्र अनन्ताः पुत्रिणां लोकाः ५१ पृष्ठे–प्रेतपत्नी० ५५ । ऊर्ध्वं षड्भ्यो मासेभ्यः ५६ ॥७॥ बौधायन धर्मशास्त्रे–बलाच्चेत् प्रहृता कन्या० १५ । निसृष्टायां हुते वापि १६ ॥ ८ ॥ नारद–उद्वाहिता च या कन्या ८।२ लघुशातातपस्मृतौ, समुद्वृत्यचतां कन्यां० ॥६॥ गौतमः–मरणानन्तरं भर्तुः॥१०॥ अत्रिः–नष्टे सन्यासमापन्ने ॥११॥ यम स्मृतिः–नोदकेन न वाचा वा० ॥ १२ ॥ अज्ञातभर्तृ संबंधा० ॥ १३ ॥ अगस्त्य–भर्तृभावे वयं स्त्रीणां ॥ १४ ॥ व्याघ्रपात–पत्निनाशे यथा पुंसो० ॥ १५ ॥ विश्वामित्र–असृष्ट-लिङ्ग्योनीनां० ॥ १६ ॥ नारद स्मृतिः अ० ४ मं० ६ । १० । ११–अदत्तं तु भयक्रोध० ६ । बालमृढा स्व-तंत्रार्त० १० । अपात्रे पात्रमित्युक्ते० ११ ॥१७॥ अग्नि

पुराण ॥१८॥ ब्रह्मपुराण—यदि सा बालविधवा० ॥१९॥ उल्लास ११ पत्र ६६ । ६७—षण्डेनोद्वाहितां कन्यां० ॥२०॥ शुक्ल यजुः ७ । ४८—कोऽदात्० ॥ २१ ॥ उद्वाहतत्व वशिष्ठ—कुलशील विहीनस्य० ॥ २२ ॥ इत्यादि नवीन पूज्य शास्त्रिणामीश्वरचन्द्रवद्रीदत्तगंगाप्रसाद चांदकार्यालयकृतपुस्तकेषु प्रश्नोद्धृताश्चान्यत्राऽपि सन्तु तेषामुत्तराण्यपि द्रष्टव्यानि ।

भाषा—प्रश्नाः अ० ४—३० नष्ट मृत प्रव्रजित (साध) क्लीवपतित पति के होने पर पुनर्विवाह होना चाहिये ॥१॥ विदेशी पति को ब्राह्मणी आठ वर्ष परखै पुत्र न भया हो तो चार वर्ष पीछे और का सहारा लेवे ॥ २।१॥ नारदस्मृति—अक्षत योनि केवल विवाह संस्कार से दूषित कन्या पहली पुनर्भू कन्या ही है फिर संस्कार होना चाहिये ॥४६॥ कौमार पति को जो छोड़ कर पुरुष का आश्रय लेकर पुनः फिर पति के घर आवै वह दूसरी तरह की पुनर्भू—उढ़रा धरौआ नाता वाला है ॥ ४७ ॥ जिसके देवर न होने पर जो संबंधियों से सवर्ण या सपिड को दे दीजाय वह तीसरी पुनर्भू—उढ़री धरौआ नातावाली स्त्री है ॥ ४८ ॥ नारद स्मृति २।३ जिसमें पुत्र नहीं उत्पन्न हुआ यदि पति मर गया हो तो बड़ों की आज्ञा से देवर से नियोग (शास्त्र विधि से गर्भ धारण करले) जो पुत्र की इच्छा हो। २।२। वशिष्ठ स्मृतिः अ० १७ ।

६४—जो क्लीव पतित उन्मत्त मृत पति होने पर दूसरा पति ग्रहण करती है वह भी पुनर्भू—उढ़री धरौत्रा नाता वाली है। अ० १७। ७४—पाणिग्रहण करके पति मर गया हो ऐसी अक्षत योनि कन्या का फिर संस्कार होना चाहिये ॥ ३ ॥

विधवा विवाह पुस्तकों में—जल और वाणी से दी हुई का जो पति मर जावे तो मंत्र से उपनीत हो भी तो कुमारी पिता की है। जो कन्या हर ली गई है और मंत्रों से संस्कृत भी हो चुकी है तो वह कन्या सी है विधि पूर्वक दूसरे को देना चाहिये ॥ ४ ॥ वशिष्ठ धर्म शा०—मृतक की स्त्री ६ महीने ब्रह्मचर्य धारण करै जमीन पर सोवैं ५५। ६ महीने के बाद नहाके पतिका श्राद्ध कर बड़ों की आज्ञा या पिता भाई से पूंछ कर नियोग विधि से गर्भ धारण करै ॥ ५६ ॥ ॥ ५ ॥ बौद्धायन अ० ?—बल से हरीगई कन्या जो मंत्र से संस्कार न भया हो तो विधि से दूसरे को दे देवै, कन्या के समान है ॥ १५ ॥ हवन होने पर पति मर जाय तो अगर अक्षत योनि है या और जगह जाकर लौट आई है तो पौनर्भव विधि से संस्कार होना चाहिये १६ ॥ ६ ॥ लघु शातातपस्मृति में—ब्याही कन्या पति संग न भया हो पति के पास फिर आवै तो कन्या के समान है। बस अक्षतयोनि कन्या को कुलशील युक्त बर को दे देवै ॥ ७ ॥ गौतम—पति मरण के पीछे जो स्त्री अक्षतयोनि हो तो

पुनर्विवाह होना चाहिये विचार न करै ॥ ८ ॥ अत्रिः—नष्ट और सन्यासी हो जावै व्याधिग्रस्त हो तो स्त्रियों का कलियुग में दूसरा विवाह हो ॥९॥ यमस्मृतिः—न वाणी से न जलसे कन्या का विवाह होता है पाणिग्रहण संस्कार सप्तमपद में विवाह पूरा होता है ॥ १० ॥ बृहस्पति स्मृ०—बिना समझे जो पति संबंध हो प्रियगत हो तो फिर विवाह होना चाहिये ॥ ११ ॥ जावालि०—ब्राह्मणा क्षत्रिया वैश्या शूद्राः स्वकुलयोषिताम्। पुनर्विवाहं कुर्वीरन्नान्यथा पापसम्भवः॥ ब्राह्मण क्षत्री वैश्य शूद्र सब अपने कुल की स्त्रियों का पुनर्विवाह करें अन्यथा पाप न होगा। (समीक्षा—अन्यथा पाप न होगा यथा पाप होगा इन श्लोकों का पता नहीं कहां के है केवल नाम मात्र लिख दिया है) ॥ १२ ॥ अगस्त्य०—भर्तृ भाव में भी स्त्रियों का फिर विवाह होना चाहिये कुछ पाप नहीं न करै तो पाप है। (स०—इस बचन का पता नही अगस्त्य के नाम से किस महाशय ने लिखा है) ॥१३॥ व्याघ्रपात्—स्त्रीनाश में जैसे पुरुष विवाह करता है ऐसे पति के मरने पर स्त्री भी विवाह करै। (स०—यह बचन लापते है मानो सब स्मृति उड़ गईं वोलो नये ग्रंथकार की वाह २, खूब गढ़ दिया) ॥ १४ ॥ विश्वामित्र—नहीं स्पष्ट है योनि लिंग जिनकी बीश तक चारो युग में पुनर्विवाह करना चाहिये। (स०—बिना पते का यह भी है, मित्रो, २० वर्ष तक अस्पष्ट योनि लिंग कहते है २० वर्ष में

अधिक नहीं तो एक दो तो निकल ही पड़ेंगे कहो क्या ठीक है अगर बांझ कहते तो अस्पष्ट योनि लिंग का ना उड़ा देना चाहिये) ॥१५॥ नारद० अ०४-९।१०।११-अदत्तो भय क्रोध शोक के वेग रोगी करकै तैसे उत्कोच परिहास व्यत्यास छल योग से ९। बाल मूढ़ अस्वतंत्र आर्त मत्त उन्मत्त से अपवर्जित को। मेरा कर्म करेगा प्रतिलाभ की इच्छा से जो १०। अपात्र में पात्र कहकर या धर्म कार्य में जो अज्ञान से दिया जाय सो अदत्त समझो (स०-यह सब गिनाया पर कन्यादान तो समझ बूझ कर जांच परताल कर ढोल बजा कर होता है खुशी से सावधानी से अच्छे सावधान वर को दिया जाता है क्या यह भी नाजायज करार दोगे-इससे तो पुनर्विवाह सिद्ध नहीं हुआ बेच भले ही दो जब पटी पटाई सौदा भी नहीं फिरती है) ॥१६॥ अग्नि पुराण अ० १५४-नष्ट मृत साधु क्लीव 'पतितेऽपतौ' पतित पति होने पर देवर को दे, देवर न हो तो जैसी इच्छा हो वैसा करै। (स०-अपतौ का विवाद तो पराशर स्मृति ही में हो चुका है यहां भी वही पद वही अर्थ समझ लो ॥१७॥ ब्रह्मपुराण-जो वह बाल-विधवा है या बल से कहीं त्यागी गई है तो उसको लेकर जिस तिस तरह फिर संस्कार कर दे। (स०-बाल-विधवा कहीं त्यागी गई इससे ज़रूर दूषित समझी जायगी यारों की मेहरबानी भई होगी तो उसको जैसे तैसे ठिकाने लगा दो कौन नहीं कहेगा-पर विधवा

विवाह तो गायब होगया) ॥ १८ ॥ उल्लास ११ पत्र ६६। ६७–क्लीव को ब्याही कन्या बहुत दिनों के बाद भी फिर व्याह करदे शिवजी कहते हैं (स०–तो अर्जुन तो बहुत दिनों में क्लीव हुए थे इनकी एवजी क्यों नहीं पूरी की गई शिवजी ने तो पातिव्रत धर्म कहा है परपक्ष में कहेंगे, न जाने ये उल्लासी शिव कौन है और कहां से आये) ॥१६॥ शुक्ल यजुः अ० ७ मं० ४८–कोदाऽत्–कौन देता है कौन लेता है काम ही देता है काम ही लेता है इत्यादि (स०–इस मंत्र से तो लेना देना सब झूठा बनाया चाहते हो काम ही लेने देने वाला है तो फिर ब्याह का क्यों झगड़ा करते हो खेलने दो गबड्डी–दोनों के बाप मा छुट्टी पागये ॥२०॥ उद्वाहतत्त्व वशिष्ठ–कुल शील हीन पतित मृगी वाला विधर्मी रोगी वेशधारी ऐसों को दत्वामपि दी गई हरले, गोत्र में ब्याही भी हरले (स०–दत्ता इस पद से तो वाग्दत्ता ही हो सकती है नहीं तो सब स्मृतियों से विरुद्ध होने से यह खुद न मानी जायगी एक, दूसरे इस वचन का ठीक पता नहीं जो देखा जा सके) ॥२१॥

सारांश–सज्जनों हमारा सब से नम्र निवेदन कि है इस प्रश्नजाल को बार २ पढ़ो श्लोकों का प्रतीक है जिनका पूरा पता समर्थकों की पुस्तकों में लिखा गया है, हमने भी पूरा पता दिया है, जो नये गढ़ंत ऋषियों के नाम से लापते हैं उनके लिए हम क्या करें उनका ही दोष है हमने भी लापता

लिख दिया है। विधवा वि० की कई पुस्तकें अक्षर २ मंत्र श्लोकों को ढूंढ फिर ग्रंथ देख पूर्वापरप्रसंग देख उत्तर दिया है। इस प्रश्नजाल में यदि सच्चे दिल से विचारोगे तो पुनर्भूः के विवाह का पता मिलेगा और पुनर्भू के विवाह से उढ़री घरौआ नातावाली कही जायगी जो देव पितृसे बाहर होगी। शूद्रों में भी उढ़री देवी देवता की पूजा में नहीं जा सकती है। अब परपक्ष में पुनर्भू के लक्षण और पुनर्विवाह निषेध सुनिये और न्याय कीजिये दोनों आपके आगे हैं, अगर हठ छोड़ दोगे तो फैसला हो जायगा। नये शास्त्रीजी ने पुनर्भू का पुत्र औरस समझो लिखा है प्रमाण कुछ नहीं दिया।

प्र०—'आज' समाचारपत्र ५ नवम्बर सन् २७ में पृ० २ से ६ तक श्रीरामसेवक शास्त्री व्याकरणाचार्य ने पुनर्विवाह और धर्मशास्त्र शीर्षक देकर विधवा विवाह का समर्थन किया है उसका उत्तर क्या देते हो? उक्त पूज्य शास्त्री का सामना करनेवाला कोई है ही नहीं, उनके प्रश्नों का भी उत्तर दीजिये और ऊपर के प्रश्नों का भी। आपकी कलई साफ खुल जायगी बातें मारने से क्या होता है।

शास्त्रार्थे परपक्षोत्तरचक्रम्।

उ०—प्यारे, लीजिये, पहिले शास्त्रीजी ही का निपटारा हो जाय, साथ ही साथ सब प्रश्नों के उत्तर भी समझ लीजिये परन्तु प्रार्थना यह है कि सावधान होकर पढ़िये उन

पर विचार कीजिये फिर दिल से पूँछिये, हठ छोड़ने से साफ फैसला जँच जायगा, न मानो तो आप कुछ भी कहते रहें परंतु निःपक्ष जनता साफ साफ समझलेगी कि शास्त्र क्या कहता है।

प्र०–(५ नं० पृ० ७ में) शास्त्रीजी–पुनर्विवाह अक्षता क्षता दोनों ही का शास्त्र संमत है केवल क्षता का दानरहित और अक्षता का दान सहित। क्षता का दान इसलिये नहीं हो सकता है कि वह कन्या नही है, जिन बाल विधवाओं का पतिसंयोग नहीं हुआ है उनका पुनर्दान सहित पुनर्विवाह कर देना चाहिये। दान सहित पुनर्विवाह का ब्रह्मविवाह में अन्तर्भाव होता है और उसकी संतति औरस समझनी चाहिये पौनर्भव नहीं है (६ नवम्बर १९२७)।

उ०–अक्षता का पुनर्विवाह होने पर उसकी संज्ञा पुनर्भू और उसकी संतान पौनर्भव क्यों न मानी जाय इस पर शास्त्रीजी ने कोई प्रमाण नही दिया है। इन पं० जी ने 'आज' ४ नवम्बर पृ० ७ कालम २ में पुनर्विवाहिता को पुनर्भू माना है वहां अक्षता और क्षता का कोई भेद नहीं किया है–ऐसी दशा में उक्त पं० जी के सिद्धांत ही से अक्षता पुनर्भू हुई और उसकी संतान पौनर्भव हो गई। अब प्रमाण सुनिये—

वृद्ध पराशर अ० ५। ५६–अन्यदत्ता तु या कन्या

पुनरन्यत्रदीयते। अपि तस्या न भोक्तव्यं पुनर्भूः सा प्रकीर्तिता ॥ और को दी हुई कन्या पुनः और जगह दी जाय तो वह पुनर्भू हो गई उसका अन्न नहीं भोजन करने लायक है ॥ १ ॥ विष्णुपुराण—अक्षताभूयः संस्कृता पुनर्भूः अक्षता कन्या फिर संस्कार होने से पुनर्भूः उढ़री धरौआ नातावाली निंदित होती है ऐसा विष्णुजी कहते हैं ॥ २ ॥ शब्दकल्पद्रुमकोश—पुनर्भूः स्त्री (पुनर्भवति जायात्वेन) द्विरूढ़ानत्पर्यायः दिधिषूः—द्विबारा व्याही अक्षतयोनि स्त्री द्विरूढ़ा उढ़री, धरौआ नातावाली निंदित कही है ॥३॥ वृहद्वाचस्पतिः—पुनर्भूः स्त्री जायात्वेन एकेन व्यूढ़ायां पुनरन्यगृहीतायां अन्यपूर्वायाम्। एक से व्याही स्त्री को दूसरा व्याहै तो अन्य पूर्वा पुनर्भू, उढ़री धरौआ नातावाली होती है ॥४॥ अमरकोश मनुष्यवर्ग श्लो० २२—पुनर्भूर्दिधिषूरूढ़ा द्विस्तस्यादिधिषुः पतिः। दुबारा व्याही गई स्त्री दिधषू व पुनर्भू धरौआ उढ़री नातावाली निंदित कही जाती है। उसके पति को दिधिषु कहते है अमर कोश मनुष्यवर्ग श्लोक २२ में पढ़ लीजिये ।५॥ याज्ञवल्क्य ३। ३७-अक्षता च क्षता चैव पुनर्भूः संस्कृतापुनः। स्वैरिणी या पतिं हित्वा सवर्णं कामतः श्रयेत ॥ अक्षता (एक बारव्याही) क्षता (कुमारी बिगड़ी फिर व्याही) दुबारा व्याह से पुनर्भू० धरौआ उढ़री नातावाली निंदित होती है। जो काम विषय से पति को छोड़ दूसरे पुरुष को ग्रहण करै वह

स्वैरिणी है यह याज्ञवल्क्य कहते हैं ॥६॥ नारद० १२।४६-कन्यै वा क्षतयोनिर्वा पाणिग्रहणदूषिता पुनर्भूःप्रथमा प्रोक्ता पुनःसंस्कारमर्हति ॥ अक्षत योनि व्याही कन्या ही सी है पहली पुनर्भू धरौना उढ़री नातावाली निंदित कही जाती है जो संस्कार फिर होता है ॥ ७ ॥ अङ्गिरा-अन्यदत्ता तु या कन्या पुनरन्यस्य दीयते। तस्याश्चान्नं न भोक्तव्यं पुनर्भूः सा प्रगीयते ॥ और को व्याही फिर और को दी जाय उसका अन्न नहीं खावै वह पुनर्भू धरौआ उढ़री नातावाली निंदित कही जाती है यह अङ्गिराजी कहते हैं ॥ ८ ॥ बौधायन-वाग्दत्ता मनोदत्ताऽग्निं परिगता सप्तमं पदंनीता, भुक्ता गृहीतगर्भा प्रसूता चेति सप्तविधा पुनर्भूस्तां गृहीत्वा न प्रजा न धर्मं विन्देत् ॥ वाणी से दी गई १ मन से दी गई २ अग्नि के समीप परिगता ३ सप्तपदी प्राप्त ४ भोगी गई ५ गर्भ धारणवाली ६ लड़कावाली ७ ये सातो पुनर्भू फिर व्याह से उढ़री धरौआ नातावाली निंदित होती हैं ऐसा बौधायनजी कहते है इनके साथ व्याह न करै इनके लड़केसे धर्म प्राप्त नहीं हो सकता है ॥ ९ ॥ कश्यप-सप्त पौनर्भवाकन्या वर्जनीया कुलाधमाः। यह सातों अग्नि के समान कुलको जला देती हैं इनके साथ कभी भूल के व्याह न करै यह कश्यप बचन हैं ॥ १० ॥ वशिष्ठ अ० १७-या कौमारं पति मुत्सृज्य० इत्यादि-जो कौमारपति छोड़ औरों के साथ मज़ा कर

उसीके पास आ जावै वह भी पुनर्भू उढ़री धरौआ नातावाली निंदित होती है ॥ ११ ॥ कात्यायन—क्लीवं विहाय पतितं वा या पुनर्लभते पतिम्। तस्यां पौनर्भवो जातो व्यक्त मुत्पादकस्यसः—नपुंसक या पतित पतिको छोड़कर जो स्त्री दूसरा पति करै, उसमें लड़का हो तो पौनर्भव उढ़री धरौआ नातावाली का निंदित देवपितृकार्य से बाहर होगा ॥१२॥ बौधायन प्र० २ अ० २।२७—क्लीवं त्यक्त्वा पतितं वा यान्यं पतिं विन्देतत्तस्यां पुनर्भ्वां यो जातः स पौनर्भवः। नपुंसक पतित तथा अन्य प्रकार के दोषी पति को त्याग कर जो स्त्री दूसरा पुरुष करे उसमें उत्पन्न पुत्र पौनर्भव उढ़री धरौआ नातावाली का है वह निंदित सब कार्य से बाहर होता है ॥ १३ ॥ अथर्ववेद—समानलोकोभवति पुनर्भुवा परः पतिः। योऽजंपञ्चौदनं दक्षिणाज्योतिषंददाति ॥ पुनर्भू का पति आज यज्ञ करने से समान लोक वाला होता है तो पहले पापी अवश्य था ॥१४॥ याज्ञवल्क्य १।५२—अनन्य पूर्विकां कांतामसपिण्डां यवीयसीम् ॥ १५ ॥ गौतम ४।१-गृहस्थसदृशीं भार्यां विन्देतानन्यपूर्विकाम् ॥१६॥ व्यासः—अनन्य पूर्विकांलघ्वीं शुभलक्षणसंयुताम् ॥ १७ ॥ वात्स्यायन कामसूत्र—सवर्णायामनन्यपूर्वायां शास्त्रतोऽधिगतायां धर्मार्थे पुत्राः सम्बन्धः ॥ १८ ॥ मिताक्षरा—अनन्यपूर्विकां दानेनोपभोगेन वा पुरुषा-न्तरा परिगृहीताम् ॥ १९ ॥ पराशरमाधवः—अनन्य

पूर्विका मिति दानेनोपभोगेन वा पुरुषान्तराऽगृहीताम्। अनेन पूनर्भू ऽव्यावर्त्तते ॥ २० ॥ १५ से २० प्रमाणों में शुद्ध कन्या होनी चाहिये पुनर्भू को दोषी उढ़री धरौआ नातावाली निंदित सिद्ध किया है। धर्मसिंधु पूर्वार्ध परिच्छेद ३-वाचादत्ता० मनोदत्ता० अग्निपरिगता० इत्यादि ये सातों पुनर्भू उढ़री धरौआ नातावाली निंदित कही गई हैं ॥ २१ ॥ इन २१ प्रमाणों से अक्षता एक प्रश्न को काट दिया। और लीजिये-विधवा विवाह रायबहादुर नानकचंद इन्दौर प्र० वशिष्ट-या क्लीवंपति मुत्सृज्य० पुनर्भू उढ़री ॥ २२ ॥ स्वामीजी के शिष्य तुलसीरामजी ने भास्कर प्रकाश में पुनर्विवाहिता को पुनर्भू उ० ध० नातावाली निंदित कहा है ॥ २३ ॥ ईश्वरचन्द्र विद्यासागर-या पत्याचा परित्यक्ता० प्र० पुनर्भू को धरौआ उढ़री नातावाली कहा है ॥ २४ ॥ आर्यसमाज के नेता पं० राजाराम शास्त्री ने मनुः ३। ११५ के टीका में अक्षतयोनि का पुनर्विवाह होने पर पुनर्भू उढ़री धरौआ नातावाली निंदित कहा है ॥२५॥ मनुः ३। १७५-या पत्या वा परित्यक्ता-पति से त्यागी या विधवा दूसरे को स्त्री होकर लड़का पैदा करै वह पौनर्भव उढ़री वाला होगा ॥ २६ ॥ मनुः ३। १८१-पं० राजाराम शास्त्री जी ने पौनर्भव को पुनर्भू उढ़री का लड़का कहा है ॥ २७ ॥ मनुः ६। १६०-इसमें पौनर्भव का अर्थ पुनर्भू उढ़री नातावालो का निंदित

सती धर्मोपदेश ।

दादरा–सती सुरति सँभालो न गिरै गगरी ॥ सागर शील पतिव्रत गगरी, घर घर सीख मिलै सुखरी ॥सती०॥
सूनी सेज पड़ी सैयां बिन, सोच भुलाय शोक जकरी ॥सती०॥
संशयतजो सहजविधिमेरहु माधवरामसुरतिपकरी ॥सती०॥

ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य घर की विधवाओं को स्वप्न में दूसरा पति करना नहीं लिखा है, परपुरुष का नाम पति के लिये स्वप्न में भी नहीं लेवें। फल मूल साधारण अन्न वस्त्र से निर्वाह कर अपना सतीधर्म पालें। पूर्व जन्म में कुछ पाप होने से यह दुःख मिला है अब दुख सह कर सत संभालो, जिंदगी गर करो, सदा सुखी रहोगी। २०–२० पुश्त नर्क में डाल कर स्वयं नर्क में पड़ दुख झेलना पड़ेगा, फिर विधवा होना पड़ेगा यदि पुनर्विवाह भी करो तो सुख नहीं मिलेगा। धर्मादर्थश्च कामश्च० धर्म ही से अर्थ काम और गति होती है। ज्यादा धर्मशिक्षा सर्वस्व दो भाग में है मंगा कर पढ़ो, अपने सत्य मार्ग से न हटो।

इति पं० माधवराम अवस्थी 'व्यास' विरचित पुनरुद्धार शास्त्रार्थ निर्णय समाप्तम्।

सती धर्मोपदेश ।

दादरा—सती सुरति सँभालो न गिरै गगरी ॥ सागर शील पतिव्रत गगरी, घर घर सीस मिलै सुन्दरी ॥सती०॥
सूनी सेज पड़ी सैयाँ बिन, सोच सुहाय शोक नगरी ॥सती०॥
संशय तजो सहज विधि सेवहु माधवराव सुगति करी ॥सती०॥

ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य घर की विधवाओं को स्वप्न में दूसरा पति करना नहीं लिखा है, परपुरुष का नाम पति के लिये स्वप्न में भी नहीं लेवे । फल मूल साधारण अन्न वस्त्र से निर्वाह कर अपना सतीधर्म पाले । पूर्वजन्म में कुछ पाप होने से यह दुःख मिला है अब दुःख सह कर सत संभालो, जिंदगी पार करो, सदा सुखी रहोगी । २०—३० पुश्त नर्क में डाल कर स्वयं नर्क में पड़ दुःख झेलना पड़ेगा, फिर विधवा होना पड़ेगा यदि पुनर्विवाह भी करो तो सुख नहीं मिलेगा । धर्मादर्थश्च कामश्च० धर्म ही से अर्थ काम और गति होती है । ज्यादा धर्मशिक्षा सर्वस्व दो भाग में है मंगा कर पढ़ो, अपने सत्य मार्ग से न हटो ।

इति पं० माधवराव अवस्थी 'व्यास' विरचित पुनर्विवाह शास्त्रार्थ निर्णय समाप्तम् ।
